मेक इन इंडिया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छ:माही पत्रिका अंक-14 (अक्टूबर 2022 से मार्च 2023)

| कीटनाशक | फफूंदनाशी | शाकनाशी | बीज | उर्वरक | बॉयो पेस्टिसाइड्स | सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

हिन्दी सलाहकार समिति पुरस्कार

हिल (इंडिया) लिमिटेड को वर्ष 2022–23 के दौरान अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के बेहतर प्रदर्शन के लिए रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग, भारत सरकार द्वारा दिनांक 30 मई, 2023 को नई दिल्ली में आयोजित हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। माननीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री मनसुख मांडविया जी के कर–कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक / संयुक्त सचिव (रसायन) श्री सुशांत कुमार पुरोहित, निदेशक (वित्त) श्री डी.एन.वी. श्रीनिवासराजू, निदेशक (विपणन), श्री शंशाक चतुर्वेदी तथा सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्री अजीत कुमार।

मुख्य संरक्षक
श्री कुलदीप सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
श्री डी.एन.वी.श्रीनिवास राजू
निदेशक (वित्त)

श्री शशांक चतुर्वेदी
निदेशक (विपणन)

संपादक
श्री अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

परामर्श समिति
श्री अनिल यादव
डॉ. राजेन्द्र थापर
डॉ. शिवेन्द्र सिंह
श्री अजीत वर्मा
श्री विजय कुमार गांधी

सहयोग
श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अतः पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

» अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से 2
» संदेश – निदेशक (वित्त) 3
» संदेश – निदेशक (विपणन) 4
» संपादकीय 5
» कृषि क्षेत्र के विकास में महिलाओं की अहम भूमिका 6
» वेक्टर नियंत्रण अंतःक्षेप की पर्यावरण अनुकूल एवं लागत प्रभावी श्रृंखला 8
» जैव उर्वरक खेती के लिए है वरदान 9
» मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका 10
» कैसे संगठन कर्मचारियों को कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकते हैं 18
» राष्ट्र की उन्नति में हिन्दी भाषा का योगदान 20
» सामाजिक समरसता के संदर्भ में संत कबीर 23
» मेरा प्यारा हिन्दी 25
» बड़े भाई साहब 26
» क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हिल की सहभागिता 30
» स्त्रोत पर कटौती (टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स–टीडीएस) 31
» डिजिटल इंडिया 34
» सूचना – प्रौद्योगिकी और मानव कल्याण 36
» वित्तीय लेखा (एफ.आई.) मॉड्यूल 38
» स्वतंत्रता आंदोलन की महिला नायिकाएँ 39
» परमात्मा से संबंध 41
» युधिष्ठिर का यज्ञ और सुनहरा नेवला 42
» सबसे कीमती चीज 43
» गुब्बारे वाला 44
» नियत पापा की कार 45
» ईश्वर की कृपा 46
» चार मोमबत्तियां 47
» आज ही क्यों नहीं 48
» भगवान की खोज 49
» हास्य ही जीवन है 50
» जल ही जीवन है 51
» आप चाहें तो बीमार नहीं पड़ सकते 53
» 'सुख' क्या है और कहाँ है? 55
» तुलसी 57
» सत्यमेव जयते 59
» परिवारिक वातावरण को बढ़ावा 60
» चिंता–त्याग से स्वस्थ जीवन 61
» मुंशी प्रेमचंद जी की एक सुंदर कविता, जिसके एक–एक शब्द को, बार–बार पढ़ने को मन करता है 63
» पापा 64
» बिदांस बचपन 64
» हिल में एकता शपथ 65
» हिल (इंडिया) लिमिटेड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 66
» अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 67
» किसान मेलों की झलकियां । 68
» इंडिया केम 2022 – हिल स्टॉल का उद्घाटन 69
» हिल में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 70
» हिल के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण 71
» हिल में गणतंत्र दिवस समारोह 72
» आपकी पाती 76

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से

हिल के सभी कार्मिकों, उनके परिवार तथा पत्रिका के सभी सुधी पाठकों को नववर्ष, 2023 के लिए अनन्त शुभकामनाएं। आईये, हम सभी पिछले वर्ष की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर नूतन वर्ष में संपूर्ण निष्ठा एवं संपूर्ण भाव से प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत करने का संकल्प लें। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर अपनी कंपनी में चहुंमुखी विकास करने में सक्षम होंगे।

हमारा उद्देश्य देश में जन –स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के साथ–साथ एक ही छत के नीचे कृषक समुदाय की सभी कृषि आदानों की आवश्यकताओं को समय पर एवं उचित दर पर पूरा करना तथा स्वच्छ और सुरक्षित प्रौद्योगिकी के माध्यम से गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करना है। इसमें फसलों की उत्पादकता को बढ़ाना और कंपनी की उत्पाद रेंज, निर्यात, दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने के साथ–साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी बढ़ाना है। इस दिशा में कुछ प्रयास पहले ही किए जा चुके हैं, जिसमें नवीनतम एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसल प्रजातियों का उत्पादन एवं वितरण सम्मिलित है। मैं यह बात भी गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि हमारी कंपनी ने भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों में कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से किसानों को अनेक प्रकार के प्रशिक्षण देकर अपना सामाजिक दायित्व भी निभाया है। इसमें समुचित मात्रा में और सुरक्षित रूप से कीटनाशकों का फसलों पर उपयोग एवं समेकित कीट प्रबंधन प्रमुख है। इस प्रकार के प्रषिक्षणों से किसानों की फसल लागत में कमी आएगी, उनका पशुधन, भूमिगत जल, पक्षी एवं वातावरण भी सुरक्षित रहेगा।

एक राष्ट्रीय स्तरीय बीज एजेंसी होने के नाते, कंपनी का लगातार अपने बीज उत्पादन की योजना में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित की गई नवीनतम उच्च उपज देने वाली किस्मों को सम्मिलित करने का प्रयास रहा है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अंतगर्त सामान्य बिक्री एवं बीज मिनीकिट की आपूर्ति के माध्यम से नवीनतम अधिक उपज देने वाली किस्मों के दलहनों और तिलहन के उत्पादन एवं आपूर्ति पर जोर दिया जा रहा है।

हम राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृत संकल्प है। प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। मुझे यह बताने में बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारी कंपनी को राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए सूरत, गुजरात में हिन्दी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू नीति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत माननीय गृहमंत्री के कर–कमलों से 'क' क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग से वर्ष 2021 के लिए राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। संगठन के प्रधान कार्यालय में ही नहीं अपितु अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति हुई है। हमारे कार्मिक विभिन्न विषयों पर पत्रिका में लेखन कर इस पत्रिका को जन उपयोगी बना रहे हैं। इसके फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–2), दिल्ली की बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पत्रिका ''रक्षक'' के लिए उत्कृष्ट पत्रिका के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका कंपनी की गतिविधियों को सभी पाठकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के साथ–साथ किसानों को कृषि संबंधी जानकारी देने में सहायक सिद्ध होगी। मेरी ओर से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

(कुलदीप सिंह)
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा गृह पत्रिका 'रक्षक' के अंक 14 का प्रकाशन किया जा रहा है। हिल कीटनाशक उपचार संबंधी नेटवर्क के लिए प्रौद्योगिकी के विकास की प्रगतिशील अवस्था में है, जिसे वर्तमान में वैकल्पिक रोगवाहक नियंत्रण उपायों के रूप में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है। हिल खड़ी फसलों की सुरक्षा के लिए उचित मूल्य पर गुणवत्तायुक्त कीटनाशक की आपूर्ति करता है। फसल सुरक्षा के साथ–साथ कंपनी बीज उत्पादन और विपणन तथा उर्वरक विपणन का कारोबार भी करती है, ताकि किसानों की अच्छी फसल हेतु एक ही स्थान पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो सके।

आज हिन्दी विश्व स्तरीय भाषा के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। विश्व की सभी प्रसिद्ध दिग्गज कंपनियों ने व्यापार के दृष्टिकोण से भारतीय बाजार की समीक्षा के पश्चात् भारत में अपने उत्पादों की बिक्री हेतु हिन्दी को ही प्रचार का माध्यम बनाया है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अगर हम आगे बढ़ने के अपने सपने को सच करना चाहते हैं तब हमारा मार्ग प्रशस्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राजभाषा हिन्दी ही निभा सकती है। किसी भी संगठन में पत्रिका के प्रकाशन से उस में कार्य करने वाले कार्मिकों को उस संगठन के क्रिया–कलापों की जानकारी मिलती है तथा जन साधारण तक संगठन की उपलब्धियां एवं कार्यपद्धति को पहुँचाने में भी पत्रिका की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कंपनी अपने व्यावसायिक हितों तथा निगमित दायित्वों का ध्यान रखने के साथ–साथ अपने संवैधानिक तथा नैतिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। कंपनी द्वारा संसदीय राजभाषा समिति, प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के अनुपालनार्थ पूरा प्रयास किया जाता है। कंपनी की वेवसाइट पूर्णतः द्विभाषी है। सभी कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने और नोटिंग/ड्राफ्टिंग हिन्दी में करने हेतु हिन्दी कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है और कंपनी में प्रयोग होने वाले शब्दों/वाक्यांशों को सम्मिलित करते हुए एक कार्यालय सहायिका तैयार करके कार्मिकों को प्रदान की गई है, इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कंपनी के निगमित कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए माननीय गृहमंत्री के कर–कमलों से 'क' क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार, प्रशासनिक मंत्रालय से प्रथम पुरस्कार एवं नराकास (उपक्रम) दिल्ली से निगमित कार्यालय को तथा अधीनस्थ यूनिटों को संबंधित नराकासों से लगातार पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई हैं।

गृह पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य हिल परिवार के सभी सदस्यों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित/प्रोत्साहित करने के साथ–साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देना है। सृजनशील प्रतिभाओं के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम होने के अतिरिक्त पत्रिकाओं का राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को कंपनी की गतिविधियों की जानकारी मिलने के साथ–साथ पाठकों को सुरूचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में 'रक्षक' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

श्रीनिवास राजू

(डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू)
निदेशक (वित्त)

संदेश

गृह पत्रिका रक्षक का नवीनतम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना हमारे सामाजिक दायित्व के साथ–साथ संवैधानिक अनिवार्यता भी है। रक्षक पत्रिका हिल के कार्मिकों को हिन्दी में लेखन क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ पाठकों को उपयोगी जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिल (इंडिया) लिमिटेड का कारोबार जन–स्वास्थ्य, कृषि रसायन, बीज और उर्वरक का निर्माण एवं विपणन का है, जिसका सीधा संबंध आम जनता और किसानों से है। हिल के कारोबार को प्रोत्साहित करने और किसानों के बीच संपर्क स्थापित करने में राजभाषा हिन्दी निःसंदेह एक सेतु का कार्य कर रही है। आज हिन्दी को विश्व की सशक्त तथा व्यापक भाषाओं की श्रेणी में होने पर गर्व है। मेरा यह मानना है कि निज भाषा की उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति का द्योतक है।

जैसा कि आप जानते हैं कि हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुणवत्तावान कृषि रसायन फसलों की सुरक्षा करने में सक्षम है। तथापि फसलों को कीटों से बचाने के लिए कीटनाशकों का उचित मात्रा और उचित समय पर प्रयोग करने के लिए हिल द्वारा विभिन्न राज्यों में किसानों को प्रशिक्षण दिया जाता है। जहां तक किसानों की आय को बढ़ाने का प्रश्न है इसके लिए आवश्यक है कि किसान नवीनतम एवं अधिक उत्पादन देने वाली प्रजातियों के बीजों का प्रयोग करें, उन्नत उत्पादन तकनीक तथा गुणवत्तावान तथा सही मात्रा में सही समय पर कीटनाशकों का प्रयोग करें, जिससे उनकी कृषि लागत में कमी आएगी और प्रति एकड़ अधिक उत्पादन होगा। मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड लगातार नवीनतम अधिक उत्पादन देने वाले और कीटरोधी प्रजातियों के बीज किसानों को वितरित कर रहा है, इसमें हमारा योगदान काफी महत्वपूर्ण है। यह एक सतत की जाने वाली प्रक्रिया है और हम उसका सकुशल निर्वाह कर रहे हैं।

कंपनी अपने कारोबार के साथ–साथ सामाजिक दायित्व से संबंधित गतिविधियों का भी अनवरत रूप से अनुपालन कर रही है, जिसमें अपनी अधीनस्थ इकाईयों के नजदीक ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित पेयजल आदि उपलब्ध कराना सम्मिलित है। कंपनी अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने के साथ–साथ संवैधानिक कर्तव्यों के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। जिसके परिणामस्वरूप हिल को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए माननीय गृहमंत्री के कर–कमलों से 'क' क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग से राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से भी हिल को राजभाषा हिन्दी एवं गृह पत्रिका 'रक्षक' के लिए शील्ड देकर सम्मानित किया गया है।

मैं रक्षक के इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा इस अंक में योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि रक्षक पत्रिका का यह अंक सुधी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शशांक चतुर्वेदी

(शशांक चतुर्वेदी)
निदेशक (विपणन)

संपादकीय

गृह पत्रिका ''रक्षक'' का नया अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। पत्रिका में प्रकाशन हेतु उपयोगी लेख भेज कर पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए सभी लेखकों के सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आज हिन्दी विश्व स्तरीय भाषा के रूप में पहचान बना चुकी है। विश्व के सभी प्रसिद्ध दिग्गज कंपनियों ने व्यापार के दृष्टिकोण से भारतीय बाजार की समीक्षा के पश्चात् भारत में अपने उत्पादों की बिक्री हेतु हिन्दी को ही प्रचार का माध्यम बनाया है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अगर हम आगे बढ़ने के अपने सपने को सच करना चाहते हैं तब हमारा मार्ग प्रशस्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राजभाषा हिन्दी ही निभा सकती है। किसी भी संगठन में पत्रिका के प्रकाशन से उस में कार्य करने वाले कार्मिकों को उस संगठन के क्रिया–कलापों की जानकारी मिलती है तथा जन–साधारण तक संगठन की उपलब्धियां एवं कार्यपद्धति को पहुँचाने में भी पत्रिका की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

यह अंक रक्षक के पिछले अंकों से भिन्न है, क्योंकि प्रस्तुत अंक में कंपनी की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ जनोपयोगी लेख जैसे कृषि क्षेत्र के विकास में महिलाओं की अहम भूमिका, ''डी.डी.टी. के सुरक्षित विकल्प'' – हिल (इंडिया) लिमिटेड की नई पेशकश, जैव उर्वरक खेती, मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका, डिजिटल इंडिया, राष्ट्र की उन्नति में हिन्दी भाषा का योगदान, सामाजिक समरसता के संदर्भ में संत कबीर आदि विभिन्न विषयों को सम्मिलित किया गया हैं। पत्रिका को रोचक बनाने के लिए कविताओं, संस्मरणों आदि का भी समावेश किया गया है। इस छःमाही में आयोजित संगोष्ठी, कार्यशाला एवं कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग और एकीकृत कीट प्रबंधन पर दिए गए प्रशिक्षणों के चित्र प्रकाशित किए गए है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालनार्थ अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाता है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू कीर्ति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत कंपनी को प्रथम पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार हमारे लिए अत्यन्त प्रेरणादायी है। इसी वर्ष रसायन और उर्वरक मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में कंपनी को हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रथम तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से हिन्दी के कार्यान्वयन तथा गृह पत्रिका ''रक्षक'' के लिए राजभाषा शिल्ड के रूप में प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए है। इन प्रेरणादायी पुरस्कार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड की ओर से हार्दिक आभार। भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड सदैव सघन प्रयास करती रहेगी।

रक्षक पत्रिका में निरंतर निखार आए इसके लिए सभी सुधी पाठकों से सुझावों की अपेक्षा है। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हम आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए सदैव प्रयत्नशील है। आशा करता हूँ कि विगत अंको की तरह यह अंक भी आपके लिए रूचिकर एवं उपयोगी साबित होगा।

अजीत कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

कृषि क्षेत्र के विकास में महिलाओं की अहम भूमिका

कृषि प्रभाग

(शशांक चतुर्वेदी)
निदेशक (विपणन), निगमित कार्यालय

करीब 48 प्रतिशत महिलाएं कृषि संबंधी मामलों में शामिल हैं। जबकि 7.5 करोड़ महिलाएं दूध उत्पादन और पशुधन प्रबंधन में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। देश में हर रोज खेतों में लाखों की संख्या में महिला किसान काम करती हैं। महिला किसान ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है क्योंकि खेती के अनेक कार्यों की जिम्मेदारी से लेकर गृहकार्य की पूरी जिम्मेदारी उन पर ही होती है।

ग्रामीण अथवा शहरी, कोई भी क्षेत्र हो, महिलाएं आबादी का लगभग आधा अंश होती हैं। वे परिवार, समाज समुदाय का एक बड़ा ही सार्थक अंग हैं। जो समाज के स्वरूप को सशक्त रूप से प्रभावित करती हैं। महिलाएं राष्ट्र के विकास में पुरूषों के बराबर ही महत्व रखती हैं। आज भी देश की 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है तथा जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर हैं ग्रामीण महिलाएं गृह कार्य तथा बच्चों को संभालने के साथ–साथ कृषि संबंधी रोजगार में भी हाथ बँटाती हैं।

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ स्वामीनाथन के अनुसार विश्व में खेती का सूत्रपात और वैज्ञानिक विकास का प्रारंभ महिलाओं ने ही किया। घर और खेत पर महिलाओं का देश के आर्थिक विकास में लगभग पचास प्रतिशत योगदान रहता हैं कृषि में उत्पादन बढ़ाने के लिए नवीनीकरण और नई टेक्नोलॉजी का महिलाओं द्वारा स्वीकार किया जाना महत्वपूर्ण बात समझी जा रही है।

महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के परिणामस्वरूप भारत अनेक प्रकार के फल, सब्जी और अनाज के मामले में महत्वपूर्ण उत्पादक देश बन गया है। पशुपालन, मछलीपालन, चटनी, अचार, मुरब्बे यानि की खाद्य परिक्षण, हथकरघा दस्तकारी जैसे कामों में ग्रामीण महिलाएं पुरूषों के बराबर ही महत्व रखती हैं। वे खेतों में कार्य करने के अलावा कृशि संबंधी मामलों में महत्वपूर्ण निर्णय भी लेती हैं।

महिला कृषकों की समस्याएँ

कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी उन्हें बहुत सी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। कृषि कार्यों में लगी महिलाओं की अपनी कोई अलग पहचान नहीं है क्योंकि अर्थव्यवस्था की बागडोर प्रायः पुरूषों के पास रहती है। ज्यादातर के पास जमीनों के मालिकाना हक भी नहीं है। उनकी अशिक्षा, अनभिज्ञता, उदासीनता और अंधविश्वास रास्ते के रोड़े साबित होते हैं। पुरूषों की तुलना में उन्हें मजदूरी भी कम मिलती है। शिक्षा, सूचना तथा मनोरंजन के उन्हें अपेक्षाकृत कम मिलते हैं।

महिला कृषकों की समस्याओं का निदान

सहकारी समितियों में महिलाओं को सदस्य बनाने के लिए अभियान चलाने की आवश्यकता है जिससे महिलाओं को भी सहकारी समितियों से ऋण, तकनीकी मार्गदर्शन, कृषि उत्पादकों का विपणन आदि की सुविधा उपलब्ध हो सके। महिलाओं को संस्थागत–ऋण प्राप्त हो, इसके लिए खेत पर पति–पत्नी के नाम पर संयुक्त पट्टा होना चाहिए। महिलाओं की कुलशता और उनके कृषि औजारों की दक्षता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के विकास के लिए कृषि कार्यों में जुड़े ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जाना बहुत जरूरी है।

कृषि में महिलाओं का योगदान

पिछले कुछ समय से चल रहे किसान विरोध के दौरान कृषि में महिलाओं की भागीदारी पर बहस प्रारंभ हो गई है। प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक एम एस स्वामीनाथन ने कहा था कि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि महिलाओं ने ही सर्वप्रथम फसली पौधों का प्रयोग प्रारंभ किया और खेती की कला व विज्ञान का विकास हुआ। उस समय पुरूष भोजन की तलाश में शिकार करने चले जाते थे और महिलाएं देसी पेड़–पौधों से बीज व फल एकत्रित करती थीं। इस प्रकार भोजन, खाद्य, चारा फाइबर और ईधन के लिए खेती का विकास हुआ।

कृषि में महिलाओं के लिए आम धारण

- ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर महिलाएं खेतों में काम करने के बाद घरेलू काम भी करती हैं। फिर भी इन ग्रामीण महिलाओं को बराबरी का हक नहीं मिलता है।
- भारत में जब भी कृषि संबंधी चर्चा की जाती है, तो किसान

के रूप में पुरूषों के बारे में ही सोचा जाता है। महिलाओं का नाम कृषि भूमि के मालिक के रूप में दर्ज न होने के कारण उनको किसानों की परिभाषा से बाहर रखा जाता है।

- कृषक के रूप में मान्यता न मिलने से महिलाएं नियमानुसार सभी सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने से वंचित रह जाती हैं।
- सरकार भी इस समस्या को लेकर बहुत चिंतित नहीं है और महिलाओं को 'कृषि कार्य में सहायक' या खेतिहर मजदूर' (Agricultural LabourerS) के रूप में मान्याता देती है न कि कृषक के रूप में।

कृषि में लैंगिक असमानता

- **उत्पादक संसाधनः** भेदभाव के कारण महिला किसानों के लिए संसाधनों, उत्पादन आदानों, ऋण सुविधाओं, विस्तार सेवाओं, नए नवाचारों तक पहुँचना बहुत कठिन है।
- महिलाओं को वे अधिकार प्राप्त नहीं हैं, जो उन्हें एक कृषक के रूप में प्राप्त होने चाहिए जैसे कि खेती के लिए कर्ज, कर्जमाफी, फसल बीमा और सब्सिडी के साथ–साथ महिला कृषकों की आत्महत्या के मामले में उनके परिवारों को मुआवजा न मिलना।
- **निर्णय लेनाः** निर्माता सहकारी समितियों या श्रमिकों के समह में और विवाद समाधान निकायों में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व के मामलों में निर्णय लेने की शक्ति अभी भी पुरुष के हाथों में है चाहे वह घरों के अंदर हो या बाहर ।
- महिलाओं को किसानों के रूप में मान्यता न मिलना उनकी समस्याओं का केवल एक पहलू है। महिला किसान मंच (MAKAAM) के अनुसार उन्हें भूमि, जल और जंगलों पर अधिकार के मामलों में अत्याधिक असमानता का सामना करना पड़ता है।
- इसके अतिरिक्त, कृषि की अन्य समर्थन प्रणालियों, जैसे–भंडारण सुविधाओं, परिवाहन लागत और नए निवेश के लिए नकदी या पुराने बकायों का भुगतान करने के साथ–साथ कृषि ऋण से संबंधित अन्य सेवाओं में भी लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
- इस प्रकार कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद महिला किसान हाशिये पर हैं। जो शोषण के प्रति बहुत सुभेद्य हैं। इस समस्या का कारण सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक है और यह इस धारण का परिणाम है कि खेती केवल पुरूषों का पेशा है। ■

"डी.डी.टी. के सुरक्षित विकल्प" - हिल (इंडिया) लिमिटेड की नई पेशकश

डॉ0 राजेन्द्र थापर

उप महाप्रबंधक (विपणन) – प्रभारी

हिल (इंडिया) लिमिटेड डाइक्लोरो–डाइफिनाइल–ट्राईक्लोरोईथेन (डी.डी.टी.) का एकल विनिर्माता है जो विभिन्न राज्यों और कई अफ्रीकी देशों में मलेरिया नियंत्रण एवं मलेरिया उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी लंबी लागत–प्रभावशीलता के कारण दक्षिणी अफ्रीकी देशों में इस रसायन की अभी भी भारी मांग है। चूंकि डी.डी.टी चरणबद्ध तरीके से समाप्त हो रहा है, हिल वेक्टर–नियंत्रण हस्तक्षेपों की एक सुरक्षित, पर्यावरण–अनुकूल और लागत प्रभावी श्रृंखला शुरू करने की प्रक्रिया में है।

भारत सरकार ने मई 2002 में स्थायी जैविक प्रदूषकों पर संयुक्त राष्ट्र के स्टॉकहोम कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए और जनवरी 2006 में इसकी पुष्टि की। स्टॉकहोम कन्वेंशन मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को 12 पहचाने गए Persistent organic Pollutants (POPs) से बचाने के लिए एक वैश्विक संधि है, जो लंबे समय तक पर्यावरण में बरकरार रहते हैं, भौगोलिक रूप से व्यापक रूप से वितरित होते हैं, जीवित जीवों में जैव–संचय की प्रवृत्ति रखते हैं और मानव स्वास्थ्य या पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। भारत स्थायी जैविक प्रदूषकों के उत्पादन और पर्यावरणीय उत्सर्जन को कम करने या जहां संभव हो, समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। कन्वेंशन द्वारा डी.डी.टी को स्थायी जैविक प्रदूषकों में से एक के रूप में पहचाना गया है और इसका उत्पादन और/या उपयोग केवल वेक्टर रोग–नियंत्रण उद्देश्यों के लिए प्रतिबंधित है।

हिल (इंडिया) लिमिटेड ने संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूनिडो) के सहयोग से डी.डी.टी के गैर–स्थायी जैविक प्रदूषकों विकल्पों के विकास और संवर्धन परियोजना के तहत डी.डी.टी विकल्पों के लिए विनिर्माण सुविधाएं स्थापित की हैं। यह परियोजना पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के साथ संयुक्त रूप से कार्यान्वित की गई है। हिल डी.डी.टी के वैकल्पिक परियोजना के तहत तीन तरह के उत्पाद ला रहा है–नीम–आधारित कीटनाशक, बैसिलस थुरिंगिएन्सिस इज़राइलेंसिस (बीटीआई)–आधारित बायोलार्विसाइड्स और लंबे समय तक चलने वाले कीटनाशक मच्छड़दानी (एल.एल.आई.एन.) हैं।

कंपनी ने पहले ही पचास लाख नेट की वार्षिक क्षमता के साथ एल.एल.आई.एन. का व्यावसायीकरण किया, जिसे दिसंबर 2023 तक एक करोड़ नेट प्रति वर्ष तक बढ़ाया जाएगा। वर्ष 2022–23 के दौरान, कंपनी ने राष्ट्रीय और राज्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों और रक्षा प्रतिष्ठानों को लगभग 20 लाख एल.एल.आई.एन. की आपूर्ति निष्पादित की है। नीम आधारित फॉर्मूलेशन और बीटीआई फॉर्मूलेशन का व्यवसायीकरण मार्च–अप्रैल 2024 तक किया जाएगा।

हिल–यूनिडो परियोजना का मुख्य उद्देश्य डी.डी.टी के विकल्प के रूप में वेक्टर नियंत्रण हस्तक्षेपों की सुरक्षित, पर्यावरण–अनुकूल और लागत प्रभावी उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। ■

जैव उर्वरक खेती के लिए है वरदान

अजीत वर्मा
प्रबंधक (बीज उत्पादन)
निगमित कार्यालय

कई वर्षों से, किसान कृत्रिम रूप से फसल वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कर रहे हैं, जिसका मिट्टी और पर्यावरण के स्वास्यि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नतीजतन, मिट्टी में प्राकृतिक पोशक तत्वों की बढ़ती कमी हो रही है और इसकी फसल पैदा करने की क्षमता कम हो रही है।

सावधानीपूर्वक शोध के बाद, वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि कुछ प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले बैक्टीरिया रासायनिक उर्वरकों के प्रभाव को कम करने, पोशक तत्व प्रदान करने और मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। इन जीवाणुओं को 'जैव उर्वरक' या 'जैव उर्वरक' कहा जाता है ओर ये जीवित उर्वरक होते हैं ।

फसल के अच्छे उत्पादन के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम सहित विभिन्न पोशक तत्वों की आवश्यकता होती है। यह जैविक खाद हवा में मौजूद नाइट्रोजन को अमोनिया के रूप में पौधों को आसानी से उपलब्ध कराने में सहायक है। इसके अलावा यह मिट्टी में मौजूद अघुलनशील फास्फोरस और अन्य पोशक तत्वों को घुलनयशील और पौधों को आसानी से उपलब्ध कराने में सहायक है।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक एक ऐसा पदार्थ है जिसमें जीवित सूक्ष्मजीव होते हैं, जो बीज, पौधों की सतहों, या मिट्टी पर लागू होते हैं, तो राइजोस्फीयर या पौधे के आंतरिक भाग में बस जाते हैं और मेजबान पौधे को प्राथमिक पोशक तत्वों की आपूर्ति या उपलब्धता को बढ़ाकर विकास को बढ़ावा देते हैं। जैव–उर्वरक नाइट्रोजन निधारण की प्रकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से पोषक तत्वों को जोड़ते हैं। फास्फोरस को घोलते हैं, और वृद्धि को बढ़ावा देने वाले पदार्थों के संश्लेशण के माध्यम से पौधों की वृद्धि को उत्तेजित करते हैं।

जैव उर्वरक या बायो फर्टिलाइजर को जीवाणु खाद भी कहते है, क्योंकि बायो फर्टिलाइजर एक जीवित उर्वरक है, जिसमें सूक्ष्मजीव विद्यमान होते है। जो फसलों में बायो फर्टिलाइजर इस्तेमाल करने से वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन पौधों को अमोनिया के रूप में आसानी से उपलब्ध होती है। और मिट्टी में पहले से उपसिति अघुलनशील फास्फोरस व पोषक तत्व घुलनशील अवस्था में परिवर्तित होकर पौधों या फसल को आसानी से उपलब्ध होते है।

जैव–उर्वरक से रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करने की उम्मीद की जा सकती है। जैव–उर्वरकों में सूक्ष्मजीव मिट्टी के प्राकृतिक पोशक चक्र को बहाल करते हैं और मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ का निर्माण करते हैं। जैव–उर्वरकों के उपयोग के माध्यम से, मिट्टी की स्थिरता और स्वास्थ्य को बढ़ाते हुए स्वस्थ पौधे उगाए जा सकते हैं। चूंकि वे कई भूमिकाएँ निभाते हैं। ऐसे लाभकारी जीवाणुओं के लिए एक पसंदीदा वैज्ञानिक शब्द राइजोबैक्टीरिया (PGPR) को बढ़ावा देने वाला पौधा–विकास है। इसलिए, वे सूक्ष्मजीव और उनके उपोत्पाद के माध्यम से जैविक पोशक तत्वों की आपूर्ति करके मिट्टी की उर्वरता को समृद्ध करने और पौधों की पोशक आवश्यकताओं को पूरा करने में बेहद फायदेमंद हैं। इसलिए, जैव–उर्वरक में कोई भी रसायन नहीं होता है जो जीवित मिट्टी के जिए हानिकारक हो। जैव–उर्वरक पर्यावरण के अनुकूल जैविक कृषि–इनपुट हैं और रासायनिक उर्वरकों की तुलना में अधिक लागत प्रभावी हैं। राइजोबियम, एजोटोबैक्टर, एजोस्पिरियलम और नीले हरे शैवाल (बीजीए) जैसे जैव–उर्वरकों का उपयोग बहुत पहले से किया जा रहा है।

दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम इनोकुलेंट का उपयोग किया जाता है। विभिन्न राइजोबियन संस्कृतियों का उपयोग विशेष रूप से फलीदार फसलों के विभिन्न क्रॉस इनोक्यूलेशन समूहों के लिए किया जाता है। एजोटोबैक्टर का उपयोग गैर–फलीदार फसलों जैसे गेहूं, मक्का, सरसों, कपास, आलू ओर अन्य सब्जियों की फसलों के साथा किया जा सकता है।

जैव उर्वरकों को जीवित कोशिकाओं या सूक्ष्मजीवों के कुशल उपभेदों की अव्यक्त कोशिकाओं वाली तैयारी के रूप में परिभाषित किया जाता है जो बीज या मिट्टी माध्यम से लागू होने पर राइजोस्फीयर में उनकी बातचीत से फसल के पौधें को पोशक तत्वों को बढ़ाने में मदद करते हैं। वे मिट्टी में कुछ माइक्रोबियल प्रक्रियाओं को तेज करते हैं जो पौधों द्वारा आसानी से आत्मसात किए जाने वाले पोशक तत्वों की उपलब्धता की सीमा को बढ़ाते हैं।

जैव उर्वरक में क्या होता है ?

जैवउर्वरक में स्थानीय पेड़ो– पारिस्थितिक प्रणाली से अलग किए गए प्रभावी सूक्ष्मजीव (ईएम) होते हैं जिनका वी.वी. की अनुसंधान इकाई के तहत परीक्षण और जांच की जाती है। प्रभावी सूक्ष्मजीव उपभेदों को कृत्रिम रूप से पोषित किया जाता है और प्रयोगशाला की स्थिति के तहत पोशक तत्वों के पर्याप्त पूरक के साथ बहुतायत से गुणा किया जाता है। बायोकल्चर को फिर लिग्नाइट, चारकोल, गन्ना प्रेस मड जैसे संसाधित ठोस वाहक आधार सामग्री के साथ जीविका प्रदान की जाती है।

वाहक आधारित जैवउर्वरक के गुणः

- लंबी शेल्फ लाइफ 6–12 महीने।
- गुणात्मक रूप से परीक्षा किए जाने पर कोई संदूषण नहीं।
- कमरे के तापमान पर संग्रहित करने पर गुणों का कोई नुकसान नहीं होता है।
- देशी आबादी से लड़ने के लिए संभावित रूप से सक्षम।
- उच्च आबादी को 6 महीने तक 108 सेल्स/मिलीलीटर से अधिक बनाए रखा जा सकता है।
- ठेठ किण्वित गंध द्वारा आसान पहचान।
- बीज, मिट्टी और अन्य उपचारित सामग्री पर बेहतर उत्तरजीविता।
- निर्माण के स्रोत से सीधे खरीदना आसान।
- किसान द्वारा उपयोग करना बहुत आसान है और बीज और अन्य उपचारित सतह पर अच्छा चिपकाव है।
- बीज, मिट्टी और रोपण सामग्री पर उपचार करना आसान है।
- आवेदन दर बहुत कम है।

फायदे

1. सूक्ष्मजीवों का कार्य लंबी अवधि में होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है। यह मिट्टी के प्रकृतिक आवास को बनाए रखता है।
2. यह फसल की उपज को 20–30 प्रतिशत तक बढ़ाता है, रासायनिक नाइट्रोजन और फास्फोरस को 25 प्रतिशत तक बदल देता है और पौधे के विकास को उत्तेजित करता है। अतः यह रासायनिक उर्वरकों का पूरक है।
3. यह सूखे और कुछ मृदा जनित रोगों से भी सुरक्षा प्रदान कर सकता है (जैसा कि ट्राइकोडर्मा कल्चर के मामले में सुनिश्चित किया गया है।)
4. रासायनिक उर्वरकों की तुलना में जैव उर्वरक किफायती हैं। विशेष रूप से नाइट्रोजन ओर फास्फोरस के उपयोग के संबंध में उनकी निर्माण लागत कम है।
5. यह पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि यह न केवल प्राकृतिक स्रोत को नुकसान पहुँचाने से रोकता है बल्कि कुछ हद तक अवक्षेपित रासायनिक उर्वरक से पौधे को साफ करने में मदद करता है।
6. जैव उर्वरकों को जैव विविधता (मृदा जीवन) और मिट्टी की दीर्घकालिक उत्पादकता में सुधार के लिए जाना जाता है, और अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड के लिए बड़ा भंडाार साबित हो सकता है।
7. जैविक खाद के प्रयोग से कई गुना लाभ होता है। सबसे पहले, वे विभिन्न सामग्रीयों से बने होते हैं, जिसका अर्थ है कि एक शक्तिशाली उर्वरक बनाने के लिए उन्हें थोड़ी मात्रा में फसलों के साथ मिलाया जा सकता है। दूसरे, आप खाद के साथ 80 से 100 किलोग्राम मिट्टी या खाद मिलाते हैं, ओर अंत में, आप इसे हल करने से पहले 10 से 12 घंटे तक प्रतीक्षा करते हैं।
8. जैविक पोशक तत्व मिट्टी के जीवों जैसे फंगल माइकोराइजा की प्रचुरता को बढ़ाते हैं, जो पौधों को पोशक तत्वों को अवशोषित करने में सहायता करते हैं।
9. कुछ वृद्धि को बढ़ावा देने वाले पदार्थों का स्राव करता है।
10. मिट्टी की संरचना और जल धारण क्षमता में सुधार।
11. बीजों के अंकुरण को बढ़ाएं।

12. मिट्टी की उर्वरता और उर्वरक उपयोग दक्षता और अंततः फसलों की उपज में वृद्धि।

बायो फर्टिलाइजर प्रयोग की विधि

1) बीज उपचार विधि

जैव उर्वरक पौधों को बढ़ाने में मदद करने का एक शानदार तरीका है। सबसे पहले 1 लीटर पानी में लगभग 100 से 110 ग्राम गुड के साथ जैविक खाद मिलाएं। फिर इसे 20 किलो बीजों पर अच्छी तरह छिड़क दें। अंत में, तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि बीज बोने से पहले अच्छी तरह से सूख न जाएं।

2) कंद उपचार विधि

जैव उर्वरक गन्ना, आलू अरबी और अदरक जैसी फसलों को मजबूती से बढ़ने में मदद करते हैं। इन पौधों के कंधों का उपचार करके हम उन्हें पोषक तत्वों को अवशोषित करने और मजबूत होने में मदद कर सकते ऐसा करने के लिए हम 1 किलो एजोटोवेक्टर और 1 किलो फॉस्फोरस सॉल्वेंट बैक्टीरिया का घोल तैयार कर सकते हैं और फिर उसमें कंदों को 10 से 15 मिनट के लिए डुबो कर रख सकते हैं। उसके बाद, हम उन्हें मिट्टी में रोप सकते हैं।

3) पौध जड़ उपचार विधि

टमाटर, फूलगोभी, गोभी और प्याज जैसे रोपे गए पौधों पर जैव उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। जैव उर्वरकों को लगाने के लिए आपको एक चौड़े, खुले बर्तन और 6 से 8 लीटर पानी की आवश्यकता होगी। आपको 1 किलो एजोटोबैक्टर और 1 किलो फॉस्फोरस घुलनशील बैक्टीरिया ओर 250 से 300 ग्राम गुड़ की भी आवश्यकता होगी। फिर पौधे को जमीन से बाहर निकालें, उवकी जड़ों को साफ करें और उसे बायोफर्टिलाइजर के घोल में 10 से 15 मिनट के लिए डुबोकर रखें। अंत में तुरंत पौधा लगाएं।

4) मिट्टी उपचार विधि

जैविक खाद विभिन्न सामग्रीयों से बनी होती है। सबसे पहले आप इसका 5 से 10 किलो फसलों के साथ मिला दें। फिर आप 80 से 100 किलो मिट्टी या कम्पोस्ट खाद में मिला दें। अंत में आप 10 से 12 घंटे प्रतीक्षा करें और फिर अंतिम जुताई के दौरान आप इसे मिट्टी में मिला दें।

जैव उर्वरकों के उपयोग में सावधानियां

'बायोफर्टिलाइजर' शब्द का ही मतलब है कि यह एक लाइव फर्टिलाइजर है। बायोफर्टिलाइजर्स की गुणवत्ता के लिए न केवल प्रयोगशाला और उत्पादन स्तर पर बल्कि फील्ड स्तर पर भी माइक्रोबियल विशेषताओं, प्रभावशीलता, स्थिरता, सावधानियों और सीमाओं के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है।

1. जैव उर्वरक के पैकेट को सीधे धूप या गर्म हवा से दूर ठंडे स्थान पर रखें।
2. जैव उर्वरक विशेष फसल (फसलों) के लिए प्रभावी होने के लिए बहुत विशिष्ट हैं, कृपया सिफारिश के अनुसार लागू करें।
3. जैव उर्वरक के पैकेट को उपयोग से ठीक पहले फाड़ें एक बार में जैवउर्वरक का पूरा पैकेट लगा दें।
4. बीजों (बीजों का लेप) या अंकुरों को छाया में ही उपचारित करें।
5. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के सीधे संपर्क से बचें।
6. यदि बीजों का कीटनाशकों से उपचार करना आवश्यक हो तो पहले बीजों को कीटनाशकों से उपचारित करें और उसके बाद अनुषंसित मात्रा से 2–3 गुना अधिक मात्रा में जैव उर्वरक का उपचार करें।
7. अच्छी गुणवत्ता वाले जैव उर्वरक की पहचान 30–40 प्रतिशत नमी की मात्रा के साथ की जाती है, जैसा कि मुट्ठी में एक ढेले के गठन की परिकल्पना की गई है।
8. जैव उर्वरकों के प्रयोग में सुविधा के लिए, मिट्टी में प्रयोग के मामले में, जैव उर्वरक की सुझाई गई मात्रा को 50 किलोग्राम चूर्णित मिट्टी या FYM में मिलाएँ और प्रसारित करें।
9. प्रत्येक जैव उर्वरक बेहतर प्रतिक्रिया करता है यदि मिट्टी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध फॉस्फेट (एफवईएम लागू करें), तटस्थ पीएच की मिट्टी (चूना लागू करें) से समृद्ध हो।
10. सर्वोत्तम प्रभाव प्राप्त करने के लिए, बुवाई से 3–4 घंटे पहले जैव उर्वरकों के साथ उपचार की सलाह दी जाती है।

खरीद का स्रोत

यह भी सिफारिश की जाती है कि किसान लैविक खाद खरीदने के लिए राज्य कृषि विश्वद्यािलयों, कृषि विज्ञान केंन्द्रों (केवीके) या सरकार द्वारा संचालित एजेंसियों में जाएं। इसके अतिरिक्त, यह अनुशंसा की जाती है कि वे इन्हें अधिकृति संगठनों/प्रयोगशालाओं जैसे FFL, इफको, आदि से खरीदें। ■

मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका

प्रबंधन

सुशील काला
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्र.), निगमित कार्यालय

मानव संसाधन प्रबंधन की अवधारणा प्रबंधन के क्षेत्र की एक नूतन अवधारणा है और यह आज सर्वाधिक प्रचलित अवधारणा के रूप में देखी जाती है। आरम्भ में यह अवधारणा रोजगार प्रबंधन, कार्मिक प्रबंधन, औद्योगिक संबंध, श्रम कल्याण प्रबंधन, श्रम अधिकारी, श्रम प्रबंधक के रूप में थी और 1960 और उसके बाद में मुख्य शब्द कार्मिक प्रबंधक ही था। जिसमें कर्मचारियों के सामान्य कार्यक्रमों के प्रति उत्तरदायित्व सम्मिलित है। शब्दों के विकास का यह स्वरूप इस बात का संकेत है कि 'कार्मिक प्रबंध' प्रबंध की एक शाखा के रूप में विकसित हो रहा है और अभी तक इसका स्वरूप सर्वमान्य एक रूप में नहीं बन सका है।

विद्वानों ने इसे जन एवं समुदाय संबंध के रूप में देखने का प्रयास कर रहे है। यह विचारणीय है कि इसके स्वरूप को भले विभिन्न नामों से जाने, किन्तु उनके कार्य क्षेत्र पर विचार करें तो सभी का बल संगठन में लगे मानव संसाधन के विकास तथा अधिकतम उत्पादन एवं लाभ पर केन्द्रित है। किसी भी प्रतिष्ठान के निर्माण एवं विकास में पूंजी, श्रम, संगठन और साहस ही प्रमुख है और इनमें भी श्रम या मानव शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह मानव शक्ति से ही पूंजी,संगठन और उद्यमी को उर्जा मिलती है।

मनुष्य चेतन प्राणी है। यह अलग–अलग सोच रखता है, इसमें कुछ नया करने का साहस होता है और ये संगठित होकर सामूहिक नैतिकता बोध से दलीय भावना से कार्य करता है तो संगठन अपने लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त करता है अन्यथा संगठन अपने उद्देश्य प्राप्ति में विफल हो जाता है। यही कारण है कि मानव संसाधन प्रबंधन आज प्रबंधन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है।

मानव संसाधन प्रबंधन की अवधारणा

औद्योगिकीकरण की प्रारंभिक अवस्था में इसका महत्व गौण था। यह समझा जाता था कि सामान्य प्रबंधक ही मानव संसाधन प्रबंधन के लिए भी समर्थ है। प्रबंधन कौशल दैवीय शक्ति है जो

सामान्य प्रबंध का उत्तरदायी है, वह मानव संसाधन प्रबंधन के लिए भी उत्तरदायी है किन्तु जब उद्योगीकरण तीव्र गति से होने लगा तो श्रमिकों की अनेक समस्याएँ उभरने लगी और सामान्य प्रबंधक भी उन चुनौतियों का सामना करने में अपने को असहाय पाने लगा और इसी बीच सामाजिक विज्ञानों का भी महत्व बढ़ने लगा और यह पाया गया कि औद्योगिक समाजों की अनेक समस्याओं के निराकरण एवं उनके निर्मूलन में मनोविज्ञान, नृशस्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र की अच्छी बिधायी भूमिका है।

अतः यह सिद्ध हो गया कि मानव संसाधन प्रबंधन एक विशिष्ट व्यावसायिक विषय है। अतएव इसके प्रबंधन का उत्तरदायित्व एक प्रशिक्षित सामाजिक अभियंता का ही है और यही कारण है कि मानव संसाधन के प्रबंधन में सामाजिक विज्ञानवेत्ता तथा प्रशिक्षित व्यक्ति ही नियुक्त हो रहे हैं। प्रबंधन के विभिन्न आयामों से जो परिचित है और मानव व्यवहार की गत्यात्मकता तथा प्रबंधन–कौशल में पूर्ण निपुण हैं। ऐसे ही व्यक्ति को मानव संसाधन प्रबंधन का उत्तरदायित्व दिया जाना चाहिए। मानव संसाधन प्रबंधन के अन्तर्गत प्रमुख कार्य निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त किये गये हैं:–

1. श्रम पक्ष–जिसमें चयन, नियुक्तियाँ, स्थापना, स्थानांतरण, पदोन्नति, छुट्टी प्रशिक्षण तथा विकास एवं अभिप्रेरणा मज़दूरी, वेतन प्रशासन आदि विषय हैं।
2. कलयाणकारी पक्ष –इसमें कार्य की दशायें सुविधाएँ, सुरक्षा स्वास्थ्य संबंधी बातें सम्मिलित की जाती हैं।

3. औद्योगिक संबंध पक्ष –इसमें श्रम संघों द्वारा विचारों का आदान–प्रदान, सामूहिक सौदेबाजी, विवादों का निपटारा, संयुक्त प्रबंध समितियाँ तथा सामाजिक सुरक्षा, वेतन, भत्ते आदि सम्मिलित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त चिकित्सा लाभ, बीमारी की छुट्टी, परिवार नियोजन तथा मनोरंजनात्मक तथा शिक्षात्मक कार्यक्रम की बातें भी समाहित हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन के कार्य

- कर्मचारियों में मधुर संबंध बनाये रखने की दृष्टि से अनुकूल नीतियों का निर्माण करना।
- नेतृत्व विकास के लिए समुचित कार्य करना।
- सामूहिक सौदेबाजी, समझौता, संविदा प्रशासन तथा परिवाद निवारण करना।
- श्रम श्रोतों की जानकारी रखना तथा कार्य के अनुरूप उपयुक्त व्यक्ति का चयन करना।
- विकास हेतु उपयुक्त अवसरों को श्रमिकों हेतु सुलभ कराना तथा उनकी योग्यता प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान करना।
- कर्मचारियों में कार्य के प्रति उत्साह बनाए रखना तथा प्रोत्साहन देते रहना।
- संगठन में मानव संसाधन का मूल्यांकन करते रहना।
- मानव संसाधन के क्षेत्र में शोध की व्यवस्था बनाये रखना तथा शोध के निष्कर्षों का नीति निर्माण में उपयोग करना।

इस प्रकार योडर ने आठ प्रमुख कार्यों को माना है जबकि नार्थ कोट ने मानव संसाधन प्रबंधक के कार्यो को तीन दृष्टियों से देखने का प्रयास किया है :–

1. जन कल्याण दृष्टिकोण।
2. वैज्ञानिक प्रबंध दृष्टिकोण।
3. औद्योगिकसंबंध दृष्टिकोण।

इस प्रकार मानव संसाधन प्रबंधन के द्वारा ही उपरोक्त दृष्टिकोण रखते हुए श्रमिक के शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं सुरक्षा के क्षेत्र में विधि सम्मत तथा अन्य जनहितकारी कार्यों को करना चाहिए तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही कर्मियों का चयन, प्रशिक्षण, उचित पारिश्रमिक/मजदूरी, बोनस, वेतन वृद्धि तथा अन्य धार्मिक लाभ जिनसे उनमें कार्य मे लगे रहने की इच्छा, अधिकतम उत्पादन हेतु श्रम करने तथा भूमिका का निर्वाह करना तथा औद्योगिक संबंध दृष्टिकोण से उद्योग में शांति बनाए रखना तथा किसी असंतोष या विवाद की स्थिति में शीघ्रता से समाधान कराना तथा श्रम संघों से विचार विमर्श करते रहना और उनकी सहमति से निपटारा कराना। यदि औद्योगिक अशांति परस्पर सहमति से न बन पा रही हो तो संसाधन मशीनरी एवं ट्रिव्यूनल कोर्ट के माध्यम से समाधान निकालना।

ए0 एफ0 किंडाल के मानव संसाधन प्रबंधन के अन्तर्गत अधोलिखित कार्यो को माना है :–

उपक्रम के उद्देश्य के अनुरूप नीतियों का निर्माण एवं कार्य प्रणालियों का विकास करना, नियंत्रण करना तथा संचार प्रणाली को विकसित करना।

1. संगठन के सभी स्तर पर पर्यवेक्षण, नेतृत्व तथा प्रोत्साहन प्रदान करना।
2. प्रशासन के समस्त आयामों में सहयोग तथा आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

3. नीतियों को सुनियोजित ढंग से क्रियान्वित करना।
4. कार्यान्वयन हेतु निरंतर सचेष्ट रहना।
5. श्रम आंदोलनों पर ध्यान देना और उनके समाधान में सक्रिय रहना।
6. नीतियों का श्रमिकों में व्यापक प्रचार और समझ पैदा करना तथा श्रमिकों या उनके संगठनों के सुझावों को उच्च स्तरीय प्रशासकों तक पहँचाना कार्य हैं।

इसी प्रकार एच0 एच0 कैरी ने मानव संसाधन प्रबंधन के ये कार्य बताये हैं :–

- कार्मिक प्रशासन का गठन–जिसके अन्तर्गत प्रशासकों एवं कर्मचारियों के दायित्व का निर्धारण करना, नीति निर्माण के लिए समितियों का गठन प्रशासकों एवं कर्मचारियों में सद्भावना स्थापित करना, तथा व्यक्तियों का मूल्यांकन करना।
- प्रशासन तथा पर्यवेक्षण–प्रशासनिक अधिकारियों तथा पर्यवेक्षकों के कर्त्तव्य एवं दायित्व का निर्धारण करना, परिवाद निवारण हेतु उपयुक्त श्रृंखला का निर्माण करना, बहुउद्देश्यीय प्रबंध योजनाएँ बनाना, पर्यवेक्षणीय योजनाएं निर्धारित करना। दिशा–निर्देशन कार्य हैं।
- श्रम नियोजन–कर्मचारियों की आवश्यकताओं को प्रतिष्ठान के अनुरूप पूर्वानुमान, श्रमिक भर्ती की नीति निर्धारण, कार्य विवरण निर्धानित करना, मजदूरी दर निर्धारित करना, भर्ती–चयन का निर्धारण, श्रमिकों के बारे में जानकारी रखना तथा कार्य के प्रति उन्हें जागरूक करना, श्रमिकों की योग्यतानुरूप कार्य सौंपना, उनसे सम्बन्धित अभिलेख तैयार करना तथा श्रम बाजार की जानकारी रखना।
- प्रशिक्षण तथा श्रम विकास–इसके अन्तर्गत अन्तर्विभागीय कार्य विवरण तथा कर्मचारियों के मध्य संबंध ज्ञात करना, कर्मचारियों का प्रशिक्षण, अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों के हेतु विकास कार्यक्रम तैयार करना, श्रमिकों के पठन–पाठन की सुविधा उपलब्ध कराना, शिक्षा एवं व्यवसायिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था करना तथा कर्मचारियों मूल्यांकन करना कार्य हैं।
- मजदूरी तथा वेतन प्रशासन–कर्मचारी कुशलता मूल्यांकन तथा वेतन/मजदूरी निर्धारित करना, कार्य हेतु प्रोत्साहन–मौद्रिक या अन्य विधियों का उपयोग करना, श्रमिकों को प्रेरणा प्रदान करना, कार्य निष्पादन एवं मूल्यांकन संबंधी कार्य करना, श्रमिकों को सहयोगी एवं नियमित करने की चेष्टा में लगे रहना, छुट्टी, अनुपस्थिति संबंधी नीतियों का नियमों का निर्माण करना कार्य हैं।
- शक्ति संतुलन–कार्यभार निर्धारित करना, पदोन्नति, पदच्युति, स्थानान्तरण, कार्य मुक्ति से उत्पन्न समस्याओं का प्रबंध करना, श्रमिकों संबंधी सूचनाएँ एकत्र करना तथा मूल्यांकन योजनाएँ बनाना, वरिष्ठता तथा अनुशासन संबंधी विवरण रखना तथा चयन विधियों का निर्धारण करना।
- कर्मचारियों तथा प्रबंधन के बीच संबंध–कर्मचारियों से व्यक्तिगत संबंध रखना, श्रमसंघों से तालमेल बनाये रखना, सामूहिक सौदेबाजी, परिवाद निवारण प्रणाली, पंचनिर्णय तथा नियोगी–नियोक्ता समितियाँ बनाना।
- कार्य के घंटे एवं दशाओं के निर्धारण तथा विश्रामकाल एवं मनोरंजन की व्यवस्था करना।
- स्वास्थ्य एवं सुरक्षा–श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की दृष्टि से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना, मशीनरी की जाँच व्यवस्था करना एवं दुर्घटनाएँ क्षतिपूर्ति योजनाएँ सुलभ कराना।
- कर्मचारियों के साथ सम्प्रेषण आरै उनसे सम्बन्धित शोध की व्यवस्था बनाना ताकि शोध के निष्कर्षो से सम्प्रेषण तथा मानव संसाधन–प्रबंधन में नये ज्ञान का लाभ प्राप्त किया जा सके।

उपरोक्त मानव संसाधन प्रबंधन कार्यो को समेटते हुये इसे अधोलिखित प्रमुख दो रूपों में देख सकते हैं :–

मानव संसाधन प्रबंधन के प्रबंधकीय कार्य

- नियोजन : जिसके अन्तर्गत संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानव संसाधन का नियोजन, उसकी आवश्यकता, उसकी भर्ती, चयन और प्रशिक्षण है और इसकी ओर मानव संसाधन की आवश्यकता, उसके मूल्य, मनोवृत्ति तथा उसका व्यवहार जो संगठन पर प्रभावी हैं, कार्य किया जाता है।
- संगठन : दूसरे उसका प्रबंधकीय कार्य संगठन को सक्षम बनाना किसी भी उद्योग के लिए अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सबल और सक्षम संगठन का आवश्यकता होती है। संगठन ही लक्ष्य का साधन है। संगठन में अनेक लोग होते है। विशिष्ट कुशल प्रशासक से लेकर सामान्य कर्मचारी तक की सहभागिता सफलता की सिद्धि के लिये आवश्यक है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है। अतरू इन सभी के मध्य सहकारिता, सहयोग और समंजन का होना जरूरी है। प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की सफलता संगठन के कर्मियों तथा अधिकारियों के समन्वय एवं दलीय अभिगम से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- दिशा–निर्देशन :मानव संसाधन (कार्मिक प्रबंधन) में दिशा

निर्देशन का कार्य बहुत ही प्रभावी होता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए यदि समुचित दिशा निर्देशन नहीं मिलता है तो अच्छे नियोजन और संगठन के बावजूद भी कठिनाई होती है। दिशा निर्देशन से ही कार्यान्वयन होता है। इसी की सहायता से अभिकर्मियों को प्रेरणा दी जाती है जिससे उसकी क्षमता का अधिकतम उपयोग प्राप्त किया जाता है और प्रतिष्ठान लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त करता है।

- नियंत्रण करना : मानव संसाधन प्रबंधन कें नियंत्रण बनाए रखने का कार्य अति महत्वपूर्ण होता है। संगठन का नियोजन, उसका प्रारूप और दिशा निर्देशन में समरूपता होनी चाहिए। यह समरूपता उन्हें नियंत्रित करके ही प्राप्त किया जा सकता है। यह नियंत्रण लेखा परीक्षण, प्रशिक्षण आयोजन, मानव संसाधन में नैतिक बल वृद्धि तथा अन्य विधायी उपायों से संगठन में नियंत्रण बनाएं रखने का कार्य हो सकता है।

मानव संसाधन प्रबंधन के क्रियात्मक कार्य

मानव संसाधन के प्रबंधन कार्य का दूसरा भाग उसका क्रियात्मक प्रबंध कार्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यह क्रियात्मक प्रबंधकीय भी अधोलिखित रूप में देखा जा सकता है :—

- रोजगार : मानव संसाधन के प्रबंधन कार्य के क्रियात्मक रूप में रोजगार के अनुरूप मानव संसाधन को प्राप्त करना जिसे कार्य विश्लेषण, मानव संसाधन का नियोजन, भर्ती, चुनाव एवं उनकी गतिशीलता का ध्यान रखते हुए प्रतिष्ठान में मानव संसाधन की सहभागिता स्थिर करना। इस प्रकार कार्य की चुनौतियों के अनुरूप मानव संसाधन को कार्य उत्तरदायित्व सांपैना।
- मानव संसाधन विकास—वर्तमान कार्य एवं भविष्य में कार्यो के लिए मानव संसाधन को विकसित करने हेतु उसके कौशल विकास, ज्ञान, रचनात्मक प्रतिभा, अभिवृत्ति, मूल्य और समर्पण भाव में निरंतर विधायी परिवर्तन लाना आवश्यक है और यह कार्य मानव संसाधन प्रबंधन का ही है। इसी के अन्तर्गत मानव उपलब्धि मूल्यांकन, उसका प्रशिक्षण, प्रबंधकीय विकास, अभिकर्मी के निजी विकास का आयोजन, संगठन के उर्ध्वगामी एवं क्षैतिज आयाम में भविष्य देखना, उसका स्थानान्तरण, प्रोन्नति तथा पदावनति की स्थिति देखना है। इसी की तहत नियोक्ता प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति प्राप्त करने हेतु अक्षम व्यक्ति की छॅटनी भी करता है और संगठन में असंतुलन की स्थिति में संगठनात्मक विकास भी करता है और संगठन में व्यवहारवादी विज्ञानों का प्रयोग करते हुए मानव संसाधन का विकास करता हैं।
- क्षतिपूति—मानव संसाधन के प्रबंधकीय उत्तरदायित्व में क्षतिपूर्ति लाभ देना है। यह वह प्रक्रिया है जिससे पर्याप्त एवं उचित पुरस्कार मानव संसाधन को सुलभ कराया जाता है। इसी के तहत कार्य मूल्यांकन मजदूरी एवं वेतन प्रशासन, पेर्र क धनराशि, बोनस, कैंटीन, आवागमन सुविधा, मनोरंजन सुविधा, मातृत्व कल्याणकारी सुविधायें, प्राविडेंड फंड, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा एवं अनुग्रह धनराशि की सुविधा दी जाती है।
- मानव संबंध —मानव संसाधन प्रबंधकीय कार्य के अंतर्गत ही संगठन के विभिन्न इकाईयों तथा ईकाई विशेष में कार्यरत व्यक्तियों में विधायी अन्तरूसंबंधों का निर्माण करना भी प्रबंधक का ही उत्तरदायित्व है। इस प्रकार एक अभिकर्मी में तथा प्रबंधन में अच्छा संबंध बनाने की दृष्टि से ही तथा श्रम संगठनों एवं प्रबंधकों में परस्पर विश्वास पैदा करने का प्रयास किया जाता है। मानव संसाधन की नीतियाँ, कार्यक्रम, रोजगार, प्रशिक्षण, क्षतिपूर्ति की सुविधा आदि कार्यक्रमों से मानव संसाधन में और प्रबंधन में एक विधायी संबंध बनाने की ही दिशा में कार्य किया जाता है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व विकास, सीखने का कौशल, अर्न्तवैयक्तिक संबंध स्थापन और अन्तः समूह संबंध स्थापन से मानवीय संबंध स्थापन की दिशा में कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त संबंध स्थापन के लिए ही अभिकर्मियों को प्रेरक सेवाएँ तथा उनके नैतिक बल निर्माण की दिशा में कार्य किया जाता है। संप्रेषण कौशल विकास, नेतृत्व विकास शीघ्रता से परिवेदना निवारण, परिवदेना मशीनरी का उपयोग, अनुशासन की कार्यवाही, परामर्श सेवाएँ, आरामदायक कार्य परिस्थितियाँ, कार्य संस्कृति का विकास तथा अन्य सुविधायें दी जाती हैं।
- औद्योगिक संबंध —इसके अन्तर्गत नियुक्त और नियोक्ता के मध्य, सरकार एवं श्रम संघों के मध्य पाये जाने वाले संबंध को ही औद्योगिक संबंध माना जाता है। इसी के तहत भारतीय श्रम बाजार, श्रम संगठनों की भूमिका, सामूहिक सौदेबाजी, औद्योगिक द्वंद, प्रबंधन में श्रमिक की सहभागिता तथा वृत्त की गुणात्मकता का अध्ययन किया जाता है।
- मानव संसाधन प्रबंधन की आधुनिक प्रवृत्ति —मानव संसाधन प्रबंधन की आधुनिक प्रवृत्ति — आज मानव संसाधन एक वृत्तिक अनुशासन के रूप में द्रुत गति से अपने स्वरूप में परिवर्तनकरता हुआ प्रगति के पथ पर है। आज इसके अन्तर्गत कार्य जीवन के गुण, मानव संसाधन की समग्र गुणवत्ता, उसका लेखा, परीक्षण, शोध एवं मानव संसाधन प्रबंधन की आधुनिक तकनीकों का अध्ययन किया जाता है।

मानव संसाधन की प्रमुख विशेषताएँ

- यह मानव संसाधन का प्रबंध है।
- यह एक विभागीय उत्तरदायित्व है जो कार्मिक प्रबंध के अधीन कार्य करता है।
- यह मानव शक्ति का चयन, नियोजन संगठन व नियंत्रण करता है।
- इसका उद्देश्य कर्मियों में सर्वोत्तम फल प्राप्त करना है।
- इससे कर्मचारियों में अधिकतम कार्यक्षमता बढ़ाने का कार्य होता है।
- कर्मचारियों की योग्यता विकास में सहायक है।
- कर्मचारियों में सहकारी विकास भाव पैदा करता है।
- यह मानवीय संबंध सत्यापित कर उन्हें बनाये रखने का प्रयास करता है।
- यह उच्च प्रबंध को महत्त्वपूर्ण सुझाव देता है।
- कार्मिक प्रबंध निश्चित सिद्धान्तों एवं व्यवहारों का पालन करता है।
- यह एक प्रबंध दर्शन है।

मानव संसाधन प्रबंधन के उद्देश्य

मानव संसाधन का उद्देश्य संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। ये लक्ष्य समय काल एव परिवेश से बदलता रहता है। यद्यपि अधिकांश संगठनों का लक्ष्य अभिकर्मियों में विकास एवं प्रतिष्ठान में अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है तथापि आज इसका संगठन, सरकारी नीतियों एवं सामाजिक न्याय तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाने में भी भूमिका का निर्वाह लक्ष्य के तहत स्वीकार किया गया है। कतिपय व्द्विानों में मानव संसाधन प्रबंधन को सामाजिक संगठनात्मक, क्रियात्मक उद्देश्यों तथा वैयक्तिक उद्देश्यों के संदर्भ में भी स्वीकार किया है।

'बिप्रो' में उद्देश्य अधोलिखित रूप में माना गया है :–

1. मनुष्य को संगठन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण सम्पत्ति के रूप में माना है।
2. उच्च मानक एवं समन्वय के साथ व्यक्ति एवं प्रतिष्ठान में संबंध बनाये रखना।
3. अभिकर्मियों के माध्यम से ग्राहक या उपभोक्ता के साथ गहरा संबंध स्थापित करना।
4. मानव संसाधन प्रबंधन में नेतृत्व प्रदान करना तथा उसे बनाएं रखना।

आर0 सी0 डेविस ने प्रबंधन के उद्देश्यों को अधोलिखित दो रूपों में माना हैः–

1. मूल उद्देश्य
2. गौण उद्देश्य

(1) मूल उद्देश्य –

मूल उद्देश्यों के तहत मानव संसाधन विभाग उत्पादन, विक्रय एवं वित्त विभाग के लिए उपयुक्त कर्मचारियों के चयन एवं उनकी नियुक्ति में सहयोग प्रदान करता है। संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऐसे कार्य संगठन का निर्माण करता है जिसमें कार्य की चुनौतियों का मुकाबला करते हुए अपनी संतुष्टि के साथ अधिकतम उत्पादन से सहभागी बनता है। यह अभिकर्मी की प्रेरणा का प्रतिफल है। अतः अभिकर्मियों में विधायी अभिप्रेरणा बनाये रखने के लिये ही उसे मौदिक्र पेर्रणा तथा अमौदिक्र प्रेरणा दी जाती है। यही कारण है कि अभिकर्मियों की मजदूरी, वेतन, भत्ते तथा अंशधारियों के लाभ में वृद्धि की जाती है और साथ ही साथ उनके अच्छें कार्यो के लिए, संगठन की प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहभागिता, सेवाभाव रखने तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए उन्हें सम्मानित किया जाता है।

(1) गौण उद्देश्य –

गौण उद्देश्य का लक्ष्य मूल्य उद्देश्यों की प्राप्ति कम लागत पर कुशलतापूर्वक एवं प्रभावी ढंग से करना है। किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि अभिकर्मियों की कार्यक्षमता में वृद्धि की जाय, कार्य ही पूजा है, का भाव विकसित किया जाय। साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाय तथा समस्त कर्मचारियों में कार्य में दलीय भावना पैदा की जाय। कर्मचारियों में भाई–चारा का भाव विकसित किया जाय। उनके नैतिक बल पर ध्यान दिया जाय तथा प्रतिष्ठान में मानवीय संबंध और अच्छे अनुशासन का वातावरण बनाया जाय तथा मानवीय व्यवहार को प्रभावित करने के लिये उचित अभिप्रेरणा प्रणाली तथा उचित संदेश वाहन प्रक्रिया का प्रतिष्ठान में उपयोग किया जाय।

मानव संसाधन प्रबंधक के गुण

प्रबंधकीय कौशल से अभिप्राय होता है वह गुण, समझ एवं कार्यदक्षता जिससे प्रबंधक अपने उत्तरदायित्व का सहजता से निर्वाह करता है और संगठन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहता है। इस प्रकार इसके अन्तर्गत प्रबंधक की अधोलिखित योग्यताएँ मानी जाती है यथा :–

- पर्याप्त शैक्षिक योग्यता।
- श्रम संबंधों की जानकारी।

- व्यवसाय की नीतियों एवं प्रबंध की समस्याओं का ज्ञान।
- समाज विज्ञानों का ज्ञान
- कर्मचारियों के प्रति विश्वसनीय व्यवहार।
- सृजनात्मक संबंध
- स्वस्थ व्यक्तित्व
- सद्चरित्र
- वाक् चातुर्य
- सेवाभाव
- उदार विचार वाला
- आशावादी होना।

मानव संसाधन प्रबंधक उपरोक्त गुणों के कारण ही अपने प्रबंध कौशल से अपनी इस भूमिकाओं के निर्वाह में सफल होता है :–

(1) परामर्शदाता के रूप में – समस्याग्रस्त अभिकर्मियों को प्रसन्न और संतुष्ट रखने के लिए मानव संसाधन प्रबंधक बतौर परामर्शदाता उसे सलाह देता है और अनुकूल परामर्श से उसे समस्यामुक्त होने की युक्ति में सहायक होता है।

(2) मध्यस्थ के रूप में –मानव संसाधन प्रबंधक अभिकर्मियों – सेवायोजक तथा उच्च प्रबंधकों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में भी भूमिका का निर्वाह करता है। अभिकर्मियों की माँगों, आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के प्रति ऊपर के अधिकारियों तक पहुँचाकर उसके संदर्भ में नीति निर्माण एवं निर्णय लेने में उच्च पदस्थ अधिकारियों का जहाँ सहयोग करता है वहीं दूसरी ओर प्रशासन की अपेक्षाओं और माँगों के प्रति कर्मचारियों को जानकारी देकर संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उन्हें भी प्रेरणा प्रदान करता है। इस प्रकार वह इन दोनों के बीच सेतु का काम करता है।

(3) विशेषज्ञ के रूप में –मानव संसाधन प्रबंधक किसी भी प्रतिष्ठान में एक विशेषज्ञ के रूप में भी अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। यह वह प्रबंधक है जो अपने विशिष्ट ज्ञान के ही बदौलत समग्र संगठन के लिए सर्वाधिक महत्व रखता है। समग्र संगठन की विभिन्न इकाइयों में समन्वय सहयोग एवं भ्रातृत्व भाव पैदा करने और नैतिक बल बनाये रखने में प्रेरणा प्रदान करता है। इतना ही नहीं वह सहायता स्त्रोत, परिवर्तन कारक तथा एक नियंत्रक के रूप में विशेषज्ञ जैसी सेवाएँ देता है।

मानव संसाधन प्रबंधक के उत्तरदायित्व के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने भिन्न मत व्यक्त किए है किन्तु प्रसिद्ध दो विद्वानों के विचार सर्वाधिक मान्य स्वीकार किए गये है जिनके विचार अधोलिखित रूप में है :–

ब्राउन के अनुसार –

- कार्मिक नीतियों, पद्धतियों और कार्यक्रमों को निर्धारित करने और उनके कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करना।
- प्रबंधकीय क्षेत्र में मानवशक्ति की आवश्यकता को ज्ञात करना तथा उनका नियोजन करना।
- मानव संसाधन से सम्बन्धित समस्त समस्याओं के समाधान एवं निवारण में अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों को सलाह देना।
- प्रशासन संबंधी कार्यक्रमों का मूल्यांकन तथा सत्यापन करते रहना।
- श्रमिकों की मजदूरी/वेतन के औचित्य पर विचार करना तथा आवश्यक परामर्श सेवायोजक एवं उच्च पदाधिकारी को देना।
- रोजगार की स्थितियों का भी आकलन करना तथा ऐच्छिक सेवानिवृत्ति पर भी ध्यान देना।
- संगठन की पूर्ण जानकारी रखना और आवश्यकतानुसार सहायता करना।
- विभाग के विकास हेतु शोध कार्य भी करते रहना चाहिए ताकि प्राप्त नये ज्ञान के आलोक में संगठन को सुदृढ़ किया जा सके।

जार्ज डव्ल्यू हेनन के अनुसार –मानव संसाधन विकास प्रबंधक के उत्तरदायित्व अधोलिखित रूप में माना है :–

- कार्य के अनुरूप कुशल अभिकर्मियों को संगठन हेतु नियुक्त करना।
- नियुक्ति में कार्य की चुनौतियों के अनुरूपं सक्षम यक्तियों को प्राप्त करना।
- अभिकर्मियों हेतु प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना।
- वेतन प्रशासन पर ध्यान देना।
- भौतिक एवं वित्तीय साधनों के प्रति ध्यान देना।
- सलाहकार के रूप में दायित्व।
- सुरक्षा संबंधी दायित्व मानना।
- लागत–व्यय नियंत्रण पर दृष्टि रखना।
- विभागीय आलेखन ताकि सभी मानव संसाधन संबंधी सूचना दी जा सके और उसके आलोक में नये कार्यक्रमों का आयोजन हो सके। ■

कैसे संगठन कर्मचारियों को कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकते हैं

आरती गुप्ता
प्रबन्धक (वित्त), निगमित कार्यालय

आज के तेजी से भागते परिवेश में, व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए एक सभ्य कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। कार्य–जीवन संतुलन कार्यदिवस, गृह जीवन, और परिवार के सदस्यों और अन्य प्रियजनों के साथ बातचीत के कर्तव्यों को निभाते हुए आत्म–देखभाल का एक महत्वपूर्ण पहलू बनता जा रहा है। जैसा कि वैश्विक कार्यबल नए सामान्य में समायोजित होता है, उन्हें कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखने के लिए कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देना चाहिए।

कार्य संतुलन

एक स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन का मतलब अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग चीजें हैं। हालांकि कार्य–जीवन संतुलन कोई नई धारणा नहीं है, यह समय के साथ और अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। यह काम और आराम के बीच समान रूप से समय बांटने की बात नहीं है; यह किसी के जीवन के दोनों हिस्सों में पूर्ण महसूस करने के बारे में है। एक अच्छे कार्य–जीवन संतुलन के कुछ उदाहरण दोस्तों और शौक के लिए समय निकालना, पर्याप्त नींद लेना और अच्छी तरह से भोजन करना, काम की समय सीमा को पूरा करना है। साथ ही घर में रहते हुए काम की चिंता नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार, संगठन तेजी से इस स्थिति को समायोजित करने के लिए ऐसे नियम बना रहे हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि पेशेवरों के पास पर्याप्त स्वतंत्रता, संसाधन और उनके जीवन के विभिन्न तत्वों को संतुलित करने के अवसर हैं।

उपाय जो संगठन कार्य–जीवन संतुलन सुनिश्चित करने के लिए ले सकते हैं

कर्मचारी अनुनय को समझें व्यापार की जरूरतें आम तौर पर संगठनात्मक निर्णय लेने को प्रेरित करती हैं। ऐसा कार्यस्थल बनाने के लिए जहां कर्मचारी फल–फूल सकें, कर्मचारियों की भावनाओं को सुनना और उनके अनुसार कार्य करना आवश्यक है। महामारी के दौरान, कर्मचारियों की भावनाओं पर काम करने से कई संगठनों को लाभ हुआ। मासिक सर्वेक्षण, आमने–सामने की चर्चा, और वेबिनार यह समझने के कुछ तरीके हैं कि कर्मचारियों पर क्या गुज़र रही होगी। हालाँकि, यह एक बार की घटना नहीं है। पसंद का कार्यस्थल बनने के लिए, टीम के भावनात्मक स्वास्थ्य की नियमित आधार पर निगरानी की जानी चाहिए। यह गहरे संबंधों को बढ़ावा देगा और लोगों को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा , जो इस अशांत समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

कर्मचारियों पर विश्वास करके और जब तक वे मील के पत्थर और समयसीमा का पालन कर रहे हैं, तब तक कर्मचारियों पर भरोसा करके और उन्हें समय और शर्तों पर मूल्य और उत्पादन प्रदान करने की अनुमति देकर, संगठन एक सक्रिय कार्य–जीवन संतुलन को बढ़ावा दे सकते हैं। आपसी विश्वास की यह संस्कृति कर्मचारियों को महत्वपूर्ण महसूस कराती है और उन्हें अपनी टीमों के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित करती है।

कार्य संस्कृति को बदलने के लिए नीतियां

महामारी के दौरान, कई संगठनों ने वर्क–फ्रॉम–होम को समायोजित करने के लिए अपनी नीतियों में बदलाव किया। कार्य–जीवन संतुलन को बढ़ावा देने वाली नीतियों को अपनाना भी महत्वपूर्ण है। इनमें लचीली पारियां, लॉग–इन समय के बजाय काम की गुणवत्ता को पुरस्कृत करना और एक छुट्टी नीति शामिल हो सकती है जो कर्मचारियों को समय निकालने के लिए प्रोत्साहित करती है। कर्मचारियों को कार्यबल में लौटने में मदद करने के लिए संगठन सक्रिय पहल कर रहे हैं, जैसे कि युवा प्रतिभा–केंद्रित भर्ती अभियान, सही किक–स्टार्ट के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, और एक उचित वातावरण की खेती करना। एक उचित कार्यस्थल अवसर प्रदान करने, प्रदर्शन के आधार पर उत्कृष्टता को पहचानने और अज्ञेय वेतन प्रणाली स्थापित करने पर बनाया गया है। यह न केवल प्रतिभाशाली लोगों को अपने काम में उत्कृष्टता हासिल करने में मदद करेगा बल्कि प्रशंसा और

निष्पक्षता की संस्कृति को भी प्रोत्साहित करेगा।

अवकाश के समय को बढ़ावा दें

बदलते परिदृश्य के साथ, हर फर्म का मानना है कि छुट्टी के समय को केवल कर्मचारी बोनस के बजाय उत्पादकता बढ़ाने के तरीके के रूप में देखा जाना चाहिए। निरंतर दबाव के साथ, कर्मचारी बर्नआउट का जोखिम उठाते हैं। नीतिगत परिवर्तनों के भाग के रूप में संगठन अब प्रति वर्ष सवेतन अवकाश लागू कर रहे हैं। यहां तक कि सबसे समर्पित कर्मचारी को भी अपनी नौकरी से आराम करने और नौकरी के तनाव से मुक्त होने के लिए समय की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, काम से कुछ समय की छुट्टी लेने के बाद, लोग अधिक प्रेरित, अधिक उत्पादक और नए स्तर के समर्पण के साथ लौटते हैं।

संगठन का नेतृत्व

आज कई फर्मों में लचीली कामकाजी नीतियां हैं। व्यक्तियों को तब अधिक आराम मिलता है जब उन्हें कार्यस्थल पर होने की चिंता नहीं होती है जब यह बिल्कुल आवश्यक नहीं होता है। वे कर्मचारियों को व्यस्त और खुश रखने के लिए एक उत्साहित कार्यालय वातावरण भी सुनिश्चित कर रहे हैं। ये सभी उपाय संगठनों को काम करने के लिए बेहतरीन स्थान होने के लिए मान्यता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

वैयक्तिकृत कार्य अनुभव

कार्य–जीवन के बेहतर संतुलन के लिए काम के घंटों और प्रति कर्मचारी की अपेक्षाओं को पूरा करना एक शक्तिशाली योगदान है। कुछ लोग बाद में काम शुरू करना और बाद में खत्म करना पसंद करते हैं, अन्य लोग लंबे समय तक काम करने के इच्छुक हो सकते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग पार्ट–टाइम काम करना चाहते हैं, लेकिन इस बारे में अनिश्चित प्रतीत होते हैं कि इस बारे में उनकी कंपनी से कैसे संपर्क किया जाए। सर्वश्रेष्ठ कर्मचारियों को आकर्षित करने और बनाए रखने वाली कंपनियां समझती हैं कि प्रत्येक कर्मचारी अद्वितीय है, और वे कार्य अनुभव और कार्य योजना बनाते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए वैयक्तिकृत हो सकते हैं।

जब आधुनिक युग में कर्मचारियों के लिए बेहतर कार्य–जीवन संतुलन विकसित करने की बात आती है, तो कोई एक आकार–फिट–सभी समाधान नहीं होगा। व्यवसायों को प्रत्येक व्यक्तिगत कर्मचारी के लिए अपनी रणनीति को वैयक्तिकृत करना चाहिए। व्यवसाय के लिए बेहतर कार्य–जीवन संतुलन के लाभ बहुत अधिक हैं। श्रमिक न केवल खुश हैं, बल्कि वे अधिक उत्पादक भी बन रहे हैं। संक्षेप में, कंपनी के भीतर उपायों को शामिल करने से कार्य–जीवन संतुलन सुनिश्चित होगा और कंपनी आगे बढ़ेगी। ■

राष्ट्र की उन्नति में हिन्दी भाषा का योगदान

भाषा प्रभाग

अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा),
निगमित कार्यालय

हम कितनी भी ऊंचाई पर पहुंच जाएं परंतु हमें अपनी मुख्यधारा से जुड़ा रहना जरूरी होता है। इसी तरह किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए वहां की भाषाओं से ओतप्रोत होना भी जरूरी होता है। राष्ट्रभाषा हिन्दी इसी संदर्भ में हमें एक नए पद की ओर अग्रसर कर रही है। चाहे वह आजादी से पहले का समय हो या आजादी के बाद का समय। इसीलिए हमें हिन्दी भाषा का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ता है। हमारी हिन्दी भाषा भी कड़े संघर्ष के बाद वर्तमान स्थिति तक पहुंची है।

हिंदी भारत की स्वयं सिद्ध राष्ट्रभाषा है। हिन्दी भाषा बोलने वालों का प्रतिशत 65 से भी अधिक है। हमारी हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि हमारे देश में रहने वाले भारतीय लोग किसी देश के रहने वाले ही क्यों न हो ? चाहे उनकी कोई भी भाषा मातृभाषा हो, फिर भी वह हिन्दी भाषा समझते हैं किसी न किसी रूप में हिन्दी भाषा का प्रयोग कर ही लेते हैं। हिन्दी बहुत सहज एवं सरल भाषा है। हम हिन्दी भाषा का प्रयोग किसी न किसी रूप में कर ही लेते हैं। हम अपने विद्यालय में या अपने मित्रों के साथ खेल के मैदान में हिन्दी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। जब से मानव अस्तित्व में आया है तब से ही हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहा है। चाहे वह ध्वनि के रूप में हो या सांकेतिक रूप में या अन्य किसी भी रूप में हिन्दी भाषा हमारे लिए बोलचाल का माध्यम होती है। इसके द्वारा हम अपने विचार को व्यक्त कर सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं, दूसरे लोगों के विचार को सुन सकते हैं क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का निर्माण मनुष्य के सहयोग से होता है। समाज में होते हुए भी मानव अपनी इच्छाओं या विचारों का आदान प्रदान करता है। विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है या फिर हम यह कह सकते हैं कि जिन धर्मों द्वारा मनुष्य आसपास से विचार विनिमय करता है, उसे भाषा कहते हैं। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वार्थ ध्वनियों का समूह जो हमारी अभिव्यक्ति का साधन हो वह भाषा कहलाता है। भाषा के साथ एक महत्वपूर्ण बात यह है कि केवल भाषा ध्वनि से व्यक्त नहीं की जा सकती संकेत और हावभाव से भी व्यक्त की जा सकती है। जैसे बोलते समय चेहरे की आकृति में परिवर्तन होना हस्त की उंगलियां हिलाना इस प्रकार भाषा राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता और विचार विकास के रूप में महत्वपूर्ण योग्यता निभाती है। यदि राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो भाषा का होना जरूरी है और अब तक हम अपने देश में हिन्दी भाषा का प्रयोग करते आ रहे हैं। इससे धार्मिक और सांस्कृतिक एकता बढ़ सकती है। यह स्वतंत्र राष्ट्र के लिए आवश्यक है। देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन–सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। एक भाषा के रूप में हिन्दी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक ,संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिन्दी का एक विशेष स्थान है। देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार

किया जा सके। राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। 14 सिंतबर, 2017 को राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने देश भर के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों के प्रमुखों को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, " हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है। हिन्दी दिवस के अवसर पर सरकारी विभागों में हिन्दी की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। साथ ही हिन्दी प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन किया जाता है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं। सरकार द्वारा हिन्दी में अच्छे कार्य के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिन्दी में लेखन के लिए ''राजभाषा गौरव पुरस्कार'' का प्रावधान है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिन्दी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रदान करती है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिन्दी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है। देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिन्दी सम्मेलन'' और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिन्दी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिन्दी शब्दावली भी तैयार की है।

राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें , इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण हिन्दी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपनी बोलचाल की भाषा में भी हिन्दी का ही उपयोग करें। हिन्दी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। धर्म–समाज सुधार की प्रायः सभी संस्थाओं ने हिन्दी के महत्व को भाँपा और हिन्दी की हिमायत की। ब्रह्म समाज (1828 ई.) के संस्थापक राजा राममोहन राय ने कहा, इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है। ब्रह्मसमाजी केशव चंद्र सेन ने 1875 ई. में एक लेख लिखा, भारतीय एकता कैसे हो ? जिसमें उन्होंने लिखा 'सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार। अभी जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिन्दी अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बन जाए तो यह काम सहज ही और शीघ्र ही सम्पन्न हो सकता है। एक अन्य ब्रह्मसमाजी नवीन चंद्र राय ने पंजाब में हिन्दी के विकास के लिए स्तुत्य योगदान दिया। आर्य समाज (1875 ई.) के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती गुजराती भाषी थे एवं गुजराती व संस्कृत के अच्छे जानकार थे। हिन्दी का उन्हें सिर्फ कामचलाऊ ज्ञान था, पर अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा देश की एकता को मजबूत करने के लिए उन्होंने अपना सारा धार्मिक साहित्य हिन्दी में ही लिखा। उनका कहना था कि हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। वे इस 'आर्यभाषा 'को सर्वात्मना देशोन्नति का मुख्य आधार मानते थे। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। वे कहते थे, 'मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँगे। अरविन्द दर्शन के प्रणेता अरविन्द घोष की सलाह थी कि 'लोग अपनी–अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें।' 1875ई की संचालिका एनीबेसेंट ने कहा था, ''भारतवर्ष के भिन्न–भिन्न भागों में जो अनेक देशी भाषाएँ बोली जाती हैं, उनमें एक भाषा ऐसी है जिसमें शेष सभी

भाषाओं की अपेक्षा एक भारी विशेषता है, वह यह कि उसका प्रचार सबसे अधिक है। वह भाषा हिंदी है। हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मिल सकते हैं। भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। हिन्दी को यह महत्व इसलिए नहीं दिया गया था कि वह सारी भारतीय भाषाओं में ऊँची है, बल्कि उसे 'राष्ट्रभाषा' इसलिए कहा और समझा जाता है कि हिन्दी को जानने, समझने और बोलने वाले देश के कोने–कोने में फैले हुए हैं। ये लोग चाहे हिन्दी न जानते हों, व्याकरण को भूला करते हों या अशुद्ध हिन्दी बोलते हों परंतु बोलते हिन्दी ही हैं और उसी में अपने भाव व्यक्त करते एवं दूसरों की बात समझते हैं। वास्तव में हिन्दी की यह प्रकृति ही देश की एकता की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल हिन्दुओं या कुछ मुट्ठी भर लोगों की भाषा नहीं है वह तो देश के कोटि–कोटि कंठों की पुकार और उनका हृदयहार है। हिन्दी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदारता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिन्दी में ही है। चाहे सब लोग हिन्दी न जानते हों ,लेकिन फिर भी इसके द्वारा वे अपना काम चला लेते हैं और उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती। भारत की बहुभाषिकता के प्रश्न को उठाकर जो लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण स्थान पर अधिष्ठित करने में रुकावट डाल रहें हैं, वे यह कैसे भूल जाते हैं कि आज विश्व के सर्वाधिक शक्ति संपन्न देश रूस ने इस समस्या का किस प्रकार समाधान किया है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि सोवियत–संघ में यद्यपि 66 भाषाएँ बोली तथा लिखी जाती हैं, किंतु फिर भी वहाँ की राष्ट्रभाषा रूसी ही है। सोवियत संघ की मंगोल और तुर्की भाषाओं के शब्दों का रूसी भाषा से कोई संबंध नहीं है। इसके विपरित यहाँ की दक्षिण की भाषाओं के प्रायः 60 प्रतिशत शब्द मिल जाते हैं। तमिल को हम अपवाद के रूप में रख सकते हैं, किंतु उसमें भी कुछ शब्द तो ऐसे मिल जी जाते हैं, जिन्हें भारत की दूसरी भाषाओं के बोलने वाले सरलता से समझ लेते हैं। हिंदी शब्द, जो कि हिन्दुस्तान में बोली जाती है। आज देश में जितनी भी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, उन सबकी जननी हिन्दी है। जिस भाषा को हम अपनी राष्ट्रीय भाषा कहते हैं, आज उसका हाल भी संस्कृत की तरह हो गया है। जिस तरफ देखो उस तरफ अंग्रेजी से हिन्दी और समस्त भारतीय भाषाओं को दबाया जा रहा है। देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखनें में हिन्दी का अहम योगदान है। महात्मा गांधी हिन्दी भाषी नहीं थे लेकिन वे जानते थे कि हिन्दी ही देश की संपर्क भाषा बनने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। उन्हीं की प्रेरणा से राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का गठन किया था। देशभर में हिन्दी पढ़ना गौरव की बात मानी जाती थी। ■

सामाजिक समरसता के संदर्भ में संत कबीर

डॉ0 पुष्पा रानी

(डी.लिट.) प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

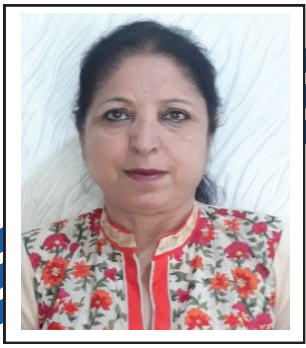

भक्तिकाल के कवियों में सबसे विलक्षण और विद्रोही व्यक्तित्व कबीरदास का रहा है। कबीर साहित्य के विद्वान डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ है महिमा में यह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वन्दी जानता है गोस्वामी तुलसीदास।

एक ओर घर में कपड़ा बुनकर जीवन निर्वाह और दूसरी ओर समाज की तमाम रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कुरीतियों पर करारी चोट। ये कबीर के व्यक्तित्व के दो ऐसे ध्रुवांत हैं, जिनके बीच उनका साहित्य सहजभाव से फैसा हुआ है ये भक्तिकाल की ज्ञानश्रायी शाखा के प्रवर्तक माने जाते है।

कबीरदास उस काल के प्रसिद्ध उदार वैष्णवाचार्य स्वामी रामानंद जी को अपना गुरू बनाया। यद्यपि कि रामानंद उन्हें अपना शिष्य नहीं बनाना चाहते थे, उन्हीं सीढ़ियों पर कबीर लेट गए। अंधेरे में स्वामी रामानंद जी का पांव उनके शरीर पर पड़ा तो उचानक घबराकर किंवन्ती है कि रामानंद जी प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में गंगा स्नान करने के लिए जाते थे, जिन सीढ़ियों से उतरकर वे गंगा स्नान करते थे। उन्हीं सीढ़ियों पर रामानंद लेट गए। अंधेरे में स्वामी रामानंद जी का पांव उनके शरीर पर पड़ा तो अचानक घबराकर रामानंद जी के मुखारविन्द से राम! राम! शब्द निकाला कबीर ने कहा मुझे आपसे रामनाम की दीक्षा मिल गई। आप मेरे गुरू हो गए। अंततः रामानंद जी ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया।

प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर सर्वाधि अनपढ़ कवि थे, क्योंकि स्वयं अपने बारे में उन्हें कहा है कि 'मसि कागद छुय्यो नी, कलम गहि नहीं हाथ'। ऐसे स्थिति में जाहिर है कि कबीर ने स्वयं कुछ नहीं लिखा होगा। उनकी वाणियाँ उनके शिष्यों द्वारा ही लिपिबद्ध की गई होगी। जाहिर है कि उनके प्रमुख शिष्य धर्मदास ने सबसे पहले उनकी वाणियाँका संग्रह बीजक नाम से तैयार किया था। इसके तीन भाग है– साखी–सबद–रमैनी। साखी साक्ष्य का तद्भव रूप है। जिसका अर्थ प्रमाण या सबूत होता है। साखी दोहों का कहते हैं। प्रमाणिकता के विचार से बीजक में साखियों का स्थान सबसे ऊँचा है। साखी आंखिन ज्ञान की।

इसके बाद शब्दों का भी महत्व है। सबद या शब्द गाए जाने गेय पद हैं। उनमें प्रेम और विरह का बड़ा गंभीर प्रदर्शित किया गया है। तक काव्य पक्ष का संबंध है, ये साखियों को भी पीछे जाते हैं। रमैणी वर्णानुक्रम से लिया चौपाई और दोहे का मिश्रित काव्यरूप है। इसकी शैली तुलसी कृत रामायण की तरह है, इसलिए इसका नाम भी रामायनी या रमैनी है। रमैनियों में तेज की मात्रा बहुत कम हो गई है, जो साखियों और कुछ अंशों में शब्दों का मुख्य आकर्षण है।

कबीर मध्ययुग के सबसे बुद्धिवादी संत थे। जिस काल में उनका जन्म हुआ वह काल नाना प्रकार की सामाजिक और राजनीतिक विषमताओं से आक्रान्त थे। उस युग में मनुष्य की मर्यादा नष्ट हो गई थी और समाज तरह–तरह की रूढ़ियों और अंधविश्वासों से जकड़ा हुआ था। लोग अपनी बुराई भूलकर, दूसरों की बुराई ढूँढ़ने, घृणित आलोचना प्रत्यालोचना करने में बेहतर रस ले रहे थे। धर्म के नाम पर सिर फुडौल, साधारण सी बात हो गई थी। ऐसे पतनोन्मुख समय में जन्म लेकर कबीर ने दृढ़ कंठ से मानवता की एकता का संदेश सुनाया। उन्होंने उन तमाम मान्यताओं और विचार सारणियों पर की, जो मनुष्य और मनुष्य के बीच दीवार बनकर खड़ी थी। उन्होंने तथा कथित बड़े और सत्ताधारी लोगों की आंखों में ऊंगली डालकर दिखलाया कि जिस इमारत की ऊपरी मंजिल पर सुख की नींद वे सो रहे है।, उसकी नींव कितनी कच्ची और कमजोर है। ऊँच–नीच के भेदभाव पर कबीर ने तिलमिला देने वाली भाषा पर प्रहार किया है। एक ओर मूर्ति **पूजक हिन्दुओं को फटकारते हुए कहा है–**

''पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजुं पहार ।

ताते यह चक्की भली, पीस खाए संसार।।''

दूसरी ओर दुराग्रही मुसलमान सामाजियों की भी खबर ली है–

''काकर पाथर जोरि कै, मस्जिद लई बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।''

इसी तरह ब्रह्मणों और तुर्कों के कुलाभिमान और अहमन्यता पर भी उन्होंने दहकती हुई चिंगारी रख दी–

''जो तू बाभन बाभनि जाय, और बाट तें काहे न आया।

जो तू तुरूक तुरकिनी जाया, पेटे काहे न सुनत कराया।''

हिन्दूओं और मुसलमानों दोनों धर्मावलम्बियों के बाह्याडम्बरों पर कबीर ने करारी चोट की है। उन्होंने किसी का पक्ष नहीं किया, अपितु अपनी कविता में समाज की बुराइयों का याथर्थ अंकन किया है।

हिन्दुओं और मुसलमान दोनों को ललकारते हुए उन्होंने कहा–

''अरे इन दोउन राह न पाई। हिन्दू अपनी करै बड़ाई,

गागर छुअन न देई। वेश्या के पापन तर सोवे

यह देखो हिन्दू आई। मुसलमान के पीर औलिया

मुर्गा मुर्गी खाई। अरे दोउन राह न पाई।''2

माला फेरने वाले नकल साधु संतों पर प्रहार करते हुए उन्होंने मन रूपी माला फेरने की सीख समाज को दी है–

''माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।

मनवा तो चहू दिशी फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।''

माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।

करका मनका डारि दे, मनका मनका फेर।।''

कबीर की कविता की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सामाजिक समरसता की है। कबीर की सबसे बड़ी सामाजिक चेतना मानव मात्र को समता का पाठ पढ़ाना है। उन्होंने घोषित किया है कि भगवान हमसे कहीं दूर नहीं है, वह तो हमारे हृदय में निवास करने वाला है।

''कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूंढै बन माहिं।

वैसे घट घट राम है, दुनिया देखत नाहिं।।''

कबीर ने हिन्दू और मुसलमानों को चुनौती देते हुए कहा है कि ईश्वर हर प्राणी के साँस में विद्यमान है–

''मोको कहाँ तू ढूँढै बन्दे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना मैं काबा कैलास में ।

खोज होवै तुरंत मिलि है, पलभर की तलाश में।

कहै कबीर सुना भई साधो, हर साँसों की साँस में।''3

कबीर के अनुसार इन अंतर्निष्ठ भगवान को पाने के लिए न तो जंगल जाने की जरूरत है, न जटा बढ़ाने की, न तीर्थों में भटकने की, इसकी प्राप्ति के लिए शंख, घंटी और रोजा नमाज भी व्यर्थ है, झूठे है, वे जो घर–घर के लोगों को मंत्र देते हैं ढोंगी है वो, जो भोली जनता को मुरीद बनाते हैं और उसे कब्र की पूजा करने और बड़े–बड़े चढ़ावे का उपदेश करते हैं–

''माला पहिरै, टोपी पहिरै, छापा तिलक अनुमाना।

साखी सबदी गावत भूले, आतम खबर न जाना।।

घर घर मंत्र जो देत फिरत है, माया के अभिमाना।

गुरूवा सहित शिष्य सब बूड़े, अंत काल पछिताना।।

बहु तक देखे पीर औलिया, पढ़ किताब कुराना।

करै मुरीद कबर बतलावै, उनहूँ खुदा न जाना।।''

ईश्वर की प्राप्ति केवल आचरण की शुद्धि और अंतस के सहज प्रेम के बल पर हो सकती है। प्रेम को कबीर ईश्वर प्राप्ति की सबसे सोपान मानते हैं। प्रेम की महत्ता कबीर से अधिक उच्छावासित कंठ से मध्ययुग के किसी भी अन्य संत अथवा भक्त कवि ने घोषित नहीं की है। यहाँ तक कि इस प्रेम से ढाई अक्षरों पर सारे शास्त्र ज्ञान न्यौछावर कर देते हैं–

''पोथी पढ़ि पढ़ि जुग मुआ, पंडित भया न कोय

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।'

जिस युग में विद्या ददाति विनयम् का आदर्श तृप्त हो गया और शास्त्र ज्ञान मनुष्यों में झूठा अभिमान भरकर उन्हें अपने की भाइयों को नीच समझने की प्रेरणा दे रहा है, उस युग का विचारक उसका ऐसा अवमूल्यन करने के लिए बाध्य था। इससे सदियों से पद दलित और उपेक्षित लोगों में एक नया आत्मविश्वास जागा और उन्होंने मनुष्य की गरिमा को जाना, दूसरी ओर यहीं पर उस सामाजिक संस्कृति की नींव पड़ी जिसका चरम विकास हमें वर्तमान युग में देखने को मिलता है। यदि कबीर जैसे कवियों ने जाति और धर्म के भेदों को मिथ्या कहकर प्रेम का उदात्त संदेश न दिया, तो पता नहीं और कितने दिनों तक हिन्दूओं और मुसलमानों की तलवारें एक दूसरे के खून से अपनी प्यास बुझाती रहती।

निष्कर्षतः कबीर अपने युग के बड़े ही तेजस्वी, दबंग और स्पष्टवक्ता थे। उन्होंने बड़े–बड़े मोल चुकाकर भी सच्चाई का दामन कभी पलभर के लिए नहीं छोड़ा। कूड़े के ढ़ेर पर उगने वाले कुकुर मुत्ते

की भांति समाज के निम्न दलित और उपेक्षित वर्ग में जन्म लेकर भी उन्होनें वहीं से शक्ति ग्रहण की और समाज के वैसम्य और अन्यायों को दूर करने में उस शक्ति का उपयोग किया। उनका काव्य मनुष्य में उदम्य आत्मविश्वास अनुपम बलिदान और विश्व बंधुत्व की भावना को जगाने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रामराज्य, आचार्य विनोबा भावे सर्वोदय और बाबा भीमराव आम्बेडकर की सामाजिक समरसता की वैचारिकी का आधार कबीर की सामाजिक चेतना रही है। इस संदर्भ में कबीर इनके प्रेरणा पुरूष रहे हैं। बाजार के बीचों–बीच खड़े होकर सबकी खैर मानने वाले कबीर स्वयं बेखबर रहे–

''कबीरा खड़ा बाजार में सबकी माँगे खैर।

न काहू से दोस्ती, न काहू सै बैर।।''

कबीर की सामाजिक समरसता, हिन्दू–मुस्लिम एकता की चेतना और भावना को देखकर मध्यकाल के परमसन्त दादूदयाल ने कबीर साहब की प्रशंसा करते हुए कहा कि जनहित के लिए अपना सब कुछ अर्पित करने वाले के पीछे स्वयं भगवान खड़े रहते है–

''अपना मस्तक काटि कै, हुआ वीर कबीर ।

पीछे–पीछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर।।'' ■

मेरा प्यारा हिन्दी

विनोद कुमार एम.एस.
लेखा सहायक (विशेष ग्रेड), उद्योगमंडल यूनिट

सोचता रहता था मैंने
ये हिन्दी क्यों सीखें?
नफरत करता था इन अक्षरों से
दिमाग साथ न रहता कई बार
रट रट कर परीक्षा पास की
पर कभी न समझ पाया तुझे
सीमित था मेरा ज्ञान हमेशा
कुओं में जीता मेढक जैसा
पता नहीं मुझे कब से प्यार हुई
ये सुंदर हिन्दी भाषा से
नई दुनिया दिखाई मुझे मेरी पिया
जिंदगी से जुड गई अब मेरी हिन्दी
अचरच नहीं मुझे यह सोचकर कि हिन्दी
तुझे लोग इतना प्यार क्यों करते है?

मेरा सुख दुख सभी सदा तुझे बताया
तूने उसे बदली, सुंदर सी कविता एवं कहानी में।
मैं कभी न छोडेंगे तुझे मेरी पिया
पंडित नहीं हूं मैं तेरे सामने
बस वादा करता हूँ मैं मेरी पिया
नहीं छोड़ूंगा, आखरी दम तक साथ तेरी
ज्यादा उम्मीद मत न रखें मुझसे पिया
मेरे सीमित जिंदगी में तुझे खुशी बनाऊंगा
ये दिल में जैसे मेरी मातृभाषा हो
मेरी पिया हिन्दी, उसी तरह मुझे भी
पूरा विश्व मानेंगे तेरा महत्व सदा
ये एक प्रेमी का कल्पना न समझे
कभी न छोडें मुझे पिया
पंडित नहीं मैं तेरे सामने।

मुंशी प्रेमचंद

धनपत राय श्रीवास्तव, जो हिन्दी व उर्दू के लेखक प्रेमचंद के नाम से प्रसिद्ध हुए, अपने समय से लेकर आज तक सर्वाधिक पढ़े जाने वाले एकमात्र रचनाकार हैं। ग्रामीण भारतीय समाज की कुरीतियों व विडंबनाओं पर अधिकाधिक लिखते हुए प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को सामयिकता और सामाजिकता के सहज धरातल पर प्रतिष्ठित किया।

31 जुलाई, 1880 को लमही, वाराणसी में जन्में प्रेमचंद का सारा जीवन संघर्ष का पर्याय रहा। उन्होंने धनाभाव से जूझते हुए बी.ए.किया। अपने स्वतंत्र विचारों के कारण सरकारी नौकरी छोड़ी। संघर्षों में फंसे रहने पर भी उत्कृष्ट साहित्य रचा। उनकी अधिकांश रचनाएं'' जमाना' पत्र में प्रकाशित हुई। अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त कर लिए गए उर्दू कहानी संग्रह 'सोज–ए–वतन' में प्रेमचंद ने अपने राष्ट्रीय विचारों की अभिव्यक्ति की, तो 'हंस', 'मर्यादा' और 'जागरण' के संपादक रूप में उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भी योगदान दिया।

मानसरोवर (कहानी संग्रह), गबन, रंगभूमि, गोदान, कफन, निर्मला आदि उनकी विशिष्ट कृतियां हैं। 8 अक्टूबर, 1936 को 56 वर्ष की आयु में सैकड़ों कालजये–रचनाओं के रचयिता, प्रेमचंद का निधन हो गया। प्रेमचंद द्वारा रचित एक अमर कथा प्रस्तुत है:–

बड़े भाई साहब

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया था; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भावना की बुनियाद खूब मज़बूत डालना चाहते थे जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी–कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख़्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने!

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तंबीह और निगरानी का पूरा जन्मसिद्ध अधिकार था। और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को क़ानून समझूँ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग़ को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी–कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस–बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार–बार सुंदर अक्षर में नक़ल करते। कभी ऐसी शब्द–रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य! मसलन एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी 'स्पेशल, अमीना, भाइयों–भाइयों, दर–असल, भाई–भाई, राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक' इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ; लेकिन असफल रहा और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नवीं जमात में थे, मैं पाँचवी में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौक़ा पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी काग़ज़ की तितलियाँ उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया तो पूछना ही क्या कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे–पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं। लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल होता 'कहाँ थे'? हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी–भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी–खेल नहीं है कि जो चाहे पढ़ ले, नहीं, ऐरा–गैरा नत्थू–खैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात–दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विधा आती है। और आती क्या है, हाँ, कहने को आ जाती है। बड़े–बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक़ नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, तुम अपनी आँखों देखते हो, अगर नहीं देखते, जो यह तुम्हारी आँखों का क़सूर है, तुम्हारी बुद्धि का क़सूर है। इतने मेले–तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है, रोज़ ही क्रिकेट और हाकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ, उस पर भी एक–एक दरजे में दो–दो, तीन–तीन साल पड़ा

रहता हूँ फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यूँ खेल–कूद में वक्त, गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो–ही–तीन साल लगते हैं, तुम उम्र–भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली–डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रूपये क्यों बरबाद करते हो?'

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी–ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे–ऐसे सूक्ति–बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े–टुकड़े हो जाते और हिम्मत छूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता– क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी ख़राब करूँ। मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था; लेकिन उतनी मेहनत! मुझे तो चक्कर आ जाता था। लेकिन घंटे–दो–घंटे बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम–टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए, बिना कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ? टाइम–टेबिल में, खेल–कूद की मद बिलकुल उड़ जाती। प्रातःकाल उठना, छः बजे मुँह–हाथ धो, नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ तक अंग्रेज़ी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छः तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने टहलना, साढ़े छः से सात तक अंग्रेज़ी कम्पोज़ीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम।

मगर टाइम–टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन से उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के वह हल्के–हल्के झोंके, फुटबाल की उछल–कूद, कबड्डी के वह दाँव–घात, वॉली–बॉल की वह तेज़ी और फुरती मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम–टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें किसी की याद न रहती, और फिर भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता। कमरे मे इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें ख़बर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार–सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच में भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल–कूद का तिरस्कार न कर सकता।

सालाना इम्तिहान हुआ। भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ– आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ। लेकिन वह इतने दुःखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेल–कूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फजीहत की, तो साफ़ कह दूँगा– आपने अपना खून जलाकर कौन–सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते–कूदते दरजे में अव्वल आ गया। ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग–ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक अब मुझ पर नहीं है। भाई साहब ने इसे भाँप लिया– उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली–डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े– देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग़ हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े–बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती, है, इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन–सा उपदेश लिया? या यूँ ही पढ़ गए? महज इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेकों राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते। बिल्कुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े–बड़े देवता उसकी ग़ुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे; मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम–निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चिल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी जो कुकर्म चाहे करे; पर अभिमान न करे, इतराए नहीं। अभिमान किया और दीन–दुनिया से गया।

शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा, भक्त कोई है ही नहीं। अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग–माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से

तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे बढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार–बार नहीं। कभी–कभी गुल्ली–डंडे में भी अँधा–चोट निशाना पड़ जाता है। उससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशान ख़ाली न जाए। मेरे फेल होने पर न जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतो पसीना आ जाएगा। जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा! बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ–आठ हेनरी ही गुज़रे हैं। कौन–सा कांड किस हेनरी के समय हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ लिखा और सब नंबर ग़ायब! सफाचट। सिफ़र भी न मिलेगा, सिफ़र भी! हो किस ख़याल में! दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स! दिमाग़ चक्कर खाने लगता है। आँधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारुम, पंजुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता। और जामेट्री तो बस ख़ुदा की पनाह! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुम्तहिनों से नहीं पूछता कि आख़िर अ ब ज और अ ज ब में क्या फ़र्क़ है और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का ख़ून करते हो। दाल–भात–रोटी खाई या भात–दाल–रोटी खाई, इसमें क्या रखा है; मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह! वह तो वही देखते हैं, जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर–अक्षर रट डालें। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है और आख़िर इन बे–सिर–पैर की बातों के पढ़ने से क्या फ़ायदा?

इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से, लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब ख़ुराफ़ात याद करनी पड़ेगी। कह दिया– 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कापी सामने खोले, क़लम हाथ में लिए, उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है। इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है; लेकिन इस ज़रा–सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्ने में लिखने की ज़रूरत? मैं तो इसे हिमाकत समझता हूँ। यह तो समय की किफ़ायत नहीं, बल्कि उसका दुरूपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे और अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पड़ेंगे, चाहे जैसे लिखिए। और पन्ने भी पूरे फुलस्केप आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक! संक्षेप में चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ–दो सौ पन्ने लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे–धीरे भी। है उल्टी बात या नहीं? बालक भी इतनी–सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे–दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे ज़ियादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने, यह उपदेश–माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद–सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया। कैसे स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही तअज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यूँ–की–त्यूँ बनी रही। खेल–कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी था, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज़ का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का–सा जीवन कटने लगा।

फिर सालाना इम्तिहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत न की पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया था। कोर्स का एक–एक शब्द चाट गए थे; दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने वाली ख़ुशी आधी हो गई। मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन

मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे उस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास होता जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा; या रहा तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं तो पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ मेरी तक़दीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा–बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक़ पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ अब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों से कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की एक पूरी सेना लग गई; और झाड़दार बाँस लिए उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे–पीछे की ख़बर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं मेरा हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले– इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज़ नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोज़ीशन का ख़याल करना चाहिए। एक ज़माना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वाल दरजे के डिप्टी मजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमात वाले हमारे लीडर और समाचार–पत्रों के संपादक हैं। बड़े–बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कम–अक्ली पर दुःख होता है। तुम ज़हीन हो, इसमें शक नहीं; लेकिन वह ज़ेहन किस काम का, जो हमारे आत्म–गौरव की हत्या कर डाले? तुम अपने दिल में समझते होंगे, मैं भाई साहब से महज़ एक दर्जा नीचे हूँ और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक़ नहीं है; लेकिन यह तुम्हारी ग़लती है। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ– और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद तुम मुझसे आगे निकल जाओ– लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए., डी.फिल. और डी.लिट्. ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा पास नहीं किया, और दादा भी शायद पाँचवी–छठी जमात के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्म–दाता है, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़ियादा तजरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह कि राज्य–व्यवस्था है और आठवें हेनरी ने कितने विवाह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हो, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़ियादा है।

देव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ–पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा; लेकिन तुम्हारी जगह पर दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले खुद मर्ज़ पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डाक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो ख़ैर बड़ी चीज़ है। हम–तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने भर का ख़र्च महीने भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस–बाईस तक ख़र्च कर डालते हैं और पैसे–पैसे को मोहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं; लेकिन जितना आज हम और तुम ख़र्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुंब का पालन किया है, जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए. हैं कि नहीं; और यहाँ के एम.ए. नहीं, ऑक्सफोर्ड के। एक हज़ार रूपये पाते हैं, लेकिन उनके घर इंतिज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी माँ। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ आकर

बेकार हो गई। पहले खुद घर का इंतिज़ाम करते थे। ख़र्च पूरा न पड़ता था। क़र्ज़दार रहते थे। जब से उनकी माताजी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई हैं। तो भाईजान, यह ग़ुरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह नहीं चल पाओगे। अगर तुम यूँ न मानोगे, तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं...

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत–मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा– हरगिज नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले लगा लिया और बोले–मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा जी भी ललचाता है, लेकिन क्या करूँ, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर पर है!

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे–पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। मैं पीछे–पीछे दौड़ रहा था। ■

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हिल की सहभागिता

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 03.11.2022 को अमृतसर में उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता श्रीमती मिनाक्षी जॉली – संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा किया गया। हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय की ओर से श्री अजीत कुमार – सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने सम्मेलन में भाग लिया ।

स्त्रोत पर कटौती (टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स-टीडीएस)

आदित्य मेहता
लेखा अधिकारी, निगमित कार्यालय

वित्त प्रभाग

टीडीएस एक डायरेक्ट टैक्सेशन (प्रत्यक्ष कर–निर्धारण) का तरीका है जिसकी शुरुआत इनकम सोर्स (आय के स्त्रोत) से या इनकम पेआउट (आय की अदायगी) के समय से ही टैक्स एकत्रित करने के लिए की गई। टीडीएस का फुल फॉर्म है टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स यानि स्त्रोत पर की गई टैक्स (कर) कटौती।

आज हम स्त्रोत पर कर कटौती यानी टीडीएस के बारे में जानेंगे कि टीडीएस क्या है, इसका क्या प्रभाव है, टीडीएस के रेट और कब–कब टीडीएस काटा जाता है, टीडीएस को जमा कराने की निर्धारित तिथि क्या है, टीडीएस रिटर्न और साथ ही में जानेंगे की तय समय सीमा में टीडीएस जमा ना करने पर प्रत्यक्ष कर में क्या–क्या प्रावधान है और अंत में जानेगे की टीडीएस सर्टिफिकेट क्या है? कहां से मिलता है?

टीडीएस क्या है और यह किस तरह आपको प्रभावित करता है?

एक व्यक्ति के लिए इनकम (आय) के विभिन्न सोर्स (स्त्रोत) हो सकते हैं। इनकम टैक्स एक डायरक्ट टैक्स (प्रत्यक्ष कर) है जिसका उन्हें भुगतान करना आवश्यक है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी कुल इनकम (आय) किस टैक्स ब्रैकेट में आती है। भारतीय टैक्स सिस्टम (कर प्रणाली) के अनुसार, टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स (टीडीएस) यानि स्त्रोत पर कर कटौती, टैक्सेशन (कर–निर्धारण) में एक महत्वपूर्ण शब्द है, जिसका टैक्सपेयर्स (कर दाताओं) पर अहम असर होता है। यह सरकार द्वारा इनकम टैक्स एकत्रित करने का एक तरीका है और डिडक्टी (जिस व्यक्ति के इनकम से कटौती की जाती है) के लिए यह सुविधाजनक है क्योंकि इसकी कटौती अपने आप हो जाती है।

टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स यानि स्त्रोत पर की गई टैक्स (कर) कटौती। इस पद्धति के अंतर्गत, यदि कोई व्यक्ति (कटौती करनेवाला/डिडक्टर) किसी अन्य व्यक्ति को भुगतान करने के लिए ज़िम्मेदार है तो वह सोर्स (स्त्रोत) पर टैक्स में डिडक्शन (कटौती) कर शेष रकम डिडक्टी को ट्रान्स्फर करेगा। काटी गई टीडीएस राशि केंद्रीय सरकार के पास जमा कर दिया जाता है। फॉर्म 26एएस या डिडक्टर (कटौती करनेवाले) द्वारा जारी किए गए टीडीएस सर्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) में डिडक्टी टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स (टीडीएस) राशि की जाँच कर सकता है।

टीडीएस टैक्स चोरी पर नियंत्रण रखने में मदद करता है। इतना ही नहीं, इस पद्धति में टैक्स पेयर (करदाता) को वित्तीय वर्ष के अंत में वार्षिक कर के रुप में एक बड़ी राशि का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती।

टीडीएस रेट क्या होता है?

भारतीय टैक्स सिस्टम (कर पद्धति) में 20 से 25 सेक्शन्स (धाराएँ) हैं जोविभिन्न प्रकार के भुगतान को संचालित करती है जिन पर टीडीएस लागू होता है। यहाँ कुछ सामान्य प्रकार के भुगतान दिए गए हैं जिस पर सुसंगत धाऱा और लागू होने वाले टीडीएस रेट के साथ सोर्स (स्त्रोत) पर ही कर कटौती करनी होती है।

सेक्शन (धारा)	भुगतान का प्रकार	रेट/दर (%)
धारा 192	सैलरी इनकम (वेतन आय)	कोई निर्धारित दर नहीं(प्रचलित मौजूदा स्लैब दर के आधार पर औसत दर कैल्कुलेटकिया जाना चाहिए)
धारा 194	धारा 2(22) के अंतर्गत डिविडेंड (लाभांश)	10
धारा 194 ए	इंटरेस्टइनकम/ ब्याज आय (सिक्यूरिटीज़/ प्रतिभूतियों पर प्राप्त ब्याज को छोड़कर)	10
धारा 194 सी	एक निवासी ठेकेदार या उप–ठेकेदार को किए गए भुगतान/क्रेडिट	1 (एचयूएफ और व्यक्ति के लिए) 2 (अन्य के लिए)

धारा 194 डी	बीमा कमीशन	5 (एचयूएफ और व्यक्ति के लिए)10 (अन्य के लिए)
धारा 194जी	लॉटरी टिकट की बिक्री पर कमीशन	10
धारा 194 एच	कमीशन या ब्रोकरेज/दलाली	5
धारा 194–आई	किराए से प्राप्त आय	2 (संयंत्र, मशीनरी या उपकरणों से)
धारा194–आईए	किसी भी अचल संपत्ति का ट्रान्स्फर/स्थानांतरण (ग्रामीण भूमि को छोड़कर)	10 (फर्नीचर या फिटिंग, भूमि और इमारत से)
धारा 194 जे	रॉयल्टी, तकनीकी या पेशेवर शुल्क (प्रोफेशनल फी) या निदेशक को मेहनताना/पारिश्रमिक	1
धारा 194एलए	किसी विशिष्ट अचल संपत्ति का अधिग्रहण (एक्वीज़ीशन)	10

टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स (स्त्रोत पर कर कटौती) में रेट्स (दरों) के लिए क्या नियम है?

केवल इनकम टैक्स रिटर्न भरने के लिए ही नहीं लेकिन टीडीएस के संबंध में भी नियम मौजूद हैं। यदि एक व्यक्ति या संस्था पर्याप्त रुप से इन नियमों का पालन करती है तो वे दंड, शुल्क या ब्याज टाल सकते हैं। टीडीएस से जुड़े प्रमुख नियम हैं:

- महत्वपूर्ण नियमों में सबसे पहला नियम यह है कि सोर्स (स्त्रोत) पर किया जाने वाला टैक्स डिडक्शन (कटौती) जब भुगतान देय हो या जब वास्तविक राशि दी जाती है, जो भी पहले हो, तो डिडक्ट (कटौती) किया जाए
- टीडीएस डिडक्शन (कटौती) में देरी से जब तक टैक्स डिडक्शन (कर कटौती) नहीं की जाती प्रति माह / 1: के दर से ब्याज भरना होगा
- प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वो एम्प्लॉयर (नियोक्ता)हो या कोई अन्य, उसे अगले महिने की 7 तारीख से पहले सरकार के खाते में टैक्स जमा करना आवश्यक है
- टीडीएस के देरी से या ग़ैर–भुगतान के मामले में प्रति माह 1.5 प्रतिशत के रेट (दर) से ब्याज वसूला जाएगा जब तक टैक्स जमा नहीं किया जाता

टीडीएस भुगतान नियत तारीख (ड्यू डेट)

प्रत्येक एम्प्लॉयर (नियोक्ता) या डिडक्टर (कटौती करने वाले) को, जो पेशेवर सेवा देने वाले किसी भी कर्मचारी या व्यक्ति से टीडीएस डिडक्ट (कटौती) करते हैं, निर्दिष्ट की गई नियत तारीख से पहले केंद्र सरकार के खाते में सोर्स पर डिडक्ट किया गया टैक्स (स्त्रोत पर की गई कर कटौती) जमा करना आवश्यक होता है। टीडीएस भुगतान के लिए मासिक नियत तारीख नीचे दिए गए अनुसार है:

महिना	नियत तारीख
अप्रैल	7 मई को या उससे पहले
मई	7 जून को या उससे पहले
जून	7 जुलाई को या उससे पहले
जुलाई	7 अगस्त को या उससे पहले
अगस्त	7 सितंबर को या उससे पहले
सितंबर	7 अक्तूबर को या उससे पहले
अक्तूबर	7 नवंबर को या उससे पहले
नवंबर	7 दिसंबर को या उससे पहले
दिसंबर	7 जनवरी को या उससे पहले
जनवरी	7 फरवरी को या उससे पहले
फरवरी	7 मार्च को या उससे पहले
मार्च	30 अप्रैल को या उससे पहले

टीडीएस रिटर्न्स

टीडीएस के अंतरगत तीन प्रकार की रिटर्न्स है

- वेतन भुगतान पर कर कटौती के लिए फॉर्म 24फ त्रैमासिक में टीडीएस का विवरण ।
- अनिवासी (Non Resident),कंपनी के अलावा (not being a company) और विदेशी कंपनी (foreign company) को वेतन के अलावा भुगतान करते समय काटे गए कर के लिए फॉर्म 27क्यू में टीडीएस का विवरण।
- व्यावसायिक शुल्क, ब्याज भुगतान आदि पर काटे गए टीडीएस जैसे अन्य मामलों के लिए फॉर्म 26फ में टीडीएस का विवरण ।

टीडीएस रिटर्न्स प्रत्येक तिमाही (क्वार्टर) में दाखिल किया जाना आवश्यक है। देरी से या रिटर्न्स दाखिल न किए जाने के मामले

में इनकम टैक्स एक्ट (आयकर अधिनियम), 1961 की धारा 234ई के अंतर्गत रु. 200/– प्रति दिन का शुल्क वसूला जाएगा जब तक आप रिटर्न दाखिल नहीं करते (वसुली की रकम टीडीएस की रकम से ज्यादा नी होनी चाहिए)।

धारा 271एच के अनुसार, मूल्यांकन अधिकारी (एसेसिंग ऑफ़िसर) उस व्यक्ति को निर्देश दे सकता है जो नियत तारीख के भीतर रिटर्न दाखिल करने में विफल रहता है, उसे न्यूनतम 10,000 रुपये का जुर्माना देने का निर्देश दे सकता है, जो कि अधिक्तम् 1,00,000 रुपये तक बढ़ सकता है। इस धारा के तहत जुर्माना टीडीएस रिटर्न की गलत फाइलिंग के मामलों पर भी लागू होता है। निम्नलिखित शर्तों के मेल खाने पर टीडीएस/टीसीएस रिटर्न दाखिल करने में देरी के मामले में धारा 271एच के तहत जुर्माना नहीं लगाया जाएगाः

- टीडीएस/टीसीएस का भुगतान सरकार के खाते में किया जाता है।
- देर से दाखिल करने की फीस और ब्याज का भुगतान सरकार के खाते में किया जाता है।
- टीडीएस/टीसीएस रिटर्न निर्दिष्ट नियत तारीख से एक वर्ष की अवधि की समाप्ति से पहले दाखिल किया जाता है।

नोटः धारा 271एच के तहत जुर्माना धारा 234ई के अतिरिक्त है। टीडीएस रिटर्न्स दाखिल करने की नियत तारीख इस प्रकार है :

तिमाही (क्वार्टर)	तिमाही अवधि (क्वार्टर पीरियड)	टीडीएस रिटर्न दाखिल करने की नियत तारीख
पहली तिमाही	अप्रैल से जून	उसी वित्त वर्ष की 31 जुलाई को
दुसरी तिमाही	जुलाई से सितंबर	उसी वित्त वर्ष की 31 अक्तूबर को
तिसरी तिमाही	अक्तूबर से दिसंबर	उसी वित्त वर्ष की 31 जनवरी को
चौथी तिमाही	जनवरी से मार्च	अगले वित्त वर्ष की 31 मई को

टीडीएस सर्टिफिकेट क्या है? कहां से मिलता है?

यदि कोई कंपनी यह संस्थान या व्यक्ति किसी व्यक्ति को आमदनी देने के पहले काटता है तो उसके लिए एक सर्टिफिकेट भी जारी करता है। इसे टीडीएस सर्टिफिकेट कहते है। यह सर्टिफिकेट दो प्रकार के होते हैं।

- फॉर्म 16 : जब किसी की सैलरी से टीडीएस काटा जाता है, तो उसके लिए फॉम 16 के रूप में TDS Certificate जारी किया जाता है। इसीलिए इसे सरल भाषा में salary TDS certificate भी कह सकते हैं।
- फॉर्म 16A : सैलरी के अलावा किसी अन्य तरह की आमदनी में से TDS काटने पर फॉर्म 16A के रूप में TDS Certificate जारी किया जाता है।
- फॉर्म 16B रू संपत्ति बिक्री के मामले में काटे गए कुल टीडीएस का विवरण देता है।
- फॉर्म 16C : धारा 194आईबी के तहत किराए के भुगतान पर व्यक्ति (individual) या एचयूएफ (HUF) द्वारा जारी की जाती है

टीडीएस सर्टिफिकेट में आपके पैन नंबर, कुल मिलने वाली आमदनी, उसमें से काटे गए टैक्स का हिस्सा वगैरह का उल्लेख होता है। इसमें TDS काटने वाले का टैन नंबर और उसके हस्ताक्षर भी इसमें रहते हैं। ■

डिजिटल इंडिया

सूचना प्रौद्योगिकी

सत्येन्द्र कुमार
सहायक प्रबन्धक (रसायन), बठिंडा यूनिट

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा चलाए जाने वाले बहुत ही अच्छा कार्यक्रम है यह सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 डिजिटल सप्ताह के रूप में (1 जुलाई से 7 जुलाई तक) भारतीय सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरूआत हुई यह प्रोजेक्ट अनिल अंबानी, अजीम प्रेमजी, साइरस मिस्त्री जैसे बड़े हस्तियों की उपस्थिति में लांच किया गया है जिसमें संकल्प लिया गया है कि भारत को आई टी, शिक्षा, कृषि आदि में नए विचारों द्वारा डिजिटल शक्ति देकर भारत को और आगे बढ़ाना है दूर संचार और सूचना तकनीक तकनीकी मंत्रालय द्वारा इसकी योजना और अध्यक्षता की गई है।

डिजिटल इंडिया वह कार्यक्रम होगा जो देश को डिजिटल सशक्ति सोसाइटी में बदल देगी और भारत को एक नया रूप दे देगी। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से देश की हर जानकारी और रिकॉर्ड को स्वच्छता से इलेक्ट्रानिक मोड़ में रखा जा रहा है जो कि आगे काम में सरलता के साथ–साथ तेज गति को लाएगा। देश के लोगों के बेहतर विकास और वृद्धि के लिए रूपांतरित भारत के लिए यह एक बहुत ही प्रभावशाली योजना है। सुशासन और अधिक नौकरियों के लिए भारत को डिजिटल विस्तार देना इसका लक्ष्य है। डिजिटल इंडिया का मुख्य लक्ष्य सभी सरकारी सुविधाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध और इंटरनेट से जोड़ने का काम शुरू किया गया है।

डिजिटल इंडिया के तीन प्रमुख कार्यः

(1) प्रत्येक नागरिकों को डिजिटल इंडिया की उपयोगिता से रूबरू कराना

(2) नागरिक की मांग पर शासन और सेवाएं प्रदान करना

(3) हर नागरिक डिजिटल शक्ति प्रदान करना

डिजिटल इंडिया कैसे कार्य करेगाः डिजिटल इंडिया से डेटा का डिजिटलाइजेशन आसानी से होगा जो भविष्य में चीजों को तेज और दक्ष बनाने में मदद करेगा इसमें कागजी कार्य और समय और मानव की मेहनत की भी बचत होगी। और निजी क्षेत्र में गठबंधन स्थापित करें कई बड़े गांव में डिजिटल लेस इलाकों में भी बदलाव लाएगा और वह भी डिजिटलाइलेशन होगा। भारत के सभी गांव और शहर और नगर तकनीकी होंगे (राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय) मुख्य कंपनियां 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की योजना है इसमें अंबानी द्वारा 2.5 लाख करोड़ का निवेश किया गया है इस योजना द्वारा इंटरनेट सेवा के साथ दूरदराज के ग्रामीण इलाकों तक पहुंचेगा इंटरनेट से नागरिक को सुधार कर सकता है इस योजना से हर एक को काफी फायदा होगा।

डिजिटल इंडिया द्वारा चलाई जाने वाली प्रमुख योजनाएंः डिजिटल इंडिया द्वारा भारत के विकास के लिए कुछ योजनाएं चलाई जा रही है जिसमें पहले से प्रचलित ई गवर्नेंस योजना का यह बहुत ही प्रतिभाशाली रूप है जिसे नव स्तंभों का नाम दिया गया है जो प्रतयेक नागरिक को कई डिजिटल सुविधाएं प्रदान करेगा।

वो स्तंभ इस प्रकार हैः

(1) ब्रॉड बैंड हाइवे

(2) लोकहित पहुंच कार्यक्रम

(3) मोबाईल कनेक्टिविटी

(4) एक क्रांति

(5) ई गवर्नेंस

(6) सभी की सूचना

(7) नौकरी के लिए आई0 टी0

(8) पूर्व फसल कार्यक्रम

(9) इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण

सभी को डिजिटल इंडिया की जानकारी होना

डिजिटल इंडिया के अंतर्गत सरकार अपनी सभी जानकारी वेबसाइट और सोशल मीडिया द्वारा प्रत्येक नागरिक को देगी हर नागरिक को ट्र0 वे0 कम्युनिकेशन की सुविधा भी दी जाएगी ताकि सभी के पास डिजिटल इंडिया की जानकारी हो।

इस योजना को सफल बनाने के लिए सबसे पहले सरकार ने

आधार की मदद से लोगों का बायेमेट्रिक डाटा लिया जिससे उनकी अद्वितीय पहचान मिल सकें। सभी भारतीय लोगों को अद्वितीय पहचान मिलने के बाद भारतीय नागरिकों से सभी सेवाओं जैसे मोबाईल नंबर, PAN, बैंक अकाउंट, जीवन बिमा, राशन कार्ड, गैस कनेक्शन, ड्राइविंग लाइसेंस को आधार कार्ड से जोड़ा जा रहा है।

उसके बाद आधार की सहायता से लोगों को सभी सुविधाएँ दी जा रही हैं। इससे लोगों की पहचान सही प्रकार से हो पा रही है और साथ ही बीच में भ्रष्टाचार करने वाले कम हो गये हैं। आज आप घर पर बैठे आधार की मदद से मोबाइल सिम खरीद सकते हैं, अपना PAN अप्लाई कर सकते हैं और ऐसी कई सेवाएं हैं जो Online KYC और OTP की सहायता से कुछ ही मिनटों में पूरे हो रहे हैं जिनके लिए कभी लोगों को महीनों तक इंतजार करना पड़ता था।

आज के समय में लगभग सभी भारतीय बैंकों में ऑनलाइन बैंकिंग और ATM की सुविधा है जिसकी सहायता से लोग घर बैठे सभी पैसों का लेन–देन कर सकते हैं। अब PAN को भी आधार से जोड़ा जा रहा है जिसकी मदद से कोई भी आयकर चोरी या घोटाला नहीं कर पायेगा और साथ ही लोग STD भी घर में बैठे भुगतान कर सकते हैं।

कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण

(नेट0 जीरो0 इम्पोर्ट्स) के तहत सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का निर्माण देश में ही किया जाएगा जिसमें मोबाइल–सेटअप बॉक्स, वी0सेट फेस लेस डिजाइन, कस्टमर और मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक, स्मार्ट एनजी। मीटर, माइक्रो एटीएम, स्मार्ट कार्ड, जैसे उपकरण हमारे देश में ही निर्माण होगा और इन पर ज्यादा फोकस किया जाएगा।

डिजिटल इंडिया द्वारा नौकरियांः कौशल विकास कार्यक्रम को इससे जोड़कर कंपनियां कार्य प्रणाली के अनुसार ग्रामीणों को प्रशिक्षण दिया जाएगा जिससे रोजगार में काफी मदद मिलेगी।

अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम : रारा इसके अंतर्गत डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए सरकार ने कुछ नियम बनाए हैं जिसको पूरे देश में लागू किया जाएगा।

उपसंहार :

डिजिटल इंडिया की सफलता के लिए देश की बड़ी–बड़ी कंपनियों ने काफी खर्च किया है। अब तक इसमें तो 4.5 लाख करोड़ खर्च कर चुके हैं। इससे 18 लाख लोगों को नौकरी मिलेगी। यह भारत सरकार की बहुत ही अच्छी योजना है। इससे भारत की एक अलग पहचान होगी। डिजिटल इंडिया गांव से लेकर शहर तक हर क्षेत्र में जुड़ेगा और हमारे देश का नाम रोशन करेगा। हमारा देश दूसरे देशों से मदद लेता था और अब मदद देने वाला देश बनेगा। इससे भारत की एक अलग ही पहचान होगी। ■

सूचना - प्रौद्योगिकी और मानव कल्याण

मान्सी गर्ग
प्रमुख, ए.एन.आर.ए इंस्टीट्यूट

प्राचीनकाल से ही मनुष्य दूरस्थ व्यक्ति से सम्पर्क के अनेक प्रकार के उपायों को काम में लाता रहा हैं– आदिम जन जातियों में ढोल या नगाड़ो की सांकेतिक ध्वनियें अथवा सींग के बाजों द्वारा संदेश दिए जाते थे– शांति के संदेशवाहक कबूतरों ने भी संवाद वाहक की भूमिका निभाई,

धीरे धीरे एक व्यवस्थित डाक प्रणाली का विकास हुआ– वैज्ञानिक प्रगति के साथ साथ अनेक संचार उपकरणों का अविर्भाव हुआ और अब हम दूर संचार के नाम से एक क्रांतिकारी संचार तन्त्र के विकास व स्थापना में जुटे हुए हैं– तार टेलीग्राफ से इंटरनेट तक की यह विकास यात्रा बड़ी रोचक और रोमांचक रही हैं.

आज सूचना– प्रौद्योगिकी ने ज्ञान और विकास के द्वारों को एक साथ खोल दिया है। हमारे आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक तथा अन्य सभी क्षेत्रों पर सूचना–प्रौद्योगिकी के कारण हुए विकास की स्पष्ट छाप लक्षित होती है।

सूचना–प्रौद्योगिकी ने हमें विकास की एक नई दुनिया की ओर अग्रसर किया है। वर्तमान में कम्प्यूटर, इण्टरनेट, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स, ई–मेल, ई–कॉमर्स, स्मार्ट कार्ड, क्रेडिट कार्ड तथा एटीएम कार्ड आदि सूचना–प्रौद्योगिकी के सशक्त माध्यम हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी का मानव–जीवन में महत्त्व–देश के विकास की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में आज सूचना–प्रौद्योगिकी का विशेष महत्त्व है। सूचना–प्रौद्योगिकी के कारण आज समस्त विश्व की दूरियाँ सिमट गई हैं। अब पलक झपकते ही सूचनाओं और सन्देशों का आदान–प्रदान हो जाता है, जिससे शिक्षा, चिकित्सा–परिवहन तथा उद्योग आदि सभी के महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के रूप में जाना जा सकता है–

- सूचना–प्रौद्योगिकी पिछड़े देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए जरूरी और उपयुक्त तकनीक है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी सेवा और आर्थिक क्षेत्र का प्रमुख आधार बन गई है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी की सहायता से प्राप्त सूचनाओं से समाज का सशक्तीकरण होता है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी द्वारा प्रशासन और सरकार के कार्यों में पारदर्शिता आती है, यह भ्रष्टाचार नियन्त्रण में अत्यन्त प्रभावी है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी के माध्यम से गरीब जनता को सूचना–सम्पन्न बनाकर ही गरीबी का उन्मूलन किया जा सकता है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी का सर्वाधिक प्रयोग योजनाएँ बनाने, नीति–निर्धारण करने तथा निर्णय लेने में होता है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी नवीन रोजगारों का सृजन करती है।
- आज सूचना–प्रौद्योगिकी वाणिज्य और व्यापार का जरूरी अंग है।
- इस प्रकार सूचना–प्रौद्योगिकी मानव–जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है।
- सूचना–प्रौद्योगिकी के लाभ–सूचना–प्रौद्योगिक का लक्ष्य समाज को अधिक–से–अधिक लाभ पहुंचाने का रहा है। इसके माध्यम से हमें निम्नलिखित सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं–
- कम्प्यूटर और मोबाइल द्वारा रेलवे टिकट एवं आरक्षण।
- बैंकों का कम्प्यूटरीकरण एवं एटीएम की सुविधा।
- ई–बैंकिंग एवं मोबाइल बैंकिंग से आर्थिक लेन–देन और सूचनाओं के आदान–प्रदान की सुविधा।
- ऑनलाइन क्रय–विक्रय (सेल्स–पर्चेजिंग) की सुविधा।
- इण्टरनेट द्वारा रेल टिकट एवं हवाई टिकट का आरक्षण।
- इण्टरनेट द्वारा एफ० आई० आर० दर्ज कराना।
- न्यायालयों के निर्णय भी ऑनलाइन उपलब्ध होना।
- किसानों के भूमि रिकॉर्डों का कम्प्यूटरीकरण।
- ऑनलाइन रिजल्ट की सुविधा।

- राशनकार्ड, आधारकार्ड, मतदाता पहचान–पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस आदि के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा।
- शिकायतें भी ऑनलाइन की जा सकती हैं।
- सभी विभागों की पर्याप्त जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है।
- आयकर की फाइलिंग भी ऑनलाइन की जा सकती है।

इस प्रकार सूचना–प्रौद्योगिकी से मानव के धन, श्रम और समय की पर्याप्त बचत हो रही है तथा मानव विकास और समृद्धि की दिशा में तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है।

सूचना–प्रौद्योगिकी के साधन

सूचना–प्रौद्योगिकी को व्यापक बनाने में कम्प्यूटर, इण्टरनेट, टेलीफोन, मोबाइल फोन का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। इन संसाधनों के माध्यम से ई–कॉमर्स, ई–मेल, ऑनलाइन सरकारी काम–काज हेतु ई–प्रशासन, ई–गवर्नेस, ई–बैंकिंग, ई–एज्यूकेशन, ई–मेडिसन, ई–शॉपिंग आदि से विकास की गति को बढ़ाया जा रहा है। कम्प्यूटर युग के इन संचार माध्यमों से हमने सूचना–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना एक स्थान बनाया है।

सूचना–प्रौद्योगिकी का प्रभाव–सूचना–प्रौद्योगिकी ने आज विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को जोड़कर एक नई अर्थव्यवस्था को जन्म दिया, जिससे समाज का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित हुआ है। सूचना–प्रौद्योगिकी का सबसे अधिक प्रभाव निम्नलिखित क्षेत्रों पर अधिक पड़ा है–

(क) शिक्षा के क्षेत्र में सूचना–प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में सूचना–प्रौद्योगिकी का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। सूचना–प्रौद्योगिकी की सहायता से विद्यार्थी अब ई–पुस्तकें, परीक्षा के लिए प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र, पिछले वर्ष के प्रश्न–पत्र आदि देखने के साथ–साथ विषय–विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और अपने जैसे प्रतियोगियों से दुनिया के किसी भी कोने से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

ऑनलाइन पाठ्य–सामग्री से भी अध्ययन किया जा सकता है। ऑनलाइन प्रवेश–प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों को निरर्थक भाग–दौड़ से छुटकारा मिल गया है। आज विभिन्न पाठ्यक्रमों; जैसे–बी०ई०, बी०–आर्क, एम०बी०ए०, एम०बी०बी०एस०, बी० एड० आदि की प्रवेश परीक्षाओं में सम्मिलित होना सरल हो गया है। सारी सूचनाएँ ऑनलाइन होने से दूरस्थ शिक्षा में भी सूचना–प्रौद्योगिकी महत्त्वपूर्ण साधन बन चुकी हैं।

(ख) व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में सूचना–प्रौद्योगिकी–व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में सूचना–प्रौद्योगिकी अत्यन्त प्रभावी सिद्ध हो रही है। वित्त रिकॉर्ड कीपिंग, लेन–देन का विश्लेषण और उनके विवरण तैयार करने में सूचना–प्रौद्योगिकी पर्याप्त सहायक हुई है।

ई–कॉमर्स द्वारा उत्पाद की ऑनलाइन सूची और ऑनलाइन भुगतान प्रणाली काफी प्रभावी है। बड़े–बड़े संस्थानों में जहाँ अनेक व्यक्ति काम करते हैं, वहाँ उनके वेतन, भत्तों, मासिक देनदारियों के विवरण तैयार करने, छुट्टी निर्धारण और आयोजना को लागू करने में सूचना–प्रौद्योगिकी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस प्रकार उत्पादन–प्रणालियों और भण्डारण–व्यवस्था के संचालन में सुविधा हो गई है। अब किसी कम्पनी का कोई भी अधिकृत व्यक्ति एक बटन दबाकर पूरे माल का रिकॉर्ड देख सकता है। वह अपनी योजनाओं में भी सुधार कर सकता है। इस प्रकार पूरे व्यवसाय के ऑनलाइन होने से व्यापार करना सुगम हो गया है।

(ग) डिजिटल इण्डिया मिशन और सूचना–प्रौद्योगिकी–सूचना–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत अग्रणी राष्ट्रों में से एक है। भारत सरकार द्वारा शासन और प्रशासन में नागरिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए माई गवर्नमेंट जैसी वेबसाइटों का सृजन किया गया है, जिनको भारी जन समर्थन मिला है।

डिजिटल इण्डिया में ब्रॉडबेण्ड हाई–वे और मोबाइल कनेक्टिविटी के माध्यम से ई–गवर्नेस के अन्तर्गत सरकारी कार्यों और योजनाओं में सुधार, सभी के लिए सूचनाओं की उपलब्धता, नौकरियों में पारदर्शिता, तकनीकी शिक्षा के विकास द्वारा उत्पादन में वृद्धि आदि योजनाएँ सम्मिलित हैं।

इसके अन्तर्गत सभी मन्त्रालयों एवं सरकारी विभाग आपस में जुड़े हैं। इस मिशन का उद्देश्य लोगों की भागीदारी के माध्यम से गुणात्मक परिवर्तन लाना, भारत को तकनीकी –ष्टि से उन्नत बनाना तथा समाज और अर्थव्यवस्था को सु–ढ़ बनाना है।

(घ) अन्य क्षेत्रों में सूचना–प्रौद्योगिकी–शिक्षा, व्यापार, उद्योग, नौकरी, कृषि, प्रशासन के अतिरिक्त सूचना–प्रौद्योगिकी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के साथ ही अपशिष्ट–संग्रह और निष्पादन उद्योग में भी कारगर सिद्ध हुई है। अपशिष्ट–प्रबन्धन के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विस्तार के पीछे सक्षम प्रौद्योगिकी समाधान की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सूचना–प्रौद्योगिकी ने लोगों को अपने अधिकारों, कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति जागरूक बनाकर एक प्रगतिशील समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। एक विश्व की संकल्पना को एक रचनात्मक बल मिला है। निश्चय ही सूचना–प्रौद्योगिकी एक दिन सम्पूर्ण विश्व को समृद्ध बनाकर सर्वत्र सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने में सफल होगी। ■

वित्तीय लेखा (एफ.आई.) मॉड्यूल

मोनिका
बाह्य साधन : वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

एस.ए.पी. एफ.आई. का मतलब वित्तीय लेखा है और यह एस.ए.पी. ई.आर.पी. के महत्वपूर्ण मॉड्यूल में से एक है। इसका उपयोग किसी संगठन के वित्तीय डेटा को संग्रहीत करने के लिए किया जाता है। एस.ए.पी. एफ.आई. बाजार में किसी कंपनी की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण करने में मदद करता है। यह . एस.डी..ए एस.ए.पी.–पी.पी., एस.ए.पी.–एम.एम., एस.ए.पी.–एस.सी.एम. आदि जैसे अन्य एस.ए.पी. मॉड्यूल के साथ एकीकृत हो सकता है।

एस.ए.पी. एफ.आई. मॉड्यूल वित्तीय और लेखा के लिए सबसे लोकप्रिय मॉड्यूल है। बहीखाता, बैलेंस शीट, और लाभ और हानि विवरण आदि को बनाए रखने जैसे विविध लेखांकन कार्यों कोएस.ए.पी.ई.आर.पी. समाधानों द्वारा स्वचालित रूप से प्रबंधित किया जाता है। एस.ए.पी. एफ.आई. मॉड्यूल मदद करते हैं।

एस.ए.पी.–एफ.आई. में निम्नलिखित उप–घटक शामिल हैं –

- वित्त लेखा सामान्य खाता बही।
- वित्त लेखा खाते प्राप्य और देय।
- वित्त लेखा बैंक लेखा।
- वित्त लेखा यात्रा प्रबंधन।

सामान्य खाता बही: एस.ए.पी. सामान्य खाता बही का प्रमुख उद्देश्य किसी संगठन के सभी बाहरी खातों के प्रबंधन के लिए एक प्रणाली प्रदान करना है। एक उद्यम के सभी व्यावसायिक लेनदेन को रिकॉर्ड करने के साथ–साथ विभिन्न अन्य संचालन क्षेत्रों को इस एस.ए.पी. लेखा मॉड्यूल द्वारा प्रबंधित किया जाता है। यह लागत लेखांकन क्षेत्रों का वास्तविक समय मूल्यांकन प्रदान करता है।

खाते देय और प्राप्य: जबकि एस.ए.पी. खातों में देय सभी घटकों और विक्रेताओं के लिए डेटा रिकॉर्ड करता है, एस.ए.पी. खाता प्राप्य ग्राहकों के लिए सभी घटकों और डेटा को रिकॉर्ड करता है। इन मॉड्यूल का उपयोग करके बैलेंस शीट और खाता विवरण तैयार किए जा सकते हैं।

बैंक अकाउंटिंग: इस मॉड्यूलट का उपयोग सभी बैंक अकाउंटिंग लेनदेन को संभालने के लिए किया जाता है। बैंक मास्टर डेटा, कैश बैलेंस मैनेजमेंट से लेकर इनकमिंग और आउटगोइंग पेमेंट्स को प्रोसेस करने तक; इस मॉड्यूल का उपयोग करके सब कुछ प्रबंधित किया जा सकता हैं।

यात्रा प्रबंधन: यह एसएपी मॉड्यूल संगठन के भीतर और उसके द्वारा आयोजित कॉर्पोरेट यात्राओं से संबंधित सभी लेन–देन का लेखा–जोखा रखता है। एस.ए.पी. यात्रा प्रबंधन मॉड्यूल का उपयोग करके अनुमोदन, बुकिंग, निपटान और विविध यात्रा व्यय रिकॉर्ड और प्रबंधित किए जाते हैं।

यह एस.ए.पी. अकाउंटिंग के प्रमुख मॉड्यूल हैं। एस.ए.पी. वित्तीय प्रणाली को अपनाते हुए, संगठन स्वचालित और संगठित तरीके से संपत्ति, राजस्व और व्यय से संबंधित रिकॉर्ड और लेनदेन को बनाए रख सकते हैं। विभिन्न लेखांकन लाभों के कारण, अधिकांश संगठन एक एकीकृत प्रणाली के माध्यम से सभी विभागों के कार्य और वित्त स्थिति के प्रबंधन के लिए एस.ए.पी. वित्तीय और लेखा मॉड्यूल को अपना रहे हैं।

हम एस.ए.पी. एफ.आई. का उपयोग कहाँ करते हैं?

एस.ए.पी. एफ.आई. मॉड्यूल आपको कई कंपनियों, मुद्राओं और भाषाओं के एक अंतरराष्ट्रीय ढांचे के भीतर वित्तीय लेखा डेटा का प्रबंधन करने में सक्षम बनाता है। एस.ए.पी. एफ.आई. मॉड्यूल मुख्य रूप से निम्नलिखित वित्तीय घटकों से संबंधित है –

- निश्चित संपत्ति
- प्रोद्‌भवन
- कैश जर्नल
- प्राप्य और देय खाते
- सूची
- कर लेखांकन
- सामान्य बहीखाता
- फास्ट क्लोज फंक्शन
- वित्तीय विवरण
- समानांतर मूल्यांकन
- मास्टर डेटा शासन ■

स्वतंत्रता आंदोलन की महिला नायिकाएँ

दिव्या शर्मा
कम्पनी सचिव, निगमित कार्यालय

अभिप्रेरणा

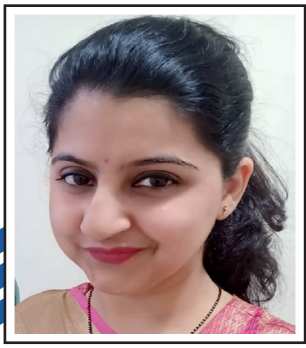

स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में कई ऐसे प्रयास किए गए, जिनसे लोगों के मन में देशभक्ति व देशप्रेम की लहरें उठें और वे कुछ कर गुजरने के लिए तत्पर हो जाएँ। इन्हीं प्रयासों में से एक प्रयास राष्ट्रवादी लेखन का भी था, जिसके माध्यम से लोगों के दिलों को झकझोरा गया। वैसे तो इस स्वतंत्रता संग्राम में पुरूषों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, लेकिन महिलाएँ भी किसी भी तरह से पुरूषों से पीछे नहीं रहीं और अपनी लेखनी के माध्यम से ही देशभक्ति की ज्वाला को लोगों के दिलों में जलाती रहीं।

उस समय टी0 वी0, इंटरनेट का आविष्कार नहीं हुआ था, केवल रेडियो ही चलते थे, जो देश–दुनिया की खबरें देते थे और खबरों का दूसरा स्रोत अखबार या पत्रिकाएँ होती थीं, जिन्हें लोग बड़े मन से पढ़ते थे। इसलिए अनगिनत महिलाओं ने उस समय अपनी पैनी लेखनी का सहारा लिया देशभक्ति के ज्वर को लोगों तक पहुँचाया। इस कड़ी में भारतीय महिलाओं के साथ विदेशी महिलाएँ भी शामिल हुई, जिन्होंने जीवन के अंतिम क्षणों तक भारत देश की सेवा की। इन विदेशी महिलाओं में एनी बेसेन्ट व भगिनी निवेदिता प्रमुख रहीं। ये महिलाएँ भारत देश में सत्य की खोज के लिए आई थीं, लेकिन यहाँ आकर, सहाँ की स्थिति देखकर उनका जीवन भारत की सेवा के लिए समर्पित हो गया।

एनी बेसेन्ट सन् 1913 में ' कॉमन बिल' नामक पत्रिका निकालकर स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं को झोंक दिया और इसके कुछ ही महीनों बाद उन्होंने 'मद्रास स्टैंडर्ड' नामक पत्र को खरीदकर उसका नाम' न्यू इंडिया' रखा। इस पत्र के माध्यम से वे स्वाधीनता के जोशीले लेख लिखती थीं, लेकिन सन् 1917 में इस कार्य के लिए उन्हें गिरफ्तार होना पड़ा। सन् 1929 में उन्होंने' नेशनल कन्वेशन' नामक एक नए आंदोलन की शुरूआत की ।

इसी तरह भगिनी निवेदिता ने भी अपने जीवन को भारत देश की सेवा समर्पित किया। ये मूलतः आयालैंड की रहने वाली थीं और इनका नाम था–मार्गरेट नोबुल। इनके अच्छे विचारों व पवित्र भावनाओं के कारण स्वामी विवेकानंद ने इन्हें शिष्य रूप में स्वीकारा। भारत देश में आकर इन्होंने भारत को ही अपनी कर्मभूमि बना लिया और देशप्रेम की भावनाएँ भरने लगीं।

देशसेवा के लिए समर्पित भारतीय नारियों में ऐसे अनगिनत नाम हैं, जिन्होंने विभिन्न तरीकों से देश की सेवा की । लेकिन लेखनी को हथियार बनाकर लोगों के दिलों को झकझोरनी वाली महिलाओं के भी कई नाम हैं।, जिन्होंने आजादी की लड़ाई का बिगुल बजाया। इनमें सरोजिनी नायडू, स्वर्ण कुमारी देवी, डॉ0 मधुलक्ष्मी रेड्डी , कमला देवी चट्टोपाध्याय, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुशीला देवी, तोरण देवी, अरूण आसफ अली, बालमणि अम्मा आदि नाम प्रमुख हैं।

सरोजिनी नायडू वह चिरपरिचित नाम है, जिन्हें 'भारत कोकिला' के नाम से जाना जाता है। इनकी कविताएँ उत्कृष्ट कोटि की होती थी। जिनमें भारत की आत्मा बसती थी। इन्होंने लेखनी के माध्यम से देशसेवा, राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। अपनी अंग्रेजी शिक्षा द्वारा इन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पश्चिमी जगत में प्रसारित किया।

स्वर्णकुमारी देवी , कविवर रवींद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन थी, जिनका आजादी की लड़ाई में महत्त्वपूर्ण योगदान रहां। इन्होंने 'भारतीय' नामक प्रसिद्ध पत्रिका का सात वर्षो तक सफल संपादन किया। इस पत्रिका के माध्यम से वे समाज में देशभक्ति की चिंगारी सुलगाए रहती थीं और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, रूढ़ियों और कुरीतियों पर जमकर प्रहार करती थीं। सन् 1876 में प्रकाशित होने वाले इनके उपन्यास'दीपनिर्वाह' को राष्ट्रीय चेतना की उत्कृष्ट कृति माना जाता है।

इसके बाद सरला देवी चौधरी ने अपनी माता स्वर्णकुमारी देवी का कार्यभार सँभाला। इन्हें विरासत में पहले से ही वह सब मिला था, जिसकी इन्हें जरूरत थी। और ये वर्षो तक 'भारतीय' पत्रिका द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य करती रहीं। इनके द्वारा लिखित पुस्तक 'बंगेरवीर' को पढ़कर लोग जोश एवं आक्रोश से उबलने लगते थे, ऐसी धधकती ज्वाला को ये अपने अंदर समेटे थीं।

डॉ0 मधुलक्ष्मी रेड्डी जिन्होंने सन् 1930 में 'नमक सत्याग्रह आंदोलन' में गाँधी जी के साथ अपनी गिरफ्तारी दी, अपने लेखों के माध्यम से इन्होंने भारतीय जनमानस में विदेशी हुकूमत

के खिलाफ विद्रोह के स्वर मुखर किए। इस राह में ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के खिलाफ न केवल उन्होंने संघर्ष किया, अपितु अनेकों यातनाएँ भी सहीं। इन्होंने भारत की पहली महिला चिकित्सक होने का गौरव भी प्राप्त किया।

कमला देवी चट्टोपाध्याय जिन्होंने सन् 1927 में 'अखिल भारतीय महिला संगठन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और बाद में इस संगठन की अध्यक्ष बनकर देश की सेवा में अहम भूमिका निभाई, ये अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक क्रांति की अग्रदूत बनीं और'इंडियन वुमेन' 'बैटल फॉर फ्रीडम', 'अवेकनिंग ऑफ इंडियाज वुमैन',जैसी पुस्तकों द्वारा नारी जागरण के साथ–साथ क्रांति की अलग जगाने की सूत्रधार रहीं।

सुभद्राकुमारी चौहान एक ऐसा नाम है, जिनकी कविताओं व गीतों को लोग आज भी गुनगुनाते हैं। आज भी इनकी कविताएँ पढ़कर उमंग व जोश बढ़ जाता है। इन्होंने अपने समय में वीरोचित गीत व कविताएँ लिखकर न केवल क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी, बल्कि खुद भी आगे बढ़कर इस महायज्ञ में अपनी आहुति समर्पित की। 'झांसी की रानी', 'राखी की लाज', 'जालियांवाला' जैसी ओजस्वी रचनाओं द्वारा इन्होंने जो क्रांति की मशाल जलाई, उसकी तपन आज भी बरकरार है।

सुशीला देवी ने अपने लेखों के माध्यम से आजादी के समय लोगों को क्रांतिकारियों के दर्द का एहसास दिलाया। भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव की फाँसी पर इनके द्वारा लिखे गए दर्द भरे लेख उस समय पंजाब के बच्चों की जुबान पर छा गए थे । सुशील देवी मूलतः कवियित्री थीं और क्रांति–गीत लिखना उनका शौक था। इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के समय क्रांतिकारियों के साथ मिलकर काम भी किया था।

तोरणदेवी शुक्ला' लली' को स्वतंत्रता संग्राम की एक विभूति माना जाता है। इनकी कविताओं में राश्ट्रीय भावनाओं की काव्यधारा बहती थी। इन्होंने तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में उग्र रचनाएँ छपवाकर देशवासियों में विद्रोह की चिंगारी सुलगा दी थी। ' जागृति' उनकी ऐसी ही देशप्रेम से भरी कविताओं का संग्रह है, जिसके लिए उन्हें' केसरिया' जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अरूणा आसफ अली को एक समर्पित राष्ट्रभक्त व सच्चे पत्रकार के रूप में सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। इन्होंने आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ' अपने जीवन में इन्हें अनेक पुरस्कार मिले और मरणोपरांत ये 'भारतरत्न' से सम्मानित भी हुई ।

बालमणि अम्मा केरल की एक राष्ट्रवादी साहित्यकार थीं। सन् 1929–39 के मध्य इनकी लिखी कविताओं ने लोगों में देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, की गहरी ललक पैदा की। इनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए इन्हें अपने जीवन–काल में 'पदविभूषण' सहित अनेक अलंकरण मिले।

इस तरह पराधीन भारत में अनेक ऐसी विदुशी नारियाँ हुई हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी के बल पर राष्ट्रवासियों के मन में देशभक्ति ओर बलिदान का ओजस्वी मंत्र फूँका और लोगों की हृदय–तरंगों को झकझोरा। इनकी कृतियाँ आज भी उतनी ही जीवंता व जोशीला हैं, जितनी पहले थीं। हमारा देश ज्ञात व अज्ञात इन महिलाओं के योगदानों के प्रति सदैव ही कृतज्ञ रहेगा। ■

परमात्मा से संबंध

दयावती

वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी)

निगमित कार्यालय

एक बार एक पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पांच सौ रुपये रख दिए। उन्होंने सोचा कि जब मेरी बेटी की शादी होगी तो मैं ये पैसा ले लूंगा। कुछ सालों के बाद जब बेटी सयानी हो गई, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गए।

लेकिन दुकानदार ने नकार दिया और बोला– आपने कब मुझे पैसा दिया था? बताइए! क्या मैंने कुछ लिखकर दिया है?

पंडित जी उस दुकानदार की इस हरकत से बहुत ही परेशान हो गए और बड़ी चिंता में डूब गए।

फिर कुछ दिनों के बाद पंडित जी को याद आया, कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दूं ताकि वे कुछ फैसला कर देंगे और मेरा पैसा मेरी बेटी के विवाह के लिए मिल जाएगा। फिर पंडित जी राजा के पास पहुंचे और अपनी फरियाद सुनाई।

राजा ने कहा–'कल हमारी सवारी निकलेगी और तुम उस दुकानदार की दुकान के पास में ही खड़े रहना। दूसरे दिन राजा की सवारी निकली। सभी लोगों ने फूलमालाएं पहनाईं और किसी ने आरती उतारी।'

पंडित जी उसी दुकान के पास खड़े थे। जैसे ही राजा ने पंडित जी को देखा, तो उसने उन्हें प्रणाम किया और कहा–'गुरु जी! आप यहां कैसे? आप तो हमारे गुरु हैं। आइए! इस बग्घी में बैठ जाइए।'

वो दुकानदार यह सब देख रहा था। उसने भी आरती उतारी और राजा की सवारी आगे बढ़ गई।

थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित जी को बग्घी से नीचे उतार दिया और कहा–'पंडित जी! हमने आपका काम कर दिया है। अब आगे आपका भाग्य। उधर वो दुकानदार यह सब देखकर हैरान था, कि पंडित जी की तो राजा से बहुत ही अच्छी सांठ–गांठ है। कहीं वे मेरा कबाड़ा ही न करा दें।'

दुकानदार ने तत्काल अपने मुनीम से पंडित जी को ढूंढ़कर लाने को कहा। पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार–विमर्श कर रहे थे। मुनीम जी बड़े ही आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले आए।

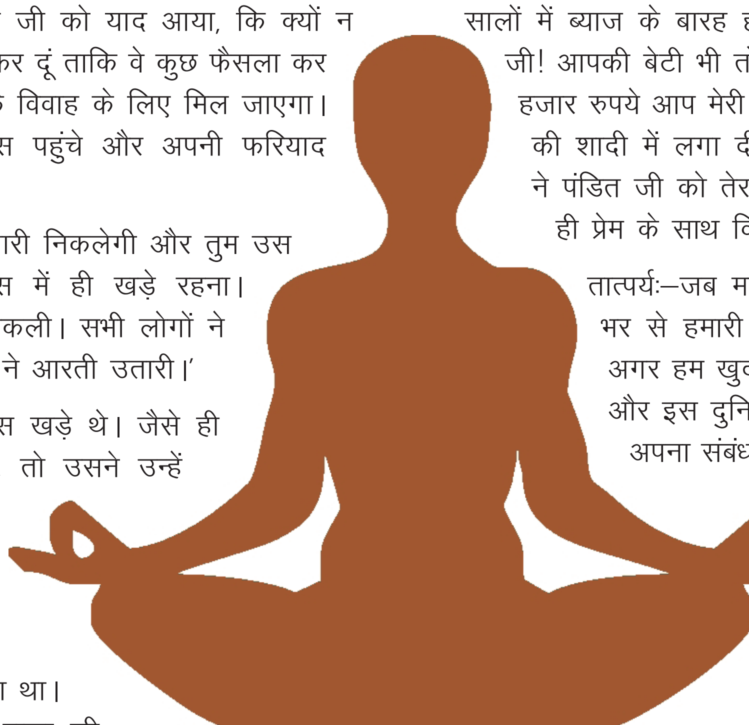

दुकानदार ने आते ही पंडित जी को प्रणाम किया और बोला–'पंडित जी! मैंने काफी मेहनत की और पुराने खातों को देखा, तो पाया कि खाते में आपका पांच सौ रुपया जमा है और पिछले दस सालों में ब्याज के बारह हजार रुपए भी हो गए हैं। पंडित जी! आपकी बेटी भी तो मेरी बेटी जैसी ही है। अतः एक हजार रुपये आप मेरी तरफ से ले जाइए, और उसे बेटी की शादी में लगा दीजिए। इस प्रकार उस दुकानदार ने पंडित जी को तेरह हजार पांच सौ रुपए देकर बड़े ही प्रेम के साथ विदा किया।

तात्पर्यः–जब मात्र एक राजा के साथ संबंध होने भर से हमारी विपदा दूर जो जाती है, तो हम अगर हम खुद से (जो कि परमात्मा का अंश है) और इस दुनिया के राजा यानि कि परमात्मा से अपना संबंध जोड़ लें तो हमें कोई भी समस्या, कठिनाई या फिर हमारे साथ किसी भी तरह के अन्याय का तो कोई प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होगा। तो हमेशा से उस परमात्मा का धन्यवाद करते रहें। और उनके समीप रहें। ■

युधिष्ठिर का यज्ञ और सुनहरा नेवला

उमाशंकर प्रसाद
सहायक, निगमित कार्यालय

कुरुक्षेत्र युद्ध में विजय पाने की खुशी में पांडवों ने राजसूर्य यज्ञ किया। दूर–दूर से हजारों लोग आए। बड़े पैमाने पर दान दिया गया। यज्ञ समाप्त होने पर चारों तरफ पांडवों की जय–जयकार हो रही थी। तभी एक नेवला आया। उसका आधा शरीर सुनहरा था और आधा भूरा। वह यज्ञ भूमि पर इधर–उधर लोटने लगा।

उसने कहा, 'तुम लोग झूठ कहते हो कि इससे वैभवशाली यज्ञ कभी नहीं हुआ। यह यज्ञ तो कुछ भी नहीं है।'

लोगों ने कहा, 'क्या कहते हो, ऐसा महान यज्ञ तो आज तक संसार में हुआ ही नहीं।'

नेवले ने कहा, 'यज्ञ तो वह था जहां लोटने से मेरा आधा शरीर सुनहरा हो गया था।'

लोगों के पूछने पर उसने बताया, 'एक गांव में एक गरीब ब्राह्मण अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू के साथ रहता था। कथा कहने से जो थोड़ा बहुत मिलता था, उसी में सब मिल जुल कर खाते थे। एक बार वहां अकाल पड़ गया। कई दिन तक परिवार में किसी को अन्न नहीं मिला। कुछ दिनों बाद उसके घर में कुछ आटा आया। ब्राह्मणी ने उसकी रोटी बनाई और खाने के लिए उसे चार भागों में बांटा। किंतु जैसे ही वे भोजन करने बैठे, दरवाजे पर एक अतिथि आ गया। ब्राह्मण ने अपने हिस्से की रोटी अतिथि के सामने रख दी, मगर उसे खाने के बाद भी अतिथि की भूख नहीं मिटी। तब ब्राह्मणी ने अपने हिस्से की रोटी उसे दे दी। इससे भी उसका पेट नहीं भरा तो बेटे और पुत्रवधू ने भी अपने–अपने हिस्से की रोटी दे दी। अतिथि सारी रोटी खाकर आशीष देता हुआ चला गया। उस रात भी वे चारों भूखे रह गए। उस अन्न के कुछ कण जमीन पर गिरे पड़े थे। मैं उन कणों पर लोटने लगा तो जहां तक मेरे शरीर से उन कणों का स्पर्श हुआ, मेरा शरीर सुनहरा हो गया। तब से मैं सारी दुनिया में घूमता फिरता हूं कि वैसा ही यज्ञ कहीं और हो, लेकिन वैसा कहीं देखने को नहीं मिला, इसलिए मेरा आधा शरीर आज तक भूरा ही रह गया है।'

उसका आशय समझ युधिष्ठिर लज्जित हो गए। ■

सबसे कीमती चीज

अजय कपिला
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), निगमित कार्यालय

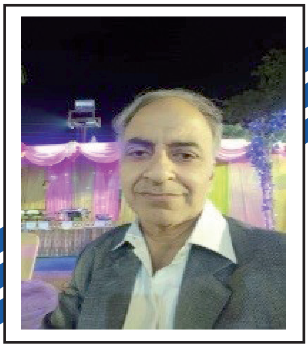

एक जाने–माने स्पीकर ने हाथ में पांच सौ का नोट लहराते हुए अपनी सेमीनार शुरू की। हॉल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा, "ये पांच सौ का नोट कौन लेना चाहता है?" हाथ उठना शुरू हो गए।

फिर उसने कहा, "मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा पर उससे पहले मुझे ये कर लेने दीजिये।" और उसने नोट को अपनी मुट्ठी में मोड़ना शुरू कर दिया और फिर उसने पूछा," कौन है जो अब भी यह नोट लेना चाहता है?" अभी भी लोगों के हाथ उठने शुरू हो गए।

"अच्छा" उसने कहा,"अगर मैं ये कर दूं ?" और उसने नोट को नीचे गिराकर पैरों से कुचलना शुरू कर दिया। उसने नोट उठाया, वह बिल्कुल मुड़ा हुआ और गन्दा हो गया था।

"क्या अभी भी कोई है जो इसे लेना चाहता है?" और एक बार फिर हाथ उठने शुरू हो गए।

"दोस्तों, आप लोगों ने आज एक बहुत महत्त्वपूर्ण पाठ सीखा है। मैंने इस नोट के साथ इतना कुछ किया पर फिर भी आप इसे लेना चाहते थे क्योंकि ये सब होने के बावजूद नोट की कीमत घटी नहीं, उसका मूल्य अभी भी 500 था।

जीवन में कई बार हम गिरते हैं, हारते हैं, हमारे लिए हुए निर्णय हमें मिट्टी में मिला देते हैं। हमें ऐसा लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है। लेकिन आपके साथ चाहे जो हुआ हो या भविष्य में जो हो जाए, आपका मूल्य कम नहीं होता। आप स्पेशल हैं, इस बात को कभी मत भूलिए।

कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल के सपनो को बर्बाद मत करने दीजिये। याद रखिये आपके पास जो सबसे कीमती चीज है, वो है आपका जीवन।" ■

गुब्बारे वाला

नीतू चौधरी
धर्मपत्नी श्री मनोज कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (सतर्कता),
निगमित कार्यालय

एक आदमी गुब्बारे बेच कर जीवन–यापन करता था। वह गाँव के आस–पास लगने वाले हाटों में जाता और गुब्बारे बेचता। बच्चों को लुभाने के लिए वह तरह–तरह के गुब्बारे रखताः लाल, पीले , हरे, नीले और जब कभी उसे लगता की बिक्री कम हो रही है। वह झट से एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता, जिसे उड़ता देखकर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारे खरीदने के लिए पहुँच जाते।

इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारे बेच रहा था और बिक्री बढ़ाने के लिए बीच–बीच में गुब्बारे उड़ा रहा था। पास ही खड़ा एक छोटा बच्चा ये सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था। इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफ़ेद गुब्बारा उड़ाया वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला, "अगर आप ये काला वाला गुब्बारा छोड़ेंगे...तो क्या वो भी ऊपर जाएगा ?"

गुब्बारा वाले ने थोड़े अचरज के साथ उसे देखा और बोला, "हाँ बिलकुल जाएगा। बेटे! गुब्बारे का ऊपर जाना इस बात पर नहीं निर्भर करता है कि वो किस रंग का है बल्कि इस पर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है।"

दोस्तों, ठीक इसी तरह हम इंसानों के लिए भी ये बात लागू होती है। कोई अपने जीवन में क्या प्राप्त करेगा, ये उसके बाहरी रंग–रूप पर निर्भर हीं करता है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या हैं। अंततः हमारा attitude हमारा altitude decide करता है। ■

नियत पापा की कार...

मनोहर लाल
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), निगमित कार्यालय

एक मेहनती और ईमानदार नौजवान बहुत पैसे कमाना चाहता था क्योंकि वह गरीब था और बदहाली में जी रहा था। उसका सपना था कि वह मेहनत करके खूब पैसे कमाये और एक दिन अपने पैसे से एक कार खरीदे। जब भी वह कोई कार देखता तो उसे अपनी कार खरीदने का मन करता।

कुछ साल बाद उसकी अच्छी नौकरी लग गयी। उसकी शादी भी हो गयी और कुछ ही वर्षों में वह एक बेटे का पिता भी बन गया। सब कुछ ठीक चल रहा था मगर फिर भी उसे एक दुख सताता था कि उसके पास उसकी अपनी कार नहीं थी। धीरे–धीरे उसने पैसे जोड़ कर एक कार खरीद ली। कार खरीदने का उसका सपना पूरा हो चुका था और इससे वह बहुत खुश था। वह कार की बहुत अच्छी तरह देखभाल करता था और उसमें शान से घूमता था।

एक दिन रविवार को वह कार को रगड़–रगड़ कर धो रहा था। यहां तक कि गाड़ी के टायरों को भी चमका रहा था। उसका 5 वर्षीय बेटा भी उसके साथ था। बेटा भी पिता के आगे पीछे घूम–घूम कर कार को साफ होते देख रहा था। कार धोते–धोते अचानक उस आदमी ने देखा कि उसका बेटा कार के बोनट पर किसी चीज़ से खुरच–खुरच कर कुछ लिख रहा है।

यह देखते ही उसे बहुत गुस्सा आया। वह अपने बेटे को पीटने लगा। उसने उसे इतनी ज़ोर से पीटा कि बेटे के हाथ की एक उंगली ही टूट गयी।

दरअसल वह आदमी अपनी कार को बहुत चाहता था और वह बेटे की इस शरारत को बर्दाश्त नहीं कर सका। बाद में जब उसका गुस्सा कुछ कम हुआ तो उसने सोचा कि जा कर देखूं कि कार में कितनी खरोंच लगी है। कार के पास जा कर देखने पर उसके होश उड़ गये। उसे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था। वह फूट–फूट कर रोने लगा। कार पर उसके बेटे ने खुरच कर लिखा था–

Papa, I love you.

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि किसी के बारे में कोई गलत राय रखने से पहले या गलत फैसला लेने से पहले हमें ये ज़रूर सोचना चाहिये कि उस व्यक्ति ने वह काम किस नियत से किया है। ■

ईश्वर की कृपा...

कृष्णलाल
सहायक अधिकारी (तकनीकी), निगमित कार्यालय

एक संत ने एक रात स्वप्न देखा कि उनके पास एक देवदूत आया है, देवदूत के हाथ में एक सूची है। उसने कहा, यह उन लोगों की सूची है, जो प्रभु से प्रेम करते हैं।'

संत ने कहा–'मैं भी प्रभु से प्रेम करता हूँ, मेरा नाम तो इसमें अवश्य होगा।'

देवदूत बोला–'नहीं, इसमें आप का नाम नहीं है।'

संत उदास हो गए – फिर उन्होंने पूछा–'इसमें मेरा नाम क्यों नहीं है। मैं ईश्वर से ही नहीं अपितु गरीब, असहाय, जरूरतमंद सबसे प्रेम करता हूं। मैं अपना अधिकतर समय दूसरो की सेवा में लगाता हूँ, उसके बाद जो समय बचता है उसमें प्रभु का स्मरण करता हूँ।'

तभी संत की आंख खुल गई। दिन में वह स्वप्न को याद कर उदास थे, एक शिष्य ने उदासी का कारण पूछा तो संत ने स्वप्न की बात बताई और कहा–'वत्स, लगता है सेवा करने में कहीं कोई कमी रह गई है। तभी मैं ईश्वर को प्रेम करने वालो की सूची में नहीं हूँ'

दूसरे दिन संत ने फिर वही स्वप्न देखा, वही देवदूत फिर उनके सामने खड़ा था। इस बार भी उसके हाथ में कागज था।

संत ने बेरुखी से कहा–'अब क्यों आए हो मेरे पास – मुझे प्रभु से कुछ नहीं चाहिए।'

देवदूत ने कहा–'आपको प्रभु से कुछ नहीं चाहिए, लेकिन प्रभु का तो आप पर भरोसा है। इस बार मेरे हाथ में दूसरी सूची है।'

संत ने कहा–'तुम उनके पास जाओ जिनके नाम इस सूची में हैं, मेरे पास क्यों आए हो ?'

देवदूत बोला–'इस सूची में आप का नाम सबसे ऊपर है।'

यह सुन कर संत को आश्चर्य हुआ – बोले–'क्या यह भी ईश्वर

से प्रेम करने वालों की सूची है।'

देवदूत ने कहा– नहीं, यह वह सूची है जिन्हें प्रभु प्रेम करते हैं, ईश्वर से प्रेम करने वाले तो बहुत हैं, लेकिन प्रभु उसको प्रेम करते हैं जो सभी से प्रेम करता हैं। प्रभु उसको प्रेम नहीं करते जो दिन रात कुछ पाने के लिए प्रभु का गुणगान करते है। प्रभु आप जैसे निर्विकार, निस्वार्थ लोगो से ही प्रेम करते है।

संत की आँखे गीली हो चुकी थी – उनकी नींद फिर खुल गयी – वो आँसू अभी भी उनकी आँखों में थे।

'जो सचमुच दयालु है, वही सचमुच बुद्धिमान है, और जो दूसरों से प्रेम नहीं करता उस पर ईश्वर की कृपा नहीं होती'।

"भक्ति के अन्दर भगवान को खींचने की शक्ति है. बाकी सब साधन भगवान को सिर्फ प्रसन्न कर सकते हैं, खींच नहीं सकते। भक्ति का स्वरुप निराला होता है।" ■

चार मोमबत्तियां

कान्ता
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

रात का समय था, चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था, नज़दीक ही एक कमरे में चार मोमबत्तियां जल रही थीं। एकांत पा कर आज वे एक दुसरे से दिल की बात कर रही थीं।

पहली मोमबत्ती बोली, "मैं शांति हूँ, पर मुझे लगता है अब इस दुनिया को मेरी ज़रुरत नहीं है, हर तरफ आपाधापी और लूट–मार मची हुई है, मैं यहाँ अब और नहीं रह सकती . . ." और ऐसा कहते हुए, कुछ देर में वो मोमबत्ती बुझ गयी।

दूसरी मोमबत्ती बोली , "मैं विश्वास हूँ, और मुझे लगता है झूठ और फरेब के बीच मेरी भी यहाँ कोई ज़रुरत नहीं है, मैं भी यहाँ से जा रही हूँ . . .", और दूसरी मोमबत्ती भी बुझ गयी।

तीसरी मोमबत्ती भी दुखी होते हुए बोली , "मैं प्रेम हूँ, मेरे पास जलते रहने की ताकत है, पर आज हर कोई इतना व्यस्त है कि मेरे लिए किसी के पास वक्त ही नहीं, दूसरों से तो दूर लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे हैं, मैं ये सब और नहीं सह सकती मैं भी इस दुनिया से जा रही हूँ . . ." और ऐसा कहते हुए तीसरी मोमबत्ती भी बुझ गयी।

वो अभी बुझी ही थी कि एक मासूम बच्चा उस कमरे में दाखिल हुआ।

मोमबत्तियों को बुझे देख वह घबरा गया, उसकी आँखों से आंसू टपकने लगे और वह रुंआसा होते हुए बोला "अरे , तुम मोमबत्तियां जल क्यों नहीं रही, तुम्हे तो अंत तक जलना है ! तुम इस तरह बीच में हमें कैसे छोड़ के जा सकती हो ?"

तभी चौथी मोमबत्ती बोली, "प्यारे बच्चे घबराओ नहीं, मैं आशा हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ हम बाकी मोमबत्तियों को फिर से जला सकते हैं।"

यह सुन बच्चे की आँखें चमक उठीं, और उसने आशा के बल पे शांति, विश्वास, और प्रेम को फिर से प्रकाशित कर दिया।

मित्रों, जब सबकुछ बुरा होते दिखे, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नज़र आये, अपने भी पराये लगने लगें तो भी उम्मीद मत छोड़िये . . .

आशा मत छोड़िये, क्योंकि इसमें इतनी शक्ति है कि ये हर खोई हुई चीज आपको वापस दिला सकती है। अपनी आशा की मोमबत्ती को जलाये रखिये,बस अगर ये जलती रहेगी तो आप किसी भी और मोमबत्ती को प्रकाशित कर सकते हैं। ■

आज ही क्यों नहीं

अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर–सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन–संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने का पूरा सामर्थ्य होता है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली।

एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा – 'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा दो दिन के लिए दे कर किसी दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।'

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते–करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर–चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े–बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा की अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। परन्तु आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी–जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर–चूर हो गया। इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं। इसलिए मैं यही कहना चाहती हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये – "आज ही क्यों नहीं ?" ■

भगवान की खोज

रमन पॉल
सहायक विपणन प्रबंधक, निगमित कार्यालय

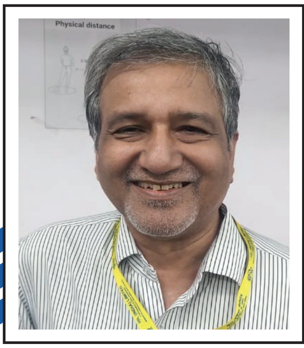

एक बार संत नामदेव अपने शिष्यों को ज्ञान–भक्ति का प्रवचन दे रहे थे। तभी श्रोताओं में बैठे किसी शिष्य ने एक प्रश्न किया , "गुरुवर, हमें बताया जाता है कि ईश्वर हर जगह मौजूद है, पर यदि ऐसा है तो वो हमें कभी दिखाई क्यों नहीं देता, हम कैसे मान लें कि वो सचमुच है और यदि वो है तो हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?"

नामदेव मुस्कुराये और एक शिष्य को एक लोटा पानी और थोड़ा सा नमक लाने का आदेश दिया।

शिष्य तुरंत दोनों चीजें लेकर आ गया।

वहां बैठे शिष्य सोच रहे थे कि भला इन चीजों का प्रश्न से क्या संबंध, तभी संत नामदेव ने पुनः उस शिष्य से कहा, "पुत्र, तुम नमक को लोटे में डाल कर मिला दो।"

शिष्य ने ठीक वैसा ही किया।

संत बोले , " बताइये, क्या इस पानी में किसी को नमक दिखाई दे रहा है ?"

सबने 'नहीं' में सिर हिला दिए।

"ठीक है!,अब कोई ज़रा इसे चख कर देखे, क्या चखने पर नमक का स्वाद आ रहा है ?", संत ने पुछा।

"जी", एक शिष्य पानी चखते हुए बोला।

"अच्छा, अब जरा इस पानी को कुछ देर उबालो।", संत ने निर्देश दिया।

कुछ देर तक पानी उबलता रहा और जब सारा पानी भाप बन कर उड़ गया , तो संत ने पुनः शिष्यों को लोटे में देखने को कहा और पुछा, "क्या अब आपको इसमें कुछ दिखाई दे रहा है ?"

"जी, हमें नमक के कण दिख रहे हैं।", एक शिष्य बोला।

संत मुस्कुराये और समझाते हुए बोले,"जिस प्रकार तुम पानी में नमक का स्वाद तो अनुभव कर पाये पर उसे देख नहीं पाये। उसी प्रकार इस जग में तुम्हे ईश्वर हर जगह दिखाई नहीं देता पर तुम उसे अनुभव कर सकते हो और जिस तरह अग्नि के ताप से पानी भाप बन कर उड़ गया और नमक दिखाई देने लगा उसी प्रकार तुम भक्ति, ध्यान और सत्कर्म द्वारा अपने विकारों का अंत कर भगवान को प्राप्त कर सकते हो।" ■

हास्य ही जीवन है

सुख चंद
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

कहा जाता है जल ही जीवन है, लेकिन जीवन में हास्य का एक अलग ही महत्व हैं।जीवन को जीने का तरीका हर प्राणी का अलग–अलग होता है हर इंसान एक दूसरे से मुस्कान के जरिए जुड़ा रहता है।

यह मुस्कान मनुष्य का प्रकृति प्रदत प्रवृत्ति है जिससे दो अनजान और अपरिचित एक दूसरे के करीब दूरियों को मिटाती है। भले ही हर की भाषा समझ में आये या न आये लेकिन हंसी और मुस्कुराहट की भाषा सब के लिए एक ही होती है। तनावपूर्ण जीवन में हास्य का एक अलग ही विशेष महत्व है। जो विपरीत परिस्थितियों को नजरअंदाज करने खुश करने और रहने की प्रेरणा देता है। परेशानियों को कम करके समझना और जीवन की छोटी–छोटी खुशियों को जी भर के जीना ही अच्छी सेहत की निशानी है। हंसना–मुस्कुराना किसी दौर का मोहताज नहीं है लेकिन वर्तमान काल में हंसने की प्रवृत्ति में गिरावट की वजह कहीं ना कहीं अस्त–व्यस्त जीवनशैली, भागती दिनचर्या और तनाव से से भरा जीवन का वातावरण है जिस कारण व्यक्ति अच्छी नींद और सुकून की जिंदगी से काफी दूर चला गया हैं जहाँ हसना भी न सहज है न संभव। तनाव और बोझिल जिंदगी में हंसने का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता है

जीवन में हंसने बोलने का बहुत महत्त्व है। खुश रहने वाले लोगों बीमारियाँ कम घेरती हैं। कहते हैं कि हंसने से अनेक बीमारियाँ ठीक भी हो सकती है , व्यक्ति तंदुरुस्त रहता है, शरीर में चुस्ती आती है, शारीरिक और मानसिक विकास होता है। एक गंभीर व्यक्ति दूसरों की हर बात को गंभीर रूप से लेकर स्वयं भी दुखी होकर दूसरों को भी कष्ट भी देता है। हिंदी साहित्य में नव रस हैं जिनमे एक हास्य रस है। हास्य रस एक ऐसी कला है जो हंसने वाले को तो स्वस्थ और दीर्घाऊ बनाती ही है और सकारात्मक उर्जा से माहौल को खुशनुमा बनती है। हास्य एक रामबाण और अचूक उपचार है। आजकल ऐसे क्लब भी प्रचलन में हैं जहा हंसी को थेरेपी के रूप में इस्तेमाल करके लोगों को सकारात्मक जीवन जीने का संदेश दिया जाता है। क्योंकि हसने से मुख की मांसपेशियों का व्यायाम,रक्त संचरण सामान्य रहता है। मूक प्राणी के करतब अपने हाव–भाव से मनुष्य में खुशी का एहसास करते है। मोर का नृत्य, बंदरों का नाच, आदि

आजकल डाक्टर भी लाफ्टर थेरेपी के जरिये कई बीमारियों का इलाज कर रहें है। लाफ्टर एक थेरेपी ही तो है जो आपकी सारी बीमारियों व् तकलीफों को छोटा कर देती है और जीवन को खुशी से जीने की चाहत को बहुत बड़ा बना देती है। ■

जल ही जीवन है

ओम प्रकाश साह
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिक जब अन्य ग्रहों पर यान भेजते हैं या स्यंम जाते हैं तो सबसे पहले उन ग्रहों पर जल की तलाश करते हैं। अगर जल है तो वहाँ जीवन होने की संभावना मानते हैं।

हमारे देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीश चंद्र बसु ने विज्ञान से प्रमाणित कर दिया था कि पेड़ों में भी प्राण हैं। लेकिन हमारे ज्ञान के मूलधार वेदों ने पहले ही कह दिया कि जो वस्तु बिना पानी के मुरझा जए तो समझिए, उसमें प्राण है। पेड़ बिना पानी के मुरझा जाएँगे, अतः उनमें प्राण तत्त्व है। अतः यह तो निर्विवाद है कि जल ही जीवन है।

सारी पृथ्वी में तीन–चौथाई भाग जल है तथा केवल एक चौथाई भाग ही जमीन है। अतः जल की प्रधानता है। इनसान भी बिना भोजन के तो कई दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन बिना जल के वह कितने दिन तक जीवित रह सकेगा ? अगर एक वर्षा न हो तो सारी पृथ्वी पर हाहाकार मच जाएगा। हमारे अनाज, फल,सब्जी, यानी सारे खाद्य पदार्थ बिना जल के पैदा ही नहीं हो सकते। इस प्रकार, जीवन में जीने के लिए जल की ही प्रधानता है। जल में ही यौवन एवं सौंदर्य को सुरक्षित रखने की क्षमता है।

मनुष्य के लिए जल प्रकृति का उपहार है। जीव के पैदा होने के पहले जल पैदा हो चुका था। जल में ही जीवन का प्रारंभ माना गया। केवल मानव के लिए ही नहीं, अपितु सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों के साथ वनस्पतियों के लिए भी जल वरदान है। इसके अभाव में प्राणी जगत् की कल्पना तक नहीं की जा सकती। जल की आवश्यकता न सिर्फ पीने के लिए होती है, वरन् कपड़ा धोने, नहाने, खाना बनाने, सफाई करने आदि के लिए भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कृषि, विद्युत्–उत्पादन, मत्स्य–पालन आदि विभिन्न उद्योगों में जल की अधिक आवश्यकता है।

हमारे शास्त्रों में लिखा है कि अजीर्णे भैशजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्–अर्थात् अजीर्ण में पानी दवा का काम करता है और भोजन पचने के बाद पानी पीने से शरीर में बल होता है। बहुत से रोगों में यह दवा का काम करता है। ठंडे एवं गरम जल में

अलग–अलग औषधीय गुण हैं। कई रोगों में ठंडा पानी एवं कई रोगों में गरम पानी दवा का काम करता है गरम पानी का लाभ वात रोगों, जोड़ों का दर्द, कमर का दर्द, घुटने का दर्द, गठिया तथा कंधे की जकड़न में होता है। इसमें गरम पानी का या भाप का सेंक दिया जाता है आग से जलने एवं झुलसने पर तुरंत जले या झुलसे अंग को ठंडे पानी में कम–से–कम एक घंटे डुबोकर रखें। उससे शांति मिलेगी, जलन दूर होगी, घाव या फफोला नहीं होगा। यदि पूरा शरीर जल जाए तो तुरंत उसको बड़े पानी के होज या तालाब में डुबो दें। केवल साँस लेने के लिए नाक को पानी से बाहर रखें।

वैद्य तथा प्राकृतिक चिकित्सक बताते हैं कि रात में नींद न आती हो तो सोने से पहले दोनों पैरों को घुटने तक सहने योग्य गरम पानी से भरी बालटी या टब में पंद्रह मिनट डुबोए रखें। इसके बाद पैरों को बाहर निकालकर पोंछ लें और सो जाएँ। नीद आएगी। यह ध्यान रखें कि जब गरम पानी में पैर डुबोएँ तब सिर पर ठंडे पानी में भिगोया व निचोड़ा हुआ तौलिया अवश्य रखें। ज्यादा उलटी–दस्त होने पर डॉक्टर कहते हैं कि इनको डिहाइड्रेशन हो गया, अतः तुरंत पानी या तो पिलाया जाता है या सेलाइन वाटर चढ़ाया जाता है। पानी अगर समय से नहीं पिलाया या चढ़ाया गया तो मृत्यु तक हो जाती है।

प्रातः उठते ही बासी मुँह पानी पीना अमृत–तुल्य माना गया है। कम–से–कम तीन–चार गिलास पानी चाहिए। पानी से पेट मल निकलने पर साफ होगा ही, मूत्र के द्वारा भी शरीर के विजातीय द्रव्य निकल जाते हैं। ठंडे जल से नेत्रों में छींटे मारना भी नेत्र को विकारों से दूर रखता है तथा दृष्टि सही बनी रहती है। नहाते

वक्त जल से रगड़कर नहाने से शरीर के विकार भी निकल जाते हैं। दिन भर में कम–से–कम आठ गिलास पानी पीना हितकर है इससे शरीर के दूषित द्रव्य तरल होकर मल–मूत्र, पसीने तथा श्वास के द्वारा बाहर निकल जाते हैं। उपवास के दिनों में थोड़ा–थोडा जल पीना तथा एनीमा लेना लाभप्रद होता है।

संभोग के तुरंत बाद एवं व्यायाम के तुरंत बाद पानी नहीं पीना चाहिए। भोजन के एक घंटे पहले तथा एक घंटे बाद पानी पीना चाहिए। भोजन के साथ जल पीना हानिकारक होता है। दिन में दो–तीन घंटे के अंतराल पर जल अवश्य पीना चाहिए। लू तथा गरमी लग जाने पर ठंडा जल और सर्दी लग जाने पर थोड़ा गरम जल पीना चाहिए। इससे शरीर को राहत मिलती है।

एसीडिटी (अम्लता) की बीमारी में अधिक पानी पीने से पेट तथा पाचन नली के अंदर की कोमल सतह जलने से बचती है। उपवास के समय जल में नीबू के रस को डालकर एक–एक घंटे पर जल पीना चाहिए, जिससे पाचन अंग जल पचाने में लगे रहेंगे तथा शरीर से जहर भी निकल जाएगा।

रात को सोने से पहले भी जल पीने से अच्छी नींद आती है। इस प्रकार, जीवन में जल का अति महत्त्वपूर्ण स्थान न कहकर इसे ये कहना अधिक उचित है कि 'जल ही जीवन है'।

हमने पहाड़, नदी तालाब, कुएँ, समुद्र आदि को इतना महत्त्व दिया, क्योंकि ये सभी जल के स्रोत हैं। हमारे देश की सारी सभ्यता व संस्कृति का विकास नदियों के किनारे हुआ। पुराने जमाने में परिवहन का साधन भी हमारी नदियाँ ही थीं। साधु–संतों ने भी अपने आश्रम नदी किनारे बनाए, ताकि जल की उपलब्धता सुगमतापूर्वक बनी रहे। हम मुर्दे को स्नान के उपरांत ही अर्थी पर लेटाते हैं। चिता पर रखने से पहले भी गंगा–स्नान का विधान है तथा जलने के उपरांत भी राख को गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। जन्म एवं विवाह के बवसर पर गंगा–पुजैया होती है–यानी जनमते ही जल से परिचय कराया जाता है। तथा विवाह में भी नई गृहस्थी बसाने पर जल की महिमा का परिचय कराया जाता है।

बिना जल के हमारा कोई धार्मिक विधान नहीं होता। हम भगवान् शंकर पर भी जलाभिषेक करते हैं। गंगा–स्नान में नित्य जल से ही सूर्य भगवान् को अर्घ्य देते हैं। घर पर भी नहाने के बाद भगवान् सूर्य को अर्घ्य देने का विधान है। अतः जीवित रहने के लिए जल चाहिए, स्वस्थ एवं सुंदर रहने के लिए जल चाहिए। जल नही ंतो जीवन नहीं अतः जल ही जीवन है। ■

आप चाहें तो बीमार नहीं पड़ सकते

प्रकाश सिंह सौन
प्रचालक श्रेणी–II, निगमित कार्यालय

मेरे अच्छे स्वास्थ्य को देखकर किसी ने कहा कि आप पर भगवान् की बड़ी कृपा है। मैंने उससे पूछा कि मेरे पर भगवान् की ऐसी कौन सी कृपा है, जो आप पर या किसी अन्य पर नहीं है? क्या आपको भगवान् सूर्य का प्रकाश कम मिलता है? क्या माँ गंगा आपकों अपनी ध ाारा में नहाने से मना करती हैं? क्या धरती माता आपको कोई कष्ट देती हैं? क्या वायु देवता से आपको कोई तकलीफ है? इस प्रकार, जब मैंने पूछा तो पुनः उन्होंने कहा कि आप बड़े भाग्यशाली हैं। मैंने कहा कि भाग्य क्या है और उसका निर्माण कैसे होता है? मैंने कहा कि हमने कर्म किया, जिसका फल अभी तक नहीं मिला और आज मिल रहा है तो वह हमारे लिए भाग्य बनकर आएगा। तो भाग्य की परिभाषा हुई कि आज का भाग्य पूर्व में किए हुए कर्म का ही प्रतिफल है। मनुष्य की प्रायः यह कमजोरी है कि किसी भी क्षेत्र की दूसरे की उपलब्धि को भगवान् की कृपा या भाग्य से जोड़कर अपने को संतुष्ट कर लेता है। उस उपलब्धि के पीछे उसके कर्म, त्याग, तपस्या, बलिदान, अभ्यास, वैराग्य की अनदेखी कर देगा। वह यह जानने की चेष्टा नहीं करता कि उपलब्धि कृपासाध्य नहीं, क्रियासाध्य है।

मनुष्य दो कारण से बीमार पड़ता है–एक अपनी गलती से, दूसरा अज्ञात कारणों से। अपनी गलती से बीमार पड़ने वालों की संख्या 99 प्रतिशत है, जब कि केवल 1 प्रतिशत व्यक्ति ही ऐसे हैं जो अज्ञात कारणों से बीमार होते हैं। डॉक्टर मना करते हैं कि तुम्हारे लिए पान, पान मसाला, जर्दा, खैनी, शराब आदि हानिकर हैं। इनका सेवन बेद करो। भोजन में भी परहेज बताएँगे। लेकिन मरीज कहेगा कि डॉक्टर साहब, दवा ऐसी दीजिए कि सभी चीजों का सेवन भी करता रहूँ और रोग भी दूर हो जाए। चूँकि संसार में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, अतः ऐसे व्यक्ति का निरोग होने का प्रश्न ही नहीं है। वह जिंदगी भर दवा के बल पर जीवन को ढोएगा, जिंदगी जीने का आनंद नहीं ले पाएगा। कुछ कर गुजरने की तमन्ना उसकी कभी पूरी नहीं होगी। मैंने अच्छे–अच्छे डॉक्टर–वैद्यों को देखा है। वे स्वयं मरीज हैं और घरवालों के मना करने पर भी शराब या पान जैसी छोटी–छोटी आदतों से अपने को नहीं बचा सके। तो ऐसे व्यक्ति को, चाहे वह डॉक्टर ही क्यों न हो, बीमार रहना ही पड़ेगा। कारण, हम अपनी गलत आदतों के गुलाम हैं। हम क्यों नहीं सोचते कि दूसरा व्यक्ति बिना पान, पान मसाला या शराब के रह सकता है और स्वस्थ है तो हम क्यों नहीं रह सकते ? आपकी संकल्प–शक्ति ही आपको गलत आदतों से बचा पाएगी। स्वस्थ रहने के लिए गलत आदतों से बचना आवश्यक है।

दूसरा व्यक्ति, जो अज्ञात कारणें से बीमार होता है, उसका कारण है कहीं का पानी पी लिया या भोजन कर लिया या किसी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आया, जिसको छुआछूत की बीमारी है तो स्वाभाविक है, ऐसे व्यक्ति भी अज्ञात कारणों से बीमार पड़ सकता है, लेकिन ऐसे व्यक्ति को ठीक होने में देर नहीं लगती और फिर हमेशा दवा लेने की आवश्यकता नहीं होती।

एक व्यक्ति को जब डॉक्टर ने कहा कि तुमहारे शरीर में बहुत से रोग हैं। तुम को अमुक–अमुक चीजें छोड़नी पड़ेंगी, तो उसने कहा कि आप चाहे कितनी भी महँगी दवा दें, लेकिन उनको छोड़ने के लिए न कहें। तो डॉक्टर ने कहा कि ऐसी दवा मेरे पास नहीं है। तुम्हारी आयु मा्त्र 30 दिन है। अब सिर में कफन बाँधकर जिओ। तो पुनः वह व्यक्ति कहता है कि जब इतनी चीजें छोड़नी ही हैं तो शरीर ही छूट जाए। यानी वह व्यक्ति जब खाने के लिए जी रहा है तो उसको जितना आवश्यक है उतना ही खाना चाहिए, न कि स्वाद के वशीभूत होकर।

बीमारी से बचने का पहला सूत्र है–आवश्यकतानुसार भोजन करना तथा इच्छानुसार भोजन करने से बचना।दूसरा सूत्र है पान, पान मसाला, सिगरेट, शराब, खैनी, जर्दा आदि के सेवन से अपने को बचाकर रखना। इन सबका सेवन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक नहीं। सदा भोजन करना एवं अखाद्य पदार्थों से परहेज आपको बीमारी से दूर रखेगा, आपको कभी उदासी एवं आलस्य नहीं सताएगा और आप अपने तन–मन को हमेशा कार्य में प्रवृत्त रख सकेंगे।

बीमार नहीं रहने का तीसरा सूत्र–प्रतः भ्रमण का नियमित अभ्यास तथा कुछ योगाभ्यास भी। ये दोनों क्रियाएँ भी नियमित होनी चाहिए। आप चाहें देश में रहें या परदेश में या विदेश में, लेकिन अभ्यास में कभी नहीं आनी चाहिए। जहाँ विवशता है, जैसे ट्रेन

आदि में, तो उसका कोई उपाय नहीं, वरना नियमित प्रतः भ्रमण तथा कुछ नियमित यौगिक क्रियाएँ आपको स्वस्थ एवं प्रसन्न रखेंगी। बीमारी आप से दूर रहेगी। आप भी प्रसन्न रहेंगे तथा दूसरों को प्रसन्न रख सकेंगे।

बीमार नहीं होने का चौथा सूत्र–अपने पेट को हमेशा साफ रखें। सारी बीमारी की जड़ है पेट की कब्जियत। कब्जियत से बचने के लिए फलों का सेवन नियमित करें। पपीता आकर बेल पेट को साफ रखने में सहायक हैं। या मौसमी फलों का सेवन भी लाभदायक है। आँवला नवंबर से जनवरी तक तीन माह नियमित आता है। अगर आँवला का नियमित सेवन करें तो यह स्नायु–तंत्र को पुष्ट करता है, साथ ही आपको ओज तथा कांति भी प्रदान करता है। भोजन भी भूख से कम करना चाहिए। इससे आपको कभी अपच नहीं होगा। भूख लगेगी तथा भूख के समय भोजन भी स्वादिष्ट लगेगा।

यह शरीर पंच तत्त्वों का बना है। इस पंच तत्त्व के शरीर का पंच तत्त्व से ही इलाज करें तो वह प्राकृतिक चिकित्सा होगी और सर्वोत्तम होगी मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। ये ऐसे पाँच मौलिक तत्त्व हैं, जिनके समुचित सेवन से मनुष्य अपने शरीर को स्वस्थ रख सकता है।

मनुष्य स्वस्थ रहना चाहे तो उसकी दिनचर्या निश्चित होनी चाहिए। शरीर को भी विश्राम उतना दें कि वह पुनः श्रम करने लायक हो जाए। आवश्यकता से अधिक विश्राम भी आलस्य पैदा करता है । श्रम से परहेज न करें। कारण, मनुष्य श्रम से नहीं थकता, बिना मन का श्रम ही थकान का कारण होता है। जिस काम में मन लग जाता है उस काम में थकान की अनुभूति नहीं होती। मनुष्य को कभी हीन भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए। दूसरे की संपन्नता देखकर हमारा दुःखी होना ही हीन भावन से ग्रसित होना है। भगवान् ने जो कुछ दिया, उससे हम संतुष्ट रहें, भगवान् से कुछ माँगें नहीं। जो कुछ मिलता है, उससे हम संतुष्ट रहें। जो कुछ मिला है उसके प्रति आभार प्रकट करें। सुख का मूल संतोष है, दुःख का मूल कारण अधिक तृष्णा है। मस्ती बड़ी सस्ती है बीमार पड़ने के लिए धन चाहिए और पुनः इलाज कराने के लिए धन चाहिए। स्वस्थ रहने के लिए सादा जीवन, उच्च विचार ही पर्याप्त है। जीवन में उत्साह और सत्कंठा बराबर बनी रहे, यानी काम करने का उत्साह एवं जानने की उत्कंठा।

भोजन करने से शक्ति नहीं मिलती। भोजन के पचने पर ही शक्ति मिलती है। बिना पचा भोजन कष्ट पैदा करेगा। इसी प्रकार, जानने से लाभ नहीं मिलेगी, अपनाने से ही लाभ मिलेगा। इसलिए धर्म जानने की चीज नहीं, मानने की चीज नहीं। धर्म तभी होता है जब हम उसे धारण कर लेते हैं। हम जीवन से कभी उदास, हतास एवं निराश न हों। जीवन में हमेशा उत्साह, उमंग और प्रसन्नता रहनी चाहिए। जीवन को कभी बोझ न समझें। हम जब तक जिएँ तब तक प्रसन्नतापूर्वक जिएँ और हमेशा कार्यरत रहें। हमने डाकुओं को महान् होते देखा है, लेकिन आलसियों को महापुरूष होते नहीं देखा। जीवन में श्रम का अधिक महत्त्व है। बिना श्रम के सफलता प्राप्ति की कोई अन्य व्यवस्था नहीं है।

गलत बात को गलत स्वीकार करना ही सुधार का प्रथम लक्षण है। इसलिए गलती होने पर उसे स्वीकार करने से दोबारा गलती नहीं होने की संभावना रहती है। मनुष्य की सफलता का रहस्य उसकी संकल्प–शक्ति में निहित है। व्यक्ति जितना दृढ़ संकल्पित होता जाएगा उतना ही सफल होता जाएगा।

मेरे सारे लेख का सार यही है कि आप चाहें तो बीमार नहीं पड़ सकते हैं और एक सफल जीवन जी सकते हैं, लेकिन ऊपर लिखी हुई बातों को अपनाना होगा और उस रास्ते पर चलना होगा। दुनिया का कोई भी व्यक्ति इन सूत्रों को अपना कर आजीवन स्वस्थ रह सकता है और बीमारियों से बच सकता है। ■

'सुख' क्या है और कहाँ है?

डॉ0 बीरबल झा
शिक्षाविद् व चेयरमैन–मिथिलालोक फाउंडेशन

मैं जब 'श्रीमद्भागवत' में माता कुंती का प्रकरण पढ़ रहा था तो मुझे लगा कि आज तक किसी ने वरदान में विपत्तियाँ नहीं माँगी। माता कुंती ने भगवान् कृष्ण से कहा, 'हे जगद्गुरू। हमारे जीवन में सर्वदा पग–पग पर विपत्तियाँ आती रहें, क्योंकि विपत्तियों में ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म–मरण के चक्र में नहीं आना पड़ता। ऊँचे कुल में जन्म, ऐश्वर्य, विद्या और संपति के कारण जिसका घमंड बढ़ रहा है वह मनुष्य तो आपका नाम भी नहीं ले सकता, क्योंकि आप तो उन लोगों को दर्शन देते हैं, जो अकिंचन हैं। एक प्रचलित कहावत है–

दुःख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे को होय।।

दुःख से ही सुख पैदा होता है। उसको और अधिक स्पष्ट करने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ का उदाहरण उपयुक्त होगा। सिद्धार्थ राजा के घर पैदा हुए। राजमहल में सुख से रहते थे। सर्व–सुंदरी यशोधरा से उनका विवाह हुआ। मात्र सात दिन के अपने नवरात पुत्र राहुल को छोड़कर केवल उनतीस वर्ष की आयु में रात्रि के समय घर छोड़कर जंगल की राह पकड़ ली। जंगल में जाकर अपने आभूषण तथा राजवस्त्र को छंद से भिजवा दिया। अपनी तलवार से अपने केश काट डाले और संन्यासी का वेश बनाया। राजमहल में जब रहते थे तो उन्होंने सबसे पहले एक वृद्ध को देखा, जो लाठी टेककर चलाता हुआ दिखाई पड़ा। वृद्धावस्था से उसका शरीर जर्जरित था, बाल पके हुए थे, दाँत टूटे हुए थे, कमर झुकी थी, आखें धँसी थीं। उसकी दशा देखकर वे दुःखी हुए। फिर रोगी को देखा तो पुनः बहुत दुःखी हुए। इसके बाद एक मुर्दे को देखा और साथवालों को शोक में ले जाते देखा तो बहुत चिंताग्रस्त हो गए। लेकिन चौथी बार एक संन्यासी को देखा, जिसका सिर मुँड़ा था, कपड़ा रँगा, था, शांत व गंभीर था, हाथ में भिक्षा का पात्र था। संन्यासी के शांत व प्रसन्न रूप को देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

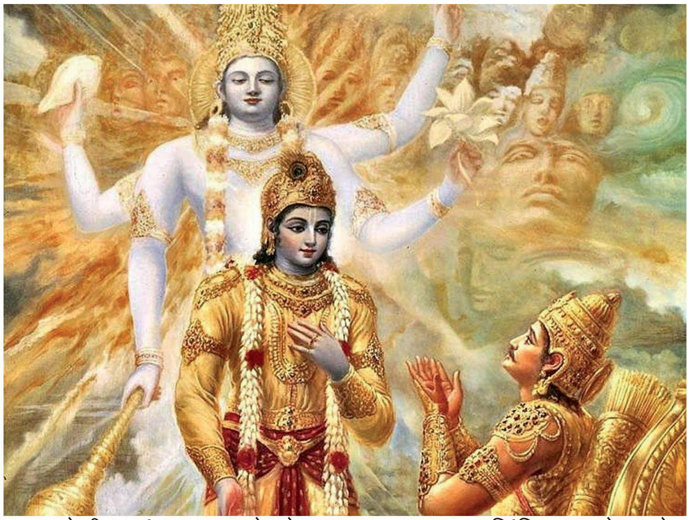

वृद्ध, रोगी एवं मृतक को देखकर राजकुमार चिंतित रहने लगे। वृद्धावस्था से, रोग से एवं मृत्यु से लोगों को कैसे छुटकारा मिल सकता है और उसका उपाय क्या है। अपने विलासी जीवन से घृणा हो गई, मन में वैराग्य हो गया। संसार के लोगों का दुःख से छुटकारा पाने का मार्ग खोजने के लिए मन उद्विग्न हो उठा। निकल पड़े महल, पत्नी एवं पुत्र को छोड़कर। सात वर्ष तक घूमते फिरते रहे, लेकिन अंत में उनको ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने दुःख से मुक्ति का उपाय खोज निकाला। राजकुमार अगर महल में ही रहते तो दुःख–मुक्ति का उपाय खोज पाते। कुंती ने विपत्तियाँ माँगीं कि विपत्तियों में प्रभु के दर्शन होते रहेंगे। प्रभु–दर्शन के सुख के आगे दुःख भी दुःख नहीं रह जाते। बुद्ध को महल छोड़ने में जो सुख मिला, वह महल में नहीं मिलता।

महाभारत युद्ध के पहले अपने स्वजनों को देखकर अर्जुन को विशाद (दुःख) हुआ। अगर अर्जुन को यह दुःख न होता तो भगवान् कृष्ण का अमर संदेश 'गीता' के रूप में प्रवाहित न होता।'गीता' ने केवल अर्जुन के विशाद को दूर नहीं किया। आज के पाँच हजार वर्ष से ज्यादा पहले की 'गीता' आज भी सबका दुःख–हरण कर रही है और जब तक इस पृथ्वी पर मनुष्य रहेगा,'गीता' उसका दुःख दूर करती रहेगी। इस प्रकार सुख की उत्पत्ति दुःख से होती है। प्रकृति में भी पहले काँटे आए, तब गुलाब आया, पहले कीचड़ आया, तब कमल आया, पहले रावण आया, तब राम आए, पहले कंस आया, तब कृष्ण आए, पहले विष आया, तब अमृत आया और पहले गुलामी आई, तब गांधी आए। ■

श्रीमद्भागवत में भी भगवान् ने यही बात दोहराई है कि सुख के साधन–उपकरणों को त्यागे बिना कोई भी परमानंद को नहीं प्राप्त कर सकता। पाँच वर्ष के बालक ध्रुव को राजा (पिता) की गोद से हटा देने पर जब उसे ठेस लगी, तभी वह अखंड दुःखमय तप करके संसार के सर्वो ध्रुव पद का अधिकारी हुआ। कुंती–पुत्र पांडवों ने महान् कष्ट सहने के बाद ही सुख–साधन से संपन्न पृथ्वी का राज्य प्राप्त किया। हमारे पूर्वज महार्षियों ने अपने उग्र तप रूप कष्ट से ही सभी सिद्धियों को प्राप्त किया और महान् गौरव से मंडित हुए। आधुनिक काल में भी गांधी, विनोबा, तिलक, महामना मालवीय, सुभाष चंद्र बोस आदि का जीवन भी इसका ही उदाहरण है, जिन्हें लोकोत्तर संमान स्वरूप सुख प्राप्त हुआ है। स्वयं रूप धारण करने वाले भगवान् राम को भी पहले वनवास और अन्य भयंकर क्लेश सहन करने के बाद ही भगत्ता मिली। इसी भाँति भगवान् कृष्ण को जन्म से ही नाना प्रकार की आपत्तियों और असुरों से जूझना पड़ा। इसके बाद ही पूर्णावतार के रूप में उनकी ख्याति हुई। जगदगुरू शंकराचार्य का संपूर्ण जीवन ही संघर्ष का रहा जिससे उन्हें साक्षात् शंकर का अवतार माना गया। महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद को भी इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

वर्तमान में लाखों के बलिदान के कारण ही भारत को हम आज इस रूप में देखते हैं। उन सभी बलिदानियों का त्याग हमारे हृदय–देश पर अंकित है और अमर है। बिना दुःख उठाए लोक–परलोक का सभी सुख अप्राप्य है। कबीरदास ने कहा है–

'सुख के माथे सिल परे नाम हिए से जाय।

बलिहारी वा दुःख की पल–पल नाम रटाय।।'

तो सुख क्या है? यह लौकिक संपत्ति, ऐश्वर्य, परिवार आदि में नहीं है। यह तो सुख का आभास मात्र है। असली सुख तो इसके त्याग में है। जिसने त्याग किया वही सुखी हुआ। त्याग में सुख है और जब हमारी आसक्ति नहीं रहेगी तो हम सुखी हो जाएँगे। एक राजा भी संन्यासी के आगे झुक जाता है। राजा परिग्रहका प्रतीक है और संन्यासी अपरिग्रह का। यानी संग्रह झुक जात है त्याग के आगे। कबीर की यह वाणी प्रसिद्ध ही है–

'चाह गई चिंता मिटी मनवा बेपरवाह।

जाको कछू न चाहिए वाही शहंशाह।।'

तुलसी

दिनेश चंद्र बंदुनी
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी),
निगमित कार्यालय

यह वैज्ञानिक तथ्य है कि इस पृथ्वी पर मनुष्य जाति के आविर्भाव के पहले से विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पनप चुकी थीं, यानी हरियाली आ चुकी थी। संसार में अनगिनत वनस्पतियाँ हैं–एक–से–एक आश्चर्यजनक, रोमांचकारी एवं हितकार। यह कितने प्रकार की हैं, शायद इनकी गणना आज तक संभव नहीं हो पाई। ये वनस्पतियाँ विभिन्न रूप–रंग में सब जगह फैली हैं, चाहे रेगिस्तान हो या सूखी धरती, बर्फीले पहाड़, हो या तालाब। कहा जाता है कि हमारे देश में जितने प्रकार के मौसम हैं तथा नदी, पहाड़ भूमि रेगिस्तान हैं उतने अन्य देशों में नहीं हैं। अतः हमारे यहाँ जितनी प्रकार की वनस्पतियाँ उपजब्ध हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं। हमारे यहाँ वनस्पति पर आधारित 'आयुर्वेद' रूपी संपूर्ण चिकित्सा–शास्त्र है, जिसमें वनस्पतियों के प्रकार तथा गुण–धर्म उल्लिखित हैं। असंख्य वनस्पतियों के गुण–दोषों का पीढ़ी–दर–पीढ़ी पता कर नियम बनाए गए और उनमें निहित शक्ति का मनुष्य के हित में उपयोग करने की विधियाँ बताई गई।

विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों में एक सबसे शक्तिशाली वनस्पति तुलसी है। यह केवल पवित्र तथा पूजनीय मानी गई, वरन् प्रकृति का इसे सबसे बड़ा वरदान माना गया। तुलसी का गुणवान वैदिक काल से चला आ रहा है। तुलसी की उत्पत्ति एवं महत्त्व के विषय में विभिन्न पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। लेकिन उनका यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं है। कहते हैं कि भगवान् शंकर की आँखों से गिरनेवाले आँसू रूद्राक्ष बन गए तथा उनके शरीर के कुछ रोम पृथ्वी पर गिर गए और वे तुलसी बन गए। जो भी हो, इतना तो निश्चय है कि तुलसी सचमुच ईश्वरीय वरदान है और मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया अमृत है। यह एकमात्र ऐसा पौधा है जिससे रोगनाशक तेल बराबर वायुमंडल में बिखरता है। इस कारण इसके पास खड़े होने, छूने, रोपने, पानी चढ़ाने में सैकड़ों के आक्रमण से बचाव हो जाता है। यह प्रकृति द्वारा दिया गया कवच है। 'पद्मपुराण' में आया है कि जितना आरोग्य संसार में फूल–पत्तों से मिल जाता है उतना तुलसी के आधे पत्ते से मिल जाता है और साथ में जो मंत्र बोला जात है वह है–'अकालमृत्यु

हरणं सर्वव्याधि विनाशनम्'–अर्थात् अकाल मृत्यु का हरण करता है तथा सभी प्रकार की व्याधियों का विनाश करता है। तुलसी का पौधा पर्यावरण को स्वच्छ रखता है। यही कारण है कि हमारे यहाँ हर घर के आँगन में तुलसी का गमला रखने का विधान और व्यवस्था है। जब से यह व्यवस्था खंडित हुई है, प्रदूषण बढ़ा है और इसी प्रदूषण के कारण मनुष्य नाना प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाता तुलसी की लकड़ी, छाल, पत्तियाँ, फल, जड़ आदि सभी मनुष्य के लिए उपयोगी हैं। हमें स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए इनकी उपयोगिता एवं वैज्ञानिकता को समझना होगा।

वैज्ञानिकों के अनुसंधान ने इसे प्रमाणित कर दिया कि तुलसी के साथ जो भी धार्मिक है क्रियाएँ की जाती हैं, वे सभी विज्ञानसम्मत हैं–यानी जो वस्तु जितनी धार्मिक है उतनी ही उपयोगी है। यानी धार्मिकता का सीधा संबंध उपयोगिता से है। वैज्ञानिकों ने माना कि तुलसी का तेल क्षयरोग के कीटाणुओं को नष्ट करता है। अनेक परीक्षणों के उपरांत यह भी निष्कर्ष निकाला है कि मलेरिया की सबसे अच्छी दवा तुलसी द्वारा उपचार है। आँतों की सफाई के लिए तुलसी का रस (पत्तियाँ चबाकर खाना) सर्वश्रेष्ठ उपाय है। इसके रस के द्वारा आँतों में जमे विजातीज तत्त्व बह जाते हैं। तुलसी नाना प्रकार के स्त्री रोगों में अत्यंत गुणकारी है। खुजली, भारीपन, सीने में दर्द, स्तन –पीड़ा में लाभदायक है। यह मूत्र तथा प्रजनन क्षेत्र की सुरक्षा करती है। तुलसी का काढ़ा बनाकर जब पक्षाघात और आमवात के रोगी को उसकी भाप दी गई तो उससे आशातीत लाभ हुआ। तुलसी के इसी काढ़े से जब पीड़ित अंगों को धोया गया तो आशातीत लाभ मिला।

तुलसी की गंध सड़न को रोकती है। अगर शव को तुलसी के पौधे के पास रख दिया जाए तो तीन–चार दिन तक सड़ेगा नहीं और न ही बदबू होगी। तुलसी अनेक छुआछूतवाले संक्रामण कीटाणुओं का विनाश करती है। इसी कारण घर–आँगन में तुलसी लगाने की व्यवस्था दी गई है।

खाद्य पदार्थों में भी तुलसी का प्रयोग अत्यंत लाभदायक है। सब्जी व दाल आदि में यदि तेज पत्ता के स्थान पर तुलसी का रस डाल दिया जाए तो आँखों में रोशनी, वाणी में आजस्विता तथा चेहरे पर कांति निखार आएगी। पुलाव आदि में जीरे के स्थान पर यदि तुलसी के रस के छींटे दे दिए जाएँ तो न केवल पौष्टिकता बढ़ेगी, बल्कि स्वाद भी बढ़ जाएगा। तुलसी की गंध श्वास नलिकाओं में संक्रामक रोग के कीटाणुओं को प्रवेश नहीं करने देती तथा सफाई भी करती चलती है। प्रातः काल के समय तुलसी की गंध तो रामबाण के समान अचूक प्रभाव डालती है। यह ध्यान रखें कि तुलसी के पत्ते अंधकार में न तोड़ें। रात्रि के समय तुलसी का स्पर्श वर्जित माना गया है। किसी प्रकार तुलसी का सेवन करने पर दूध पीना वर्जित है। यह रोगों को जन्म देता है। तुलसी के पत्तों, छाल और लकड़ी को अग्नि में न डालें।

हमारे ग्रंथों में तुलसी के दैनिक उपयोग में लाने की विधियाँ बताई हैं। कार्तिक माह में तुलसी के पत्तों का प्रातः काल बिना कुछ खाए–पिए सेवन करने से पूरे साल किसी प्रकार का कोई रोग नहीं होगा। तलसी का पत्ता स्वभाव में सात्त्विकता लाता है तथा चित को एकाग्र करता है। इससे समीप बैठने या खड़े होने से मन एकाग्र हो जाता है। सूर्य ग्रहण या चंद्र ग्रहण के समय पीने के पानी में डाल देने से, खाद्य पदार्थो में रख देने से ग्रहण के समय दूषित हो गए पर्यावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है। तुलसी की गंध रक्त–विकार को दूर करती है। मन में गंदे विचार नहीं आते। यह क्रोध को कम करती है। स्नान करने से कुछ देर पूर्व जल में तुलसी के पत्ते डालकर स्नान करने से त्वचा रोग नहीं होगा। पेयजल में तुलसी के पत्ते डाल देने से उदर संबंधी रोगों से बचा जा सकता है। तुलसी की माला, गजरा, करधनी, कंडी धारण करने पर शरीर सदा फुर्तीला तथा स्वस्थ रहता है। आलस्य पास नहीं फटकता है। तुलसी का उपयोग मन में सात्त्विकता लाता है, अतः काम–वासना को नियंत्रित करता है। तुलसी के पत्ते चबाने से दाँतों में कीड़े नहीं लगते। दाँत मजबूत, चमकदार होते हैं तथा उनकी आयु भी बढ़ जाती है। तुलसी के रस का उपयोग करने पर, उबटन जैसी मालिश करने पर हड्डियाँ मजबूत बनती है। एवं शरीर कांतिमय होता है।

कहते हैं, महापंडित अष्टावक्र जब राजा जनक से मिलने गए तो पत्तों भरी तुलसी की टहनी उन्हें उपहार–स्वरूप प्रदान की। इस पर राजा जनक ने अत्यंत प्रसन्नता के साथ कहा,''हे मुनिश्रेष्ठ। आपने सृष्टि और प्रकृति का सबसे बहुमूल्य खजाना मुझे दे दिया।'' और उन्होंने मुनि अष्टावक्र को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। स्पष्ट है कि राजा जनक तुलसी में छिपे अनमोल खजाने से परिचित थे।

तुलसी को देवताओं का वृक्ष माना गया है। कहा गया है कि इसमें देवता निवास करते हैं। अतएव जिस घर में तुलसी का पौधा होगा वहाँ भूत–प्रेत आदि बाधाएँ कभी नहीं आ सकती हैं। यदि आ भी जाएँगी तो उनका सरलता से ही शमन–दमन हो जाएगा। तुलसी का शुभ कार्यों में उपयोग किया जाए तो वह नाना प्रकार की सिद्धियों में लाभदायक है। प्रत्येक वस्तु में अदृश्य ऊर्जा शक्ति होती है। तुलसी में भी ऐसी ऊर्जा शक्ति है। तुलसी की यह शक्ति शांत एवं स्वभाव से सौम्य है अतः इसकी शक्ति का उपयोग केवल सात्त्विक एवं कल्याणकारी कार्यों के लिए किया जाता है। तुलसी के द्वारा लक्ष्मी की कृपा एवं प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है। बताया गया है कि भवन–निर्माण का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व तुलसी के पौधे का रोपण कर दे ंतो फिर वह निर्माण एवं स्थल पूर्णरूप से निरापद, सुरक्षित तथा सुख–शांतिवर्धक, लाभदायक होगा। 'गरूड़पुराण' में निश्चित रूप से तुलसी द्वारा स्वर्ग–प्राप्ति की विधि बताई गई है। प्रत्येक परिवार में मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगाजल एवं तुलसी का पत्ता डाल देते हैं। ऐसे करने से प्राण बिना कष्ट के सरलता से निकल जाते हैं, साथ ही र्स्वग की प्राप्ति होती है एवं सारे पाप धुल जाते है। वैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा पाया गया कि तुलसी के पत्तों की ऊर्जा शरीर के अंदर प्रवेश कर हृदय गति ठीक कर देती हैं।

तुलसी के अपार औशधीय गुण हैं। इस छोटे से लेख में उनका वर्णन एवं विधि देना संभव नहीं है। तुलसी प्रत्येक घर–आँगन में लगे और प्रत्येक व्यक्ति इसका सेवन करे तो स्वयं इसके लाभ का अनुभव करेगा। इसका सेवन और आसपास में होना ही सात्त्विक एवं पवित्र वातावरण का निर्माण करेगा तथा स्वभाव को भी सौम्य बनाएगा। ■

सत्यमेव जयते

राजेन्द्र
सहायक (वाणिज्य), बठिंडा यूनिट

सत्यमेव जयते भारत का 'राष्टीय' आदर्श वाक्य है। जिसका अर्थ है सत्य की सदैव ही विजय होती है। यह भारत के राष्टीय प्रतीक के नीचे देवनागरी लिपि में लिखा गया है। 'सत्यमेव जयते 'को राष्ट्रपटल पर लाने उसका प्रचार करने में पंडित मदन मोहन मालवीय की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वेदांत हमारे ग्रंथो में सत्य और असत्य की कई बाते दर्शाता है। जिसमे सत्य का प्रयोग सृष्टि का मूल तत्व माना जाता है। जिसे परिवर्तन नहीं किया जा सकता है जबकि असत्य हमेशा गलत की प्रवृति दर्शाता है।

सत्यमेव जयते का इतिहासः सम्पूर्ण भारत का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' है। इसको भारतीय उत्तर राज्य के उत्तर प्रदेश के वाराणसी के निकट स्थित सारनाथ से 250 ई.पु .में सम्राट अशोक के द्वारा बनवाये गए स्तम्भ के शिखर से लिया गया है। पर इस शिखर में ये आदर्श वाक्य नहीं है। सत्यमेव जयते 'मूलतः 'मुण्डकोपनिषद 'का सभी को पता है। ये एक मंत्र है मुण्डकोपनिषद के निम्न शलोक से (सत्यमेव जयते) लिया गया है। वो श्लोक इस प्रकार है।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पंथा विततो देवयानः।।

येनाक्रमंतयषयो दृत्कामा यत्र सत्यस्य परमं निधानभ।

अर्थात

अन्तः सत्य की ही जय होती है न की असत्य की यही वह मार्ग है जिससे होकर आप्तकाम (जिसकी कामनायें पूर्ण हो चुकी है) मानव जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करते है।

इस मुण्डकोपनिषद से लिए गए श्लोक में जो सत्यमेव जयते आया है। वो यही से लिया गया है।

सत्यमेव जयते के मुख्य बिंदु : भारत सरकार ने यह चिन्हे 26 जनवरी 1950 को अपनाया। इसमें केवल तीन शेर ही दिखाई पड़ते है। चौथा दिखाई नहीं देता पट्टी के मध्य में उभरी हुई नक्काशी में चक्र है। जिसके दाई ओर एक सांड और बाई ओर एक घोड़ा है। दाएं और बांई ओर छोरों पर अन्य चक्रो के किनारे है।

सत्यमेव जयते की सत्यता : भारत के इतिहास, हमे लम्बे संघर्ष के बाद अनगिनत बलिदानों के बाद स्वतंत्रता मिली है। आजादी के समय हमारे भारतीय विचारको ने इस वाक्य को सत्यमेव जयते को एक मार्गदर्शको उपवाक्य के रूप में माना ताकि सदियों से प्रताड़ित भारतीय जनो के सुख मिल सके। इस वाक्य के पीछे मंशा बस एक ही थी की व्यक्ति सत्य की निष्ठा को अपनाये सत्य पर चले और विजय की हमेशा जीत होती है. इसको अपनाकर हमारे उपनिषद हमारे ग्रंथो में सत्य को ही महत्व दिया गया है। सत्य को जितने में भले ही समय लगे परन्तु सत्य की हमेशा जीत होती है। सत्य कमजोर पड़ सकता है परन्तु हार नहीं सकता अर्थात सत्य के आगे लाखो असत्य के आडम्बर पैर अड़ाए परन्तु सत्य हमेशा सत्य ही रहता है। और इसकी जीत हमेशा ही होती है।

सत्यमेव जयते की शक्ति : सत्य की शक्ति इंसान को हर कठिन से कठिन परिस्थिति से बचाती है।

कबीरदास जी ने कहा है।

सॉच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै सॉच है, ताके हिरदै आप।।

अर्थः कबीरदास जी कहते हैं की इस जगत में सत्य के मार्ग पर चलने से बड़ी कोई तपस्या नहीं है और ना ही झूठ बोलने से बड़ा कोई पाप है क्योंकि जिसके हृदय में सत्य का निवास होता है उसके हृदय में साक्षात् परमेश्वर का वास होता है ।

कबीरदास जी के अनुसार इस नाशवान और तरह – तरह की बुराइयों से भरे विश्व में सच बोलना सबसे बड़ी सहज सरल तपस्या है। सत्य बोलने सच्चा व्यवहार करने सत्य मार्ग पर चलने से बढ़कर कोई तपस्या नहीं होती है। और ये सच इंसान को कभी हारने नहीं देता जिसके हृदय में सच भरा है। उसकी कभी हार नहीं हो सकती है। इसके विपरीत बात – बात पर झूठ बोलते रहना छल कपट करना झूठ बना, झूठ से भरा व्यवहार तथा आचरण करना उन सभी से बड़ा पाप है। जिस किसी व्यक्ति के हृदय में सत्य का वास होता है। ईश्वर उसके हृदय में निवास करते है।

सत्यमेव जयते की अब की स्थिति : अब यदि आज के परिप्रेक्ष्य में इस वाक्य ''सत्यमेव जयते'' को देखते है। तो ऐसा लगता है की इसका अस्तित्व सिर्फ अशोक स्तम्भ तक ही सीमित रह गया है। एक सामान्य व्यक्ति से लेकर चपरासी, ऑफिसर, लिपिक, पुलिस, प्रशासन, तक इस वाक्य का अब कोई अनुसरण नहीं करते। ये वाक्य तो बस सरकारी ऑफिस हमारे देश के कानूनों की पटलों पर बस लिखा हुआ मात्र है। परन्तु आज उसका पालन करता कौन है। यहाँ तक की भगवान् के लिए प्रयुक्त होने वाले वाक्य सत्यम शिवम् सुंदरम जैसे वाक्य को देखे जिसका अर्थ भी यही है की सत्य ही कल्याणकारी है या शुभ है और सत्य ही प्रिय और सुन्दर है और किसी भी राष्ट्र का संविधान उस राष्ट्र के लोगो को, सुख, शान्ति प्रदान करने के लिए होता है। अतः ये स्पष्ट है .की संविधान का आधार इसी वाक्य में निहित है। परन्तु आज इसका पालन कौन करता है।

असल में ये सिर्फ एक वाक्य बन कर रह गया है और इसकी अवहेलना आज के राजनेताओ ने की है जबकि सत्यमेव जयते एक वाक्य ही नहीं ये एक आदर्श है। एक मार्ग है एक जीवन शैली है। एक परम्परा है। जिसमे सर्व भवन्तु सुखिनः की भावना निहित है ये वाक्य इतना बृहद है की इस पर तो एक किताब लिख सकते है। परन्तु इसका पालन करना भी हमारे ही हाथ में है। सत्य क्या है। सबको पता है परन्तु बोलना और उसे स्वीकार करना कोई नहीं चाहता है।

उपसंहार : मेरे अनुसार तो इस वाक्य में "सत्यमेव जयते" की मूल भावना को स्वीकार करते हुए अर्थात इसके मूल अर्थ को समझते हुए हमे इसके मूल अर्थ में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और जो इसका पालन नहीं करता इसका अपमान करता है। इस राष्ट्रीय आदर्श वाक्य का तो वो राष्ट्र का अपमान करता है। वो राष्ट्रद्रोही है। उसे कड़ी से कड़ी राष्ट्र द्रोही को सज़ा होनी चाहिए। सत्यमेव जयते वाक्य की हमेशा विजय होना चाहिए इसकी हार हमारी हार ,हमारे देश की हार, हमारे राष्ट्र की हार। इसलिए इस वाक्य को अपनाना हमारे लिए देश की शान होना चाहिए। क्यूंकी ये एक वाक्य नहीं है हमारे लिए हमारे देश का हृदय है जो एक छोटे बच्चे जैसा सच्चा होना चाहिए। ■

परिवारिक वातावरण को बढ़ावा

अमित कुमार
बाह्य साधन : सहायक विपणन,
निगमित कार्यालय

हम सभी जानते हैं कि एक समृद्ध और समाजवादी समाज की दिशा में हमारे सामाजिक विचार और प्रयासों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमारे समाज में विभिन्न जाति, धर्म और वर्ण के लोग रहते हैं, और हमें इस मानवीय विविधता का सम्मान करना चाहिए।

परिवर्तन की दिशा में बदलाव लाने के लिए, हमें आपसी समझदारी और सहमति का पालन करना होगा। दलित, पिछड़े और आर्य – वैष्य आदि समुदायों के साथ एक सामंजस्य और समरसता भाव रखना हमारी जिम्मेदारी है। हमें उनके साथ मिलकर समाज में समानता और न्याय की प्राधान्यता देनी होगी ।

इस महत्वपूर्ण प्रयास में हम सभी का सहयोग आवश्यक है। हमें समृद्धि, सामाजिक न्याय, और सभी की उन्नती की दिशा में साथ मिलकर काम करना होगा। इस संकेत के रूप में, हम एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं और अपने आस–पास के समाज में इस परिवर्तन की प्रेरणा बना सकते हैं।

आइए, हम सभी मिलकर इस समाज के अच्छे और सकारात्मक दिषानिर्देष में कदम बढ़ाते हैं और एक परिवारिक वातावरण की ओर प्रगति करते हैं। यह सफलता हम सभी की साझा प्रयासों और सहमति के साथ हो सकती है। ■

चिंता-त्याग से स्वस्थ जीवन

अरविंद कुमार
वरिष्ठ निजी सचिव, निगमित कार्यालय

अगर शब्द–गठन की दृष्टि से देखें तो 'चिता' एव 'चिंता' में ज्यादा अंतर नहीं है। केवल चिंता में ऊपर एक बिंदी है। लेकिन अर्थ पर दृष्टिपात करें तो आप पाएँगे कि अर्थ में गहरा अंतर है–चिता हमारे मृत शरीर को एक बार जलाकर हमारा अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त कर देती है, लेकिन चिंता न तो हमारा अस्तित्व समाप्त करती है और न एक बार में हमारा पिंड छोड़ती है। जब तक हम चिंतित रहेंगे, चिंता हमें जलाती रहेगी। यानी चिता मुर्दे को जलाती है तो चिंता जिंदे को। चिता हमारा अस्तित्व समाप्त करती है, जबकि चिंता हमारा अस्तित्व बरकरार रखते हुए हमें परेशान करती रहती है। हमें चिता पर दूसरे लोग ले जाते हैं, किन्तु चिंतित होने के हम स्वयं कारण हैं। हम चिता से पिंड नहीं छुड़ा सकते, एक–न–एक दिन हमें चिता पर जाना ही पड़ेगा, लेकिन हम चाहें तो चिंता से पिंड छुड़ा सकते हैं। चिंतित व्यक्ति के शरीर में आवश्यक नहीं कि ऐसे परिवर्तन आ जाएँ, जिन्हें देखकर आप कह सकें कि आप चिंतित हैं। प्रायः बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो चिंतामुक्त हों। हमें चिंता का कारण और उसे दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं, यह जानने की आवश्यकता है। एक आदमी चिंतित क्यों है और दूसरा चिंता–मुक्त क्यों है? चिंता वास्तविक होती है या हमेशा काल्पनिक होती है और चिंता हमारे तन–मन को हमेशा नुकसान करती है या इससे किसी प्रकार के कुछ फायदे भी हैं। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह जवान हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरूष–चिंता–मुक्त होना चाहता है। अब हम आगे इसका विवेचन करने का प्रयास करेंगे कि हमें चिंता क्यों होती है और उससे छुटकारा कैसे मिले ? चिंता कभी–कभी इतनी भयंकर होती है कि चिंताओं के कारण व्यक्ति रोगग्रस्त हो जाता है, स्वभाव में गुणात्मक परिवर्तन आ जाता है। चिड़चिड़ापन आना एक चिंतित व्यक्ति का स्वभाव हो जाता है। चिंतित व्यक्ति हमेशा भयभीत रहता है। हर आदमी चाहता है कि वह चिंतामुक्त हो। हम चिंता के कारण जानने का प्रयास करेंगे तथा उन चिंताओं को दूर कैसे किया जाए, उसकी चर्चा करेंगे। कैसे कुछ लोगों की चिंता दूर हुई है, इसको जानने का प्रयास करने पर हम भी चिंतामुक्त हो सकते हैं।

आदमी जब अतीत या भविष्य में जिएगा तो ही चिंतित होगा। जब तक वर्तमान में जिएगा, उसे चिंता नही सताएगी। बच्चे वर्तमान में जीते हैं, अतः चिंता–मुक्त रहते हैं। युवा भविष्य काल में जीते हैं। उनके सपने और अरमान उन्हें भविष्य में हम ऐसा करेंगे, वैसा करेंगे की गर्वोक्ति से परेशान रहोंगे चिंता कहाँ से उठती है ? जब हम किसी चीज या उद्देश्य को प्राप्त करने की कामना करते हैं तो हमें चिंता होनी प्रारंभ हो जाएगी। यानी हमारी चिंता का कारण हमारी अतिरिक्त इच्छाएँ हैं। इच्छाओं और आवश्यकताओं में मौलिक अंतर है। हमारी इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होंगी। एक पूरी होगी तो दसरी चालू हो जाएगी। लेकिन हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में ज्यादा परेशानी नहीं होती। हमें पहनने को वस्त्र मिल जाए, रहने को मकान मिल जाए, जीने के लिए भोजन मिल जाए तो हमारी आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँगी और हम चिंता–मुक्त रहेंगे। आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, पर इच्छाएँ अनंत होती हैं। इच्छाओं की अनंत श्रृंखला के कारण ही हम परेशान रहते हैं। अगर मनुष्य की अनावश्यक इच्छाएँ समाप्त हो जाएँ तो चिंता भी समाप्त हो जाएगी।

एक बूढ़ा व्यक्ति हमेशा अतीत में जीएगा, यानी हमने ऐसा किया, वैसा किया। उसे अपने अतीत का स्मरण होगा और जब देखेगा कि मैंने जैसा किया और जैसा जीवन जिया अब नहीं हो रहा है तो उसकी चिंता आरंभ हो जाएगी। बूढ़ा व्यक्ति स्वयं तो करने में अपने को अक्षम पाएगा, लेकिन उसके अरमान यही रहेंगे कि कम–से–कम जिन उपलब्धियों को मैंने प्राप्त किया, उन्हें मेरे साथ या परिवारवाले भी प्राप्त करें। मैंने इनको जो संचित धन या व्यापार दिया, उसकी वृद्धि न कर सके तो कम–से–कम उसकी सुरक्षा तो जरूर करें। जब देखेगा कि न तो वृद्धि हो रही है और न सुरक्षा, बल्कि नुकसान हो रहा है तो उसका चिंतित होना स्वाभाविक हो जाएगा। ऐसी स्थिति में वह चिंताग्रस्त बना रहेगा। यह भी देखा गया है कि बढ़ी उम्र में यानी साठ साल की उम्र के बाद अगर आदमी चिंताग्रस्त रहता है तो बहुत सी शारीरिक बीमारियाँ भी हो जाती हैं और उसका तन एवं मन उसे हमेशा परेशान किए हरता है। युवा की इच्छाएँ तथा वृद्ध व्यक्ति का असंतोष उसकी चिंता का कारण बनते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि चिंता करना साधक है या बाधक ? क्या चिंताएँ हमारी उन्नति या उपलब्धियों में किसी भी प्रकार से सहायक या साधक होती हैं या हमेशा हमारे लिए बाधक होती हैं? आप विश्वास रखें, आपकी उन्नति एवं उपलब्धियाँ आपके पुरूषार्थ एवं शुभ संकल्प के कारण होती हैं। न कि चिंता के कारण। चिंता हमेशा हमारी प्रगति में बाधा उत्पन्न करेगी। कारण, चिंता कभी सही नहीं होती। यह हमेशा ही काल्पनिक एवं सत्य से परे हुआ

करती है। अतः चिंता हमेशा त्याज्य है। आप जितने ही चिंता–मुक्त होते जाएँगे, आपका विश्वास एवं संकल्प उतना ही बढ़ता जाएगा। चिंता के कारण आप हमेशा परेशान रहेंगे। आपका काम भी हमेशा अधूरा पड़ा। अगर आप चाहें कि आपका आज का काम आज ही पूरा हो जाए तो ऐसा करना उसी व्यक्ति के लिए संभव हो पाएगा, जो चिंता–मुक्त होकर एवं संकल्प–युक्त होकर यथार्थ प्रयास करेगा।

अब प्रश्न उठता है कि हम चिंता–मुक्त कैसे हों ? मुझे एक प्रकरण याद आता है। एक व्यक्ति था, जो अत्यधिक चिंतित था और यह मानता था कि मुझसे अधिक चिंतित व्यक्ति शायद ही मिले। वह व्यक्ति एक महात्मा के पास जाता है और महात्माजी से अपनी चिंता का निवारण पूछता है। महात्माजी ने उससे पूछा कि तुम्हारी चिंता क्या है ? तो उसने पारिवारिक, व्यापारिक तथा व्यावहारिक चिंताएँ बतानी आरंभ कर दीं। आधे घंटे तक उसने अपनी चिंताएँ बताई और महात्माजी ने बड़े ध्यान से सुनीं। जब उसने बताना बंद कर दिया तो महात्माजी ने उससे पूछा कि बताओ, दुनिया में सबसे सुंदर फूल कौन सा है? उसने बताया कि गुलाब। फिर महात्माजी ने कहा कि तुमने बिना काँटों के पेड़ में गुलाब देखा है? गुलाब के पेड़ में काँटे पहले आते हैं और गुलाब बाद में। कितने अधिक काँटों के बीच थोड़े से गुलाब खिलते हैं। इतने काँटों के बीच भी गुलाब अपनी सुगंध और सुदरता बनाए रखता है। फिर महात्माजी ने उससे पूछा कि दुनिया का सबसे पवित्रतम फूल कौन सा है ? तो उसने कहा कि 'कमल'। तो फिर महात्माजी ने पूछा कि बिना कीचड़ के कमल देखा है ? कीचड़ सबसे गंदा और उससे निकला फूल सबसे पवित्र। तुमने दीपक ऐसा देखा है ? जो स्वयं नहीं जला, वह क्या दुनिया को प्रकाश दे पाया है ? इसी प्रकार एक पत्थर में भगवान् की मूर्ति को तराशा जाता है तो कितनी चोटों के बाद मूर्ति उभरकर सामने आती है? तुम अपनी परेशानियों के कारण अपने को परेशान न समझों, उन्हें अपनी तरक्की और प्रगति का कारण समझों। अगर पहले काँटे न आते तो गुलाब का प्रश्न ही नहीं था। दीपक जलने पर ही प्रकाश दे पाया और पत्थर चोट खाने पर ही मूर्ति दे पाया। आज गाँधी न होते, अगर उन्होंने अन्याय के प्रतिकार हेतु संघर्ष न किया होता। आज बुद्ध भी भगवान् बुद्ध न होते, अगर उन्होंने राज–सुख, पत्नी–सुख, पुत्र–सुख न छोड़ा होता तथा कठिन तपस्या एवं साधना न की होती। गांधी या बुद्ध कभी चिंता नहीं करते थे। अपनी समस्याओं के निराकरण हेतु आप संकल्पबद्ध हो जाएँ। असत्य रूपी कुहरा छँट जाएगा और आप अपने को यथार्थ के धरातल पर पाएँगें।

समस्याओं का निराकरण तो है, लेकिन चिंताओं का निराकरण कभी नहीं होता। इसका एकमात्र कारण है कि चिंताएँ हमेशा काल्पनिक होती हैं और समस्याएँ हमेशा वास्तविक। चिंताएँ हमेशा अकारण होती हैं और समस्याओं का कोई–न–कोई कारण होता है। कारण का तो निवारण हो जाएगा। चिंता के कारण हमेशा मन–बुद्धि का संतुलन बिगड़ा रहेगा। काम जब भी पूरा होगा, मन–बुद्धि के संतुलन के कारण । अतः अगर जीवन सफल बनाना है तो चिंता कभी न करना। जो भी समस्या आए, उसे दूर करने के लिए संकल्पबद्ध हो जाएँ। अगर समस्या के समाधान का रास्ता न दिखाई पड़े तो प्रबुद्ध एवं ज्ञानी लोगों के पास जाएँ। वे हंस की तरह आपकी हर समस्या को दूध एवं पानी की तरह अलग–अलग कर देंगे। प्रबुद्ध लोग किसी तरह से समस्याओं का समाधान करते हैं, उसका भी एक उदाहरण है। एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति को कुआँ बेचा। लेकिन उसने बताया कि हमने कुआँ बेचा है, पानी नहीं बेचा है और कुआँ खरीदनेवाले को कुएँ के पानी का उपयोग करने से मना कर दिया। कुआँ बेचने वाले में एवं खरीदने वाले में इसी को लेकर हमेशा द्वंद्व रहता। लेकिन दोनों ही किसी प्रबुद्ध व्यक्ति के पास गए और अपना तर्क दिया। प्रबुद्ध व्यक्ति ने जो फैसला सुनाया, उससे दोनों पक्ष संतुष्ट हो गए और दोनों को अपनी गलतियों का एहसास हो गया। प्रबुद्ध व्यक्ति ने कहा कि तुमने कुआँ बेचा है, पानी नहीं बेचा। लेकिन तुमने उसके कुएँ में इतने दिनों तक पानी रखा तो उसको इसका किराया भरो और आगे अपना पानी निकालकर इसे खाली कुआँ हैंड ओवर करो। अगर दोनों पक्ष प्रबुद्ध व्यक्ति के पास जाने को सहमत हो जाएँ तो निश्चित समस्या निराकरण हो जाएगा। हमने उपर्युक्त लेख में चिंता के कारण और निराकरण को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। मुझे विश्वास है कि आप चिंता–मुक्त हो सकेंगे।

चिंता एवं चिंता के बाद 'चिंतन' शब्द की चर्चा जब होती है तो यह पता चलता है कि इस शब्द के बड़े गहरे अर्थ हैं। चिंतन में मन का स्थिर होना आवश्यक है। ज्यों चिंतन बढ़ता जाएगा, चिंता अपने आप समाप्त होती जाएगी। जैसे प्रकाश तथा अंधकार एक साथ नहीं रह सकते, उसी प्रकार चिंता एवं चिंतन भी एक साथ नहीं रह सकते। चिंता हमेशा परेशान करेगी, लेकिन चिंतन हमें हमेशा प्रसन्नता प्रदान करेगा। हमारी जीवन –यात्रा का प्रथम उद्देश्य चिंतित होना नहीं, चिंतनशील होना है। चिंता हमेशा दुःखदायी होती है, लेकिन चिंतन हमेशा ही आनंददायक है। अगर चिंता–मुक्त होना है तो अपनी चिंता को चिंतन में बदल दें। चिंतन कभी काल्पनिक नहीं होगा। वह हमेशा यथार्थ का होगा। चिंतन हमेशा एक दिशा में होगा, जबकि चिंता की कोई दिशा नहीं होती। एक चिंता गई तो दूसरी आरंभ हुई और चिंता इसी प्रकार एक के बाद दूसरी सताती रहेगी। अतः चिंता को चिंतन में बदलने के लिए आवश्यक है कि अच्छे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें, विशष रूप से 'गीता' का। ऊँचाई के प्राप्त संतों का समागम एवं सान्निध्य भी हमें अपने आप चिंता–मुक्त करता है। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि प्रेम रावत जी के शांति का संदेश सुनते ही चिंताएँ अपने आप निर्मूल होकर और चिंतन की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। ■

प्रस्तुतकर्ताः– विजय कुमार गांधी
उप प्रबन्धक (प्रशासन), निगमित कार्यालय

मुंशी प्रेमचंद जी की एक सुंदर कविता, जिसके एक-एक शब्द को, बार-बार पढ़ने को मन करता है

'ख्वाहिश नहीं, मुझे
मशहूर होने की,

आप मुझे पहचानते हो,
बस इतना ही काफी है।

अच्छे ने अच्छा और
बुरे ने बुरा जाना मुझे,

जिसकी जितनी जरूरत थी
उसने उतना ही पहचाना मुझे!

जिन्दगी का फलसफा भी
कितना अजीब है,

शामें कटती नहीं और
साल गुजरते चले जा रहे हैं!

एक अजीब सी
दौड है ये जिन्दगी,

जीत जाओ तो कई
अपने पीछे छूट जाते हैं और

हार जाओ तो,
अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं!

बैठ जाता हूँ
मिट्टी पे अक्सर,

मुझे अपनी औकात
अच्छी लगती है।

मैंने समंदर से

सीखा है जीने का तरीका,

चुपचाप से बहना और
अपनी मौज में रहना।

ऐसा नहीं कि मुझमें
कोई ऐब नहीं है,

पर सच कहता हूँ
मुझमें कोई फरेब नहीं है।

जल जाते हैं मेरे अंदाज से,
मेरे दुश्मन,

एक मुद्दत से मैंने
न तो मोहब्बत बदली

और न ही दोस्त बदले हैं।
एक घड़ी खरीदकर,

हाथ में क्या बाँध ली,
वक्त पीछे ही

पड़ गया मेरे!
सोचा था घर बनाकर

बैठूँगा सुकून से,
पर घर की जरूरतों ने

मुसाफिर बना डाला मुझे!
सुकून की बात मत कर

बचपन वाला, इतवार
अब नहीं आता!

जीवन की भागदौड में
क्यूँ वक्त के साथ,
रंगत खो जाती है?

हँसती खेलती जिन्दगी भी
आम हो जाती है!

एक सबेरा था
जब हँसकर उठते थे हम,

और आज कई बार, बिना मुस्कुराए ही शाम हो
जाती है!

कितने दूर निकल गए
रिश्तों को निभाते–निभाते,

खुद को खो दिया हमने
अपनों को पाते–पाते।

लोग कहते हैं
हम मुस्कुराते बहुत हैं,

और हम थक गए,
दर्द छुपाते छुपाते

खुश हूँ और सबको
खुश रखता हूँ,

लापरवाह हूँ खुद के लिए
मगर सबकी परवाह करता हूँ।

मालूम है 'कोई मोल नहीं है
मेरा फिर भी

'कुछ अनमोल लोगों से
रिश्ते रखता हूँ।

पापा

सुमन
धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र,
सहायक (वाणिज्य), बठिंडा यूनिट

जब मैं सो रहा था, कोई चुपके से सर पर हाथ फिरा
रहा था, वो थे पापा।
सपने तो मेरे थे, उन्हे पूरा करने का रास्ता कोई और
दिखा रहा था, वो थे पापा।
खुद कड़ी धूप में रह कर ,
कोई मुझे एसी में सुला रहा था, वो थे पापा।
ये दुनिया पैसे से चलती है, पर कोई सिर्फ मेरे लिए पैसे
कमाए जा रहा था, वो थे पापा।
मैं तो नौकरी के लिए घर से जाने पर दुखी था,
मुझसे से अधिक आंसू कोई बहा रहा था, वो थे पापा।

प्यार तो सभी दिखाते है बिना दिखाए भी कोई प्यार
निभाए जा रहा था, वो थे पापा।
मैं तो सिर्फ अपनी खुशियों में हँसता हूँ,
पर मेरी हंसी देखकर
कोई अपना गम भुलाये जा रहा था, वो थे पापा।
मैं तो सुबह जल्दी उठ भी नहीं पाता,
कोई बहुत थक कर भी सुबह काम पर जाता रहा, वो थे
पापा।

बिदांस बचपन

पवन कुमार
प्रचालक ग्रेड –II, बठिंडा यूनिट

होता था अपने बचपन का हर लम्हा सुहाना
लिख जाता नित दिन नटखट सा फसाना

होता हर साम दादी की कहानियों का किस्सा
तो कभी बन जाता दादा संग रौनके देखने का हिस्सा

गलती होने पर पिता का प्यार से था समझाना
तो वही थक कर माँ के आंचल में था सो जाना

सावन के मौसम में होती थी झूलो की बहार
अक्सर बरसात में भीगने पर होती थी अपनो से तकरार

बिदांस होकर खेलना–कूदना रहती थी चेहरे पर मुस्कान
बिना दीपो के थी दीवाली, खाने को मिलते मीठे पकवान

वापस न लौटने वाले वो दिन हसीन थे
बे फिक्र था बचपन, हर लम्हा सकून था

होली के हुड़दंग में था लड़कपन ये दीवाना
गली–कूचो की मिट्टी से था अपना की याराना

हिल में एकता शपथ

हिल (इंडिया) लिमिटेड के विभिन्न स्थानों पर स्थित कार्यालयों में कर्मचारियों द्वारा एकता शपथ ली गई।

हिल (इंडिया) लिमिटेड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा ''मुक्त भारत – विकसित भारत'' – विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत'' विषय पर 31 अक्टूबर, 2022 से 06 नवंबर 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 का आयोजन किया गया। कंपनी के निगमित कार्यालय सहित सभी यूनिटों और क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों के सभी कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा दिलाई गई ।
सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2022 के दौरान प्रधान कार्यालय, क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों और यूनिटों के कर्मचारियों को जागरूक करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों जैसे निबंध लेखन, कविता लेखन, नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । हिल के कार्मिकों के 5 से 8 तथा 9 से 15 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया । सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

प्रधान कार्यालय

बठिंडा यूनिट

रसायनी यूनिट

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

निगमित कार्यालय, हिल (इंडिया) लिमिटेड की सभी महिला कर्मचारियों द्वारा सुंदर नर्सरी, नई दिल्ली में अत्यधिक उत्साह के साथ मनाया गया। कंपनी ने प्रत्येक महिला कर्मचारी को संगठन में उनके योगदान तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इस आयोजन की स्मृति हेतु एक मोमेंटो भी प्रदान किया गया। प्रबंधन की ओर से सभी महिला कार्मिकों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई

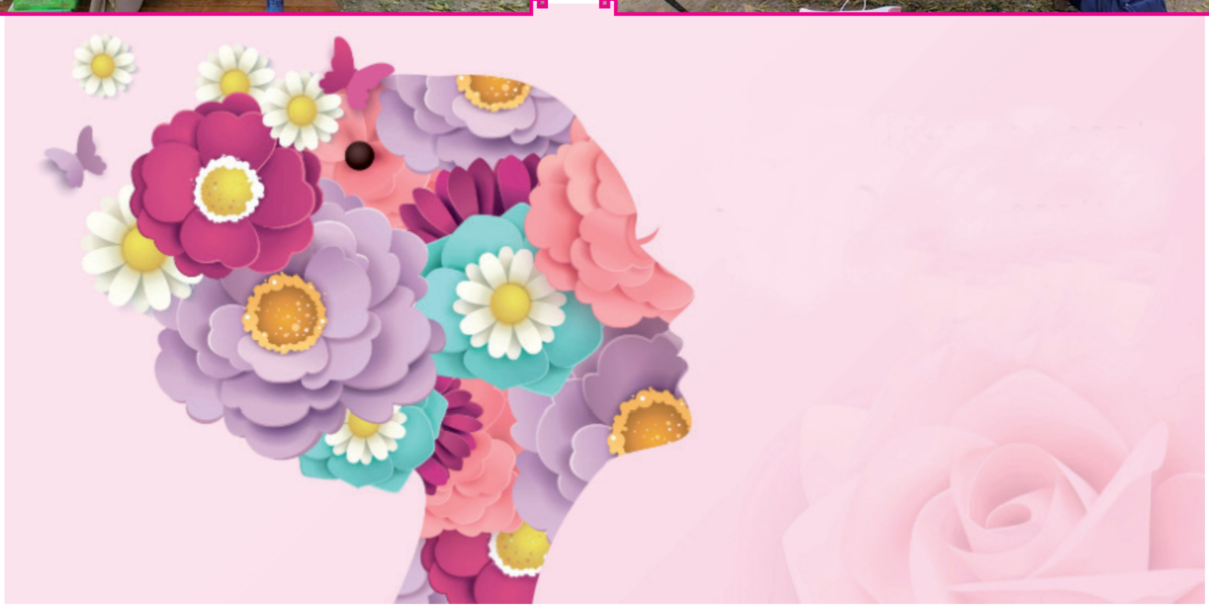

किसान मेलों की झलकियां ।

देश के विभिन्न प्रदेशों में किसानों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से एकीकृत कीट प्रबंधन, कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग आदि विभिन्न विषयों पर हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा आयोजित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा किसान मेलों में हिल की प्रतिभागिता की झलकियां ।

इंडिया केम 2022 - हिल स्टॉल का उद्घाटन

माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने इंडिया केम 2022, नई दिल्ली में हिल (इंडिया) लिमिटेड स्टॉल का उद्घाटन किया। श्री भगवंत खुबा, राज्य मंत्री (रसायन और उर्वरक मंत्रालय), श्री अरूण बरोका, सचिव (रसायन और पेट्रोरसायन), श्री सुशांत कुमार पुरोहित (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक) और अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

हिल में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

निगमित कार्यालय में राजभाषा संगोष्ठी

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय में दिनांक 19.12.2022 को हिंदी कार्यशाला एवं तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सलाहकार श्री केवल कृष्ण को विशेष अतिथि –सह – वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी में निदेशक (वित्त), निदेशक (विपणन) एवं महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्र.) के साथ अन्य अधिकारियों ने भाग लिया ।

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय में दिनांक 23.03.2023 को हिंदी कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप निदेशक (नीति) श्री राजेश श्रीवास्तव को विशेष अतिथि –सह – वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया । इस संगोष्ठी में निदेशक (वित्त), निदेशक (विपणन) एवं महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्र.) के साथ अन्य अधिकारियों ने भाग लिया ।

हिल के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री राकेश कुमार एवं अन्य अधिकारी द्वारा हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय का हिंदी की प्रगति संबंधी निरीक्षण किया गया।

श्री सुशांत कुमार पुरोहित, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/संयुक्त सचिव (रसायन) ने निदेशक (वित्त) और निदेशक (विपणन) के साथ हिल की रसायनी इकाई, महाराष्ट्र का दौरा किया और यूनिट प्रमुख, विभागाध्यक्षों और संघ प्रतिनिधियों के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

हिल में गणतंत्र दिवस समारोह

अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, गुरूग्राम

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में गणतंत्र दिवस, 2023 के अवसर पर निदेशक (वित्त) – श्री डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू और निदेशक (विपणन) – श्री शशांक चतुर्वेदी ने सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया ।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2023 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री बिजय कुमार महाराणा द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया ।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2023 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री महेन्द्र सिंह द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2023 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया ।

प्रशासनिक एवं संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियाँ

Action has already been taken in the matter	शीघ्र कार्रवाई अपेक्षित है
Action is required to be taken early	कृपया तुरंत कार्रवाई करें
Advance asked for	मांगी गई अग्रिम राशि
Agreed to	सहमति दी जाती है
Balancing of resources	संसाधनों का संतुलन
Ban on future promotion	भावी पदोन्नति पर रोक
Bills for signature, please	बिल हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत
Bring into operation	चालू करना, प्रवृत्त करना
Charge handed over	कार्यभार सौंप दिया
Chiev Executive instructions	मुख्य कार्यपालक के अनुदेश
Consolidation of pension	पेंशन का समेकन
Corrigendum may be put up	शुद्धिपत्र प्रस्तुत करें
Day to day work	दैनंदिन कार्य
Deal with file	फाइल पर कार्रवाई करना
Delay in disposal of pension	पेन्शन निपदान में विलंब
Disposal of cases	मामलों का निपटारा
Early action in the matter is requested	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें
Erroneous grant of pension	पेंशन की गलत स्वीकृति
Experimental basis	प्रयोगिक आधार
Facilities are not available	सुविधा उपलब्ध नहीं है
Fact of the case may kindly be furnished	कृपया मामले के तथ्य प्रस्तुत करें
For early compliance	शीघ्र अनुपालन के लिए
For expression of opinion	मत प्रकट करने के लिए
I have satisfied mysef that the employee is not at fault	मेरा समाधान हो गया है कि कर्मचारी की गलती नहीं है
I shall be obliged	मैं अनुगृहीत होऊंगा, आपका अनुग्रह होगा
In acknowledging receipt of.....	को पाने की अभिस्वीकृति करते हुए
In anticipation of	की प्रत्याशा में
Kindly acknowledge recipt	कृपया पावती भेजें, कृपया पाने की अभिस्वीकृति भेजें
Knock down price	नीलामी कीमत
Knowingly and unlawfully	जानबूझ कर और अवैध रूप से
Kindly review the case	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें

Laboratory specimen	प्रयोगशाला नमूना
Leave preparatory to retirement	सेवानिवृत्ति–पूर्व छुट्टी
Leave travel assistance	छुट्टी यात्रा सहायता
Letter of acceptance	स्वीकृति–पत्र
May be permitted	अनुमति दी जाए
May be regretted	खेद प्रकट किया जाए
May be requested to clarify	से स्पष्टीकरण देने का अनुरोध करें
May be sactioned	मंजूर किया जाए
Next steps report	अगली कार्रवाइ रिपोर्ट
No action necessary	कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं
No action required	किसी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं
No admission	प्रवेश–निषेध, अंदर आना मना है
On probation	परिवीक्षाधीन
On the compassionate grounds	अनुकंपा के आधार पर
On the expiry of the crucial date	निर्णायक तारीख की समाप्ति पर
On the subject noted Above	उपर्युक्त विषय पर
Progress is too slow	प्रगति अत्यंत धीमी है
Put up for perusal please	अवलोकनार्थ प्रस्तुत करें
Put up for verification	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें
Put up the pension cases	पेंशन मामलों को प्रस्तुत करें
Refer the matter to the board for orders	मामला बोर्ड को आदेश के लिए भेजा जाए
Regularly employed	नियमित रूप से सेवायोजित
Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए, स्मण–पत्र भेज दें
Request transfer	प्रार्थना पर स्थानांतरण
Submitted for order (s)	आदेशार्थ प्रस्तुत
Supplementary test	अनुपूरक परीक्षण
Surplus to requirement	आवश्यकता से अधिक
Suspense and reminder diary	निलंबित मामलों और स्मरणपत्रों की डायरी
Take notice	ध्यान में रखना
Take over	ले लेना, कार्यभार संभालना
Taking over charge	कार्यभार ग्रहण करना
Termination for default	चूक के लिए समाप्ति

आपकी पाती

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
(भारत सरकार का उपक्रम)
क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर)
चौथी मंजिल, चौथा टॉवर, एनबीसीसी प्लाजा,
पुष्प विहार, सैक्टर-5, साकेत, नई दिल्ली-110017
दूरभाष : 011-29565525, 29561792, 29563517 फैक्स : 011-29565616
ई-मेल : rinlnorth@yahoo.com ronorth@vizagsteel.com

Rashtriya Ispat Nigam Limited
Visakhapatnam Steel Plant
(A Government of India Undertaking)
Regional Office (North)
4th Floor, 4th Tower, NBCC Plaza, Pushp Vihar,
Sector-5, Saket, New Delhi-110017
Ph.: 011-29565525, 29561792, 29563517 Fax : 011-29565616
E-mail : rinlnorth@yahoo.com, ronorth@vizagsteel.com

सर्दभ : आर.आई.एन.एल.वि.एस.पि.क्षे.का 2023-2024/01 दिनांक:04.04.2023

सेवा में,
अजीत कुमार
सहायक प्रबंधक(राजभाषा)
हिल (इंडिया) लिमिटेड
(भारत सरकार का उधम) निगमित कार्यालय
स्कोप काम्पलैक्स ,कोर-6 , द्वितीय मंजिल
7,लोधी रोड ,नई दिल्ली-110003

विषय:हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका " रक्षक" के अंक 13 का प्रेषण |

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्रांक सं0सं08(3)2021 हिंदी (दिनांक 22.03.2023) के साथ आपके प्रतिष्ठान की गृह पत्रिका " रक्षक" छमाही पत्रिका (अप्रैल 2022 से सितम्बर,2022) अंक-13 प्राप्त हुआ इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद | राजभाषा , हिंदी को समर्पित यह पत्रिका बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक है, हिंदी के प्रयोग में वृदधि की दिशा में आप द्वारा उठाया गया कदम सराहनीय और अनुकरणीय है |

पत्रिका में समाविष्ठ सभी लेख, रचनाएं और विभिन्न गतिविधियां तथा छायचित्र ,पत्रिका को रोचक ज्ञानवर्धक व उपयोगी बना देती है | पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रकाशन से जुडे सभी कार्मिक को हार्दिक बधाई |

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये एक बार पुन: हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिये शुभकामनाये।

राष्ट्रीय इस्पत निगम लिमिटेड आपके सेवा के लिये हर वक्त तत्पर है।
धन्यावद ।

भवदीय

ए.एस.मित्तल

महाप्रबंधक (विपणन)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर)

पंजीकृत कार्यालय : मुख्य प्रशासनिक भवन, विशाखपट्टणम - ५३००३१
Regd. Office : Main Administrative Building, Visakhapatnam - 530031
वेबसाईट / Website : www.vizagsteel.com CIN : U27109AP1982GOI003404

कोल इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार भारत का उपक्रम)
(एक महारत्न कंपनी)
ब्लॉक ,3 -प्लेट ए , तीसरा तल
पूर्वी किदवई नगर ऑफिस कॉम्प्लेक्स
नई दिल्ली110023 -
फोन: +91-11-24624622
फैक्स:+91-11-24346475
ईमेल :cil.delhi@coalindia.in

COAL INDIA LIMITED
(A Government of India Undertaking)
(A Maharatna Company)
Block-3, Plate-A, 3rd Floor,
East Kidwai Nagar Office Complex
New Delhi- 110023
Phone: +91-11-24624622
Fax: :+91-11-24346475
Email: cil.delhi@coalindia.in

संख्या: सीआईएल/डीआईएल/हिंदी/2023/ 1827 **दिनांक: 11.04.2023**

सेवा में

अजित कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), हिल (इंडिया) लिमिटेड
स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर -6
दवितीय तल, 7,
लोदी रोड, नई दिल्ली -110003

विषय: हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' के अंक-13 का प्रेषण ।

महोदय,

आपके दवारा प्राप्त छमाही पत्रिका अंक -13 'रक्षक' हमें प्राप्त हुआ । पत्रिका के सभी विषय बहुत ही ज्ञानवर्धक है । इसके विषय, जो भविष्य के लिए एक प्रेणना है जैसे दिल्ली प्रदूषण, आधुनिक नारी, भारत के भविष्य और तुम कभी न भर पाओगे आदि ।

कृपया आप इसी तरह भविष्य में भी अपनी पत्रिका हमारे कार्यालय में प्रेषित करे ताकि हिंदी राजभाषा का ज्ञान वर्धन हो सके ।

भवदीया,

(इंदु मिश्रा)
वरि. प्रबंधक (कार्मिक/राजभाषा)

REGD. OFFICE: COAL BHAWAN, PREMISES-AF-III, ACTION AREA-1A, NEW TOAN, RAJARHAT, KOLKATA-700158
Web: www.coalindia.in, www.coalindia.co.in

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में मैसर्ज हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
आई.एस.ओ. 9001:2008 कंपनी एवं स्टार एक्सपोर्ट हाउस

समृद्धि हेतु सुरक्षा

PROTECT TO PROSPER

कृषि रसायन श्रेणी

कीटनाशकों

- हिलक्रॉन 36 एस एल (मोनोक्रोटोफॉस)
- हिलमाला 50 ई सी (मैलाथियॉन)
- हिलबान 20 ई सी (क्लोरपाइरिफॉस)
- हिलसाइप्रिन 25 ई सी (साइपरमैथ्रिन)
- हिलफेट 75 एस पी (एसिफेट)
- हिलस्टार 25 डब्ल्यू जी (थियामेथोक्सेम 25% डब्ल्यू जी)
- हिलफॉस प्लस (प्रोफेनो + साइपर)
- हिलब्लेज 25% एस सी (बूप्रोफेज़िन 25% एस सी)
- हिलजेंट (फिप्रोनिल जी आर)
- हिलमिडा 17.8 एस एल (इमिडाक्लोप्रिड)
- हिलाम्बदा 2.5 ई सी (लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)
- हिलसाइप्रिन 10 ई सी (साइपरमैथ्रिन)
- हिलप्रिड 20 एस पी (एसीटेमिप्रिड)
- हिलहन्टर (क्लोपाइरिफॉस 50% + साइपरमेथ्रिन 5% ई सी)
- हिलफॉस 50 ई सी (प्रोफेनोफॉस)
- हिलकार्टेप 4 जी (कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड)
- हिलाम्बदा 5 ई सी (लाम्बदा साइहैलोथ्रिन)

खरपतवारनाशी

- हिलप्रेटी 50 ई सी (प्रेटिलाक्लोर)
- त्रिनाशी 40 एस एल (ग्लाईफोसेट)
- हिलपेंडी 30 ई सी (पेंडीमेथलीन)
- हिलटाक्लोर (बुटाक्लोर 50 ई सी)

फफूंदनाशी

- हिलसल्फ 80 डब्ल्यू डी जी (सल्फर 80% डब्ल्यूजी डी जी)
- हिलब्लास्ट 75 डब्ल्यू पी (ट्राइसाईक्लोज़ोल)
- हिलथेन एम 45 (मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी)
- हिलकॉपर 50 डब्ल्यू पी (कॉपर ऑक्सीक्लोराइड)
- हिलनेट 75 डब्ल्यू पी (थाइफिनेट मिथाइल)
- हिलजिम 50 डब्ल्यू पी (कार्बनडेजिम)
- हिलजोल पॉवर 5% डब्ल्यू पी (हैक्साकोनाजोल 5% एस सी)
- हिलमिल (मैंकोजेब 63% + मेटालेक्सिल 8%)
- हिलपंच (मैंकोजेब 63% + कार्बनडेजिम 12%)

जन स्वास्थ्य श्रेणी

- डी.डी.टी.
- मैलाथियॉन तकनीकी
- मैलाथियॉन डब्ल्यू पी
- एल.एल.आई.एन.– लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशकयुक्त मच्छरदानी

बीज श्रेणी

- धान
- गेहूँ
- चना, मसूर
- मूंग
- उड़द
- अरहर
- सोयाबीन
- सरसों
- मूंगफली
- हाब्रिड मक्का
- चारा फसलें– जई, बरसीम

उर्वरक श्रेणी

- यूरिया
- एस.एस.पी.
- डी.ए.पी.
- एम.ओ.पी.
- पानी में घुलनशील उर्वरक– हिलगोल्ड
- (19:19:19)
- (13:0:45)
- कैल्शियम नाइट्रेट
- बेंटोनाइट सल्फर

टेक्निकल्स :

मोनोक्रोटोफॉस, मैलाथियॉन, एसिफेट, मैंकोजेब, इमिडाक्लोप्रिड, बुप्रोफेज़िन, क्लोरपाइरिफॉस, पेंडीमेथलीन, ग्लाईफोसेट

कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

हिल (इंडिया) लिमिटेड

स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर-6, द्वितीय तल, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाष : 011-24361019, 24362100, वेबसाइट:www.hil.gov.in

हि इ लि

समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

- सरकार के जन–स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।
- पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।
- कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।
- कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- कार्मिक में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय
स्कोप काम्पलैक्स, कोर–6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003
दूरभाष: 24362100, 24361107, फैक्स: 24362116
ई–मेल: **headoffice@hil.gov.in** वेबसाइट: **www.hil.gov.in**